हस्तलिखित क्रमांकः MS – 28
शीर्षक : श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध
रचनाकाल : विक्रमी १७४४ AD
पृष्ठ संख्या : 241
आकार : 20 X 15.5 स०म० लिखित : 16 X 11.5 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े में बंधी इस कृति का प्रथम तथा अन्तिम पृष्ठ बड़ी नाजुक अवस्था में हैं। लेखक ने काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया है। प्रति पृष्ठ 15 पंक्तियाँ अंकित हैं। ग्रंथ के पृष्ठ काफी पुराने हो चुके हैं।
विशेष विवरण : श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध नामक यह ग्रंथ नब्बे अध्यायों में है। इसमें कवि ने कृष्ण लीला एवं कृष्ण चरित्र का विस्तार से वर्णन किया है।
आरम्भ : श्री पाश्र्र्वनाथायनमः ।। श्री कृस्मायनमः श्री गणेशाय नमः ।। अथ श्री भागवत दस्म सुकंध लिष्यते। आदगण का चरित्र विश्वपद लिष्यते।।
अन्त : पढ़त सुनत मुहि दीन को ठहो प्रेम पवि ....पातै पापन होय।। १६।। इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कन्ध.......का सोता जल क्रीड़ा वर्णनंक्रम नवमो अध्याय समाप्तम।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 31
शीर्षक : श्रीमहाभारत सभा पर्व
लेखक : हेतराम
पृष्ठ संख्या : 276
आकार : 15 X 24 स०म० लिखित : 10 X 15 स०म०
सामान्य विवरण : जिल्द के भीतर भी कृति का एक पृष्ठ अलग है। लेखक द्वारा काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। प्रति पृष्ठ 18 पंक्तियाँ अंकित हैं। समस्त पृष्ठों के खाली किनारे कीड़े द्वारा जर्जर कर दिये गये हैं।
विशेष विवरण : 74 अध्यायों में अनूदित महाभारत के इस सभा पर्व में धृतराष्ट्र, दुर्योधन एवं युधिष्ठिर में संवाद चलता है और अंततः पांडवों को बनवास मिलता है और वे वन के लिए प्रस्थान करते हैं।
आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। छप्पै।। सकल अमर गण वरद जगत जस मंगलदाइक।। शिव सुत मति सर्वज्ञ श्रुद्ध गज मुष गणि नाइक।।
अन्त : इति श्री महाभारते सत्तसाहस्रां हितायां वैयासिकां सभा पर्वणि भाषायां दीक्षित हेतराम विरचितायां पांडव वन गमनं धृतराष्ट्र संवापौ नाम चतु सप्ततत्तिमोध्याध्यायः।। ७८।। श्रुभमस्तु सर्व जगता श्रुभंभूपां ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 32
शीर्षक : विद्या गीन
पृष्ठ संख्या : 38
आकार : 16 X 25 स०म० लिखित : 12 X 18 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े में बंधी परन्तु खुली हुई यह कृति काली स्याही से लिखी गई है। प्रति पृष्ठ बीस पंक्तियाँ हैं। लिखावट सुंदर है।
विशेष विवरण : संस्कृत की इस रचना में अलग अलग तिथियों पर किए जाने वाले अलग–अलग कृत्यों का वर्णन है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः जगदिदं सकलं पद विधयाय रुमरीचि पयोवदवोधि सत् पद नु संसरति हेतक विद्यया गुण भुजंग वहद्धतित नुमः।
अन्तः : अन्यर्णासवणै विभवति तस्य मरणे दहना दहन यों कल्पः अनिष्टा चरणं च न कार्यम्।। श्रुभम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 33
शीर्षक : श्रीमद्भगवद्गीता या श्रीभगवद्गीता माला
लेखक : वेद व्यास ऋषि
पृष्ठ संख्या : 119
आकार : 14 X 24 स०म० लिखित : 11 X 17.5 स०म०

सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े से सजिल्द इस कृति के पृष्ठ कीड़े द्वारा खाये गये हैं सभी पृष्ठों में संतरी रंग का वार्डर बनाया गया है। प्रति पृष्ठ 15 पंक्तियाँ अंकित हैं। लेखक ने काली व संतरी स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण : महर्षि वेदव्यास द्वारा अनूदित इस कृति में अट्ठारह अध्यायों में गीता के संदेश पर प्रकाश डाला गया है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः।। उों अस्य श्री भगवद्गीता माला मंत्रस्य ।। श्री भगवान्वेदव्यास ऋषि ।। अनुष्टप छंदः ।।
अन्त : इति श्री गीता जी के पाठे को ऐसा पुण्य है। गीता अनंत नेवा श्री गीतानु शास्त्र संपूर्णम ।। शुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 34
शीर्षक : मेरुतन्त्रे
लेखक : शिव प्रणीत
पृष्ठ संख्या : 303
आकार : 42 x 18 स०म० लिखित : 30 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : प्रस्तुत रचना काली एवं लाल स्याही में लिखी गई है। एक तरफ से पृष्ठ पीले व दूसरी ओर से सफेद हैं। पृष्ठ उत्तम क्वालिटी के है। चौड़ाई में हाशिया खींचा गया है। प्रति पृष्ठ 11 पंक्तियाँ हैं।
विशेष विवरण : मेरुतंत्र नामक इस रचना में 22 अध्यायों में अनेक मंत्रों द्वारा रोग निवृत्ति के उपाय बताए गये हैं। रचना के आरंभ में तीन पृष्ठ विभिन्न रोग और उनके उपचार संबंधी लगे हैं उसके पश्चात् चार पृष्ठों में अनुक्रम समान एक सूची दी गई है।
आरम्भ : १उों नमः श्री गणेशाय नमः।। ययासत्स दिवा भातिन च भातिकदापि सन्।। यस्मिन् ज्ञातेन साभातित स्पैतस्मै नमो नमः ।। १ ।।
अन्त : लिखित्वा स्वकर मन्त्र मातुरं संस्प्रशन् जयेत्।। विमुच्यतेहठाद्रोगान्मुक्तरोगः सुखी भवेत। अथातः स्सं प्रवक्ष्यामिविस्व।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 35
शीर्षक : सटीक गीत गोबिन्द
लेखक : जयदेव लिपिकार : काश्मीरी श्री वैद्यनाथ
पृष्ठ संख्या : 141 लिपिकाल : संवत् १८५७
आकार : 15 x 24 स०म० लिखित : 9 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : कपड़े गत्ते की जिल्द में यह कृति खुली हुई है। काली तथा लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। बीच–बीच में से सभी पृष्ठों में कीड़ा लगने से छेद हो गये हैं। प्रति पृष्ठ 17–18 पंक्तियाँ हैं।
विशेष विवरण : बारह अध्यायों में जयदेव कृत गीत गोबिंद की टीका कश्मीरी पंडित वैद्यनाथ ने की है। एक दोहा देकर फिर उसकी टीका लिखी हैं। इसमें राधा कृष्ण के चरित्र का वर्णन है।
आरम्भ : ओं नमो गणपतये।। श्री रामचंद्राय नमः ।। श्री कृस्नाय नमः ।। श्री राधा वल्लभोजयति।। अथ सटीक गीत गोबिंद लिख्यते।। श्लोक।।
अन्त : गीत गोबिन्द भाषा टीका सहितं श्रुभमयात्।। संवत् ।। १८५७ ।। पौषप्र।। लिखितमिदं काश्मीरी घासि रामेन श्री वैद्यनाथ दे हरे सिंघासने स्थित श्रुभं। लेखक पाठकयोः।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 36 संग्रह (क)
शीर्षक : श्रीभगवद्गीता सूपनिषद्
पृष्ठ संख्या : 129 सचित्र : आरम्भ का एक चित्र
आकार : 15 x 9 स०म० लिखित : 11 x 5 स०म०
सामान्य विवरण : सजिल्द लेमीनेशन की हुई कृति श्रीभगवद्गीता सूपनिषद् में हाशिया बनाया गया है। हर पृष्ठ में छः पंक्तियाँ हैं। लाल तथा काली स्याही का प्रयोग आकर्षक है।
विशेष विवरण : श्रीभगवद्गीता में अठारह अध्याय हैं । आरम्भ में ईश वंदना के उपरांत ऋषि वेद व्यास की वंदना की गई है । तत्पश्चात् सवांदात्मक शैली में संजय एवं धृतराष्ट्र तथा अर्जुन एवं कृष्ण का संवाद है।

आरम्भ : उों नमो भगवते वासदेवाय। उों अस्य श्री भगवद्गीता मालामंस्य।। श्री भगवान्वेद व्यास ऋषि।। अनुष्टुप छंदः । श्रीकृष्ण परमात्मा देवता।।

अन्त : तत्र श्री विजयो भूर्तिफ्र वानीति मतिर्ममं ।।७।। इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादेयोतमं न्यास । योगो नाम अष्टादशोध्यायः ।। १८ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 36 (ख)

शीर्षक : महाभारत शतसाहस्त्रां संहिता

रचनाकाल : संवत् 1897

पृष्ठ संख्या : 1–30, 1–22, 1–13, 1–29 सचित्र : कृति के आरम्भ में एक चित्र

आकार : 15 x 9 स०म० लिखित : 11 x 5 स०म०

सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े में लेमीनेशन हुई जिल्द में यह दूसरी कृति है। लाल तथा काली स्याही का प्रयोग किया गया है। कृति के आरम्भ में चित्र भी है।

विशेष विवरण : महाभारत शतसाहस्त्रां संहिता में चार पर्व हैं। सबकी पृष्ठ संख्या अलग–अलग अंकित है। इसमें शांति पर्व के अंतर्गत विष्णु के सहस्त्र नाम, राज्यशासन, दान धर्म तथा गजेन्द्र मोक्ष का वर्णन किया गया है। आरम्भ में एक चित्र है जिसमें विष्णु जी क्षीर सागर में शेषशय्या पर शयन कर रहे हैं और लक्ष्मी जी उनके चरण दबा रही हैं। अंत में दो खाली पृष्ठ लगे हैं।

आरम्भ : समस्त भूतानामादिभूताय भू भृते। अनेकनूयनूया यविस्मवे प्रभविस्मवे।। १ ।। वैशंपायन उवाच

अन्त : इति श्री महाभारतेशतसाह स्र्प्रांवसहितायां वैय्पासि वयां शांति पर्वणि उन्नभानुशासने दानयर्मो। न्नरेश्री गजेंद्र मोक्षणं समाप्तम् ।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 37

शीर्षक : श्रीभगवद्गीता टीका

टीकाकार : श्रीधरी

पृष्ठ संख्या : 137 सचित्र : प्रथम पृष्ठ पर रंगदार चित्र

आकार : 30 x 4 स०म० लिखित : 23 x 11 स०म०

सामान्य विवरण : पृष्ठ – पृष्ठ हुई यह रचना जिल्द करवा ली जाए तो सुरक्षित हो जाएगी। लाल काली एवं पीली स्याही का प्रयोग । प्रति पृष्ठ 12 पंक्तियाँ । लिखाई बहुत सुन्दर। पृष्ठों पर लाल, काली, पीली स्याही का सुन्दर हाशिया बना हुआ है।

विशेष विवरण : श्री भगवद्गीता की टीका के प्रथम पृष्ठ पर रंगदार चित्र है जिसमें संजय धृतराष्ट्र को कृष्ण मुख से कही गई गीता सुना रहा है।

आरम्भ : श्रीधर स्वामिने श्री कृहमाय नमः उों नमो भगवते वासुदेवाय ।। उों श्री गणेशायनमः उों शेषामुख व्याख्याचातुर्यंत्वेकव क्रतः।।

अन्त : इति श्री भगवद्गीता टीकायां सुबोधिन्या श्रीधर मिश्र विरचितायां अष्टादशोध्यायः।। १८।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 38 संग्रह (क)

शीर्षक : गायत्री पटलं

लेखक : रुद्रमल्ल

पृष्ठ संख्या : 11 सचित्र : आरम्भ में देवी का रंगदार चित्र

आकार : 17 x 9.5 स०म० लिखित : 11 x 6 स०म०

सामान्य विवरण : बिना जिल्द के इस संग्रह की यह पहली रचना है। काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई सुन्दर है। प्रति पृष्ठ छः पंक्तियाँ हैं। आरम्भ में मां गायत्री का रंगदार चित्र भी है। चित्र के बाद दो पृष्ठ खाली हैं फिर रचना का आरम्भ है।

विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में सर्वप्रथम ईश एवं गुरु वंदना की गई है। तत्पश्चात् श्री देवी तथा श्री भैरव के संवाद में पटलं मंत्र का वर्णन है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः।। उों श्री गुरवें नमः।। उों श्री शैल शिखरासी नंदेव देवं महेश्वरम्। चद्रार्धम कुटं देवं देवताभिर्नमस्कृतम।।

अन्त : इत्येष पटलोदेवि सर्वागम रहस्यवान्। सर्वतत्रम् योगोप्पो गोपनीयः स्वयोनिवत्।। इति श्री रुद्रयामले तंत्रे महारहस्ये गायत्री पटलं संपूर्णम्।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 38 (ख)
शीर्षक : दश विद्या रहस्ये
लेखक : रुद्रमल्ल
पृष्ठ संख्या : 12 – 66
आकार : 17 x 9.5 स०म० लिखित : 11 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की यह दूसरी रचना है। काली तथा लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। गल्त अक्षर मिटाने के लिए पीली स्याही का इस्तेमाल हुआ है।
विशेष विवरण : दश विद्या रहस्ये नामक इस रचना में सर्वप्रथम गुरुवंदना के पश्चात् गायत्री मां की नित्य पूजा विधि एवं विभिन्न मंत्रों का वर्णन है।
आरम्भ : उों श्री गुरचरण कमलेभ्यो नमः। श्री भैरव उवाच।। उों अयुनाप इतिं वक्ष्ये गद्यसार मंयी पराम्।
अन्त : ब्रह्मै वाहं शिवोहं देवी नूपोहनिति मता शक्ति कः । सुख विहरे दिति विचित्य।। इति श्री रुद्रिया मले तंत्रे दश विद्या रहस्ये गायत्री नित्य पूजा पद्धति समाप्तः।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 38 (ग)
शीर्षक : गायत्री कवचं
लेखक : रुद्रमल्ल
पृष्ठ संख्या : 9
आकार : 17 x 9.5 स०म० लिखित : 11 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की यह तीसरी रचना है । प्रति पृष्ठ 6 पंक्तियाँ हैं ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में मानव की रक्षा हेतु बनाये गये 'गायत्री कवच' के महत्त्व का गुणगान संवादात्मक शैली में किया है ।
आरम्भ : उों अथ गायत्री कवचं।। उों श्री भैरवी उवाच्। उों भगवत्सर्व लोकेश वेद तत्वाविपारग।।
अन्त : इत्येवं कवचं देवि गायत्री ततमुन्नमं । गुह्य गोप्यं तमं देवि गोपनीय सुयोनिवत ।। इति श्री रुद्रियामले तंत्रे गायत्री कवचं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 38 (घ)
शीर्षक : गायत्री सहस्रनाम
लेखक : रुद्रमल्ल
पृष्ठ संख्या : 10 – 42
आकार : 17 x 9 स०म० लिखित : 11 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की यह चौथी रचना है । लेखक ने लिखने के लिए काली तथा पूर्णविराम के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया गया है ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में गायत्री देवी के सहस्रों नामों व उनके प्रभाव का वर्णन किया है। अनेक मंत्रों के द्वारा गायत्री की स्तुति भी वर्णित है ।
आरम्भ : अथ सहस्रनामं।। श्री भैरवः ।। उों प्रभु ना कथयिष्यामि विद्यां मंत्रमयी।। शिवे।।
अन्त : अप्रकाशय दातव्यं गोपनीयं सुयोनिवत्। इति श्री रूद्रियाम तंत्रे गायत्री सहस्र नामं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 38 (ङ.)
शीर्षक : गायत्री स्रवरानः
लेखक : रुद्रमल्ल
पृष्ठ संख्या : 43 – 60
आकार : 17 x 9.5 स०म० लिखित : 11 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : गायत्री देवी सम्बन्धी संग्रह की यह पांचवी रचना है। रचना के अन्तिम पृष्ठ उखड़े हुए हैं। लेखक ने काली स्याही लिखने के लिए एवं लाल स्याही पूर्णविरामों के लिए प्रयुक्त की है।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में गायत्री देवी का रूप वर्णन कर शिव द्वारा गायत्री की उपासना की गई है।
आरम्भ : उों श्री भैरव उचाच ।। उों ऋण देवि प्रवसामि गायत्री तत्र मुत्तमं।। स्रोतं मंत्र मयं देव्याः सर्वतंत्रेषु गोपितं ।।

अन्त	:	इती दंदेवि गायश्री तंत्र मम रहस्यंक गुह्यं गोप्यंदातव्यं गोपनीयंमुतुभिः।। इति श्री रुद्रयामले तंत्रे गायत्रीरस्ये गायत्रीस्रवरानः समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 38 (च)
शीर्षक	:	गायत्री शतनामं
लेखक	:	रुद्रमल्ल
पृष्ठ संख्या	:	4
आकार	:	17 x 9.5 स०म० लिखित : 11 x 6 स०म०
सामान्य विवरण	:	चार पृष्ठों में रचित उक्त रचना संग्रह की छठी कृति है जिसमें लिखने के लिए काली तथा पूर्ण विराम के लिए स्लेटी रंग की स्याही प्रयुक्त की गई है।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में गायत्री देवी को सर्वसिद्धि देने वाली कहकर उसकी उपासना की गई है।
आरम्भ	:	उों अथ गायत्रीं शतानामानि स्रोत्रं।। ध्यावम्। ओं चराचर जगत्सर्ग लयलीला विधायिनीं।।
अन्त	:	मंगल्यं स्वर्ग मा पुष्पं धन्यं श्रुभ प्रदर श्रुभम्।। इति पुष्प ।। इति श्री गायत्री शतनामं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 38 (छ)
शीर्षक	:	गायत्री हृदयं
लेखक	:	रुद्रमल्ल
पृष्ठ संख्या	:	18
आकार	:	17 x 9.5 स०म० लिखित : 11 x 6 स०म०
सामान्य विवरण	:	संग्रह की यह अन्तिम सातवीं रचना है। काली, लाल तथा भूरी स्याही का प्रयोग करते हुए प्रति पृष्ठ छः पंक्तियाँ लिखी हैं। रचना के अंत में तीन खाली पृष्ठ लगे हैं।
विशेष विवरण	:	याज्ञवल्क्य एवं ब्रह्मा के संवाद द्वारा गायत्री हृदयं रचना का विकास किया है और बताया है कि सभी वेद और उनकी ऋचाएं ही देवी का हृदय स्थान हैं।
आरम्भ	:	उों अथ गायत्रीं हृदयं ।। उों अस्य श्री गायत्री हृदय मंत्रस्य ।। प्रह्लाद भगवान ऋषिः।। गायत्री छंदः।। अग्नि देवता।।
अन्त	:	ब्रह्म लोकं गच्छति ।। इत्याह भगवान्ब्रह्मा।। इति श्री गायत्री हृदयं वेदोक्तं समाप्तम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 39 संग्रह (क)
शीर्षक	:	उद्यापन विधि
पृष्ठ संख्या	:	4
आकार	:	18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण	:	जिल्द के भीतर खुली हुई रचना है। ग्रंथ की इस पहली रचना का आरम्भ और अंत सही ढंग से नहीं मिल पा रहा है। काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखावट बहुत स्पष्ट नहीं है। कृति के बाद खाली पृष्ठ हैं। फिर दूसरी रचना आरम्भ होती है। प्रति पृष्ठ 11 पंक्तियाँ हैं।
विशेष विवरण	:	उद्यापन विधि नामक इस रचना में व्रत के उद्यापन विधि का मंत्रोंसहित वर्णन है।
आरम्भ	:	उों प्रंगारकाय विद्य हे धरात्मजाय धी महि तत्रो भामः प्रचोदयात् पूर्वदिने श्रुद्ध भोजन कर्त्तव्यं ततः प्रातः स्नानादिकं कृत्वा चम्प स्वस्ति वाचन।
अन्त	:	आरवक्रंमू मिजंरक्त गंधैः प्रपूजयोत रक्तर्गध क्तव पुष्पै एवं धूपदीपादि भिस्रथा मंगलं पूजये न्नित्यं मंगले हनि सर्वथा।। श्रीराम राम।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 39 (ख)
शीर्षक	:	जन्मदिन कृत्य
पृष्ठ संख्या	:	4
आकार	:	18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण	:	संग्रह की दूसरी रचना बिखरे हुए पृष्ठ ।

विशेष विवरण	:	जन्म दिन कृत्य नामक इस रचना में जन्म दिन सम्बन्धी कृत्यों का वर्णन किया गया है। पर रचना का अन्त नहीं मिलता है। कृति अधूरी लगती है। समाप्ति के आगे का पृष्ठ खाली है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः अथ जन्म दिन कृत्यं स्वंस्त्य यतं वापित्वा।
अन्त	:	शतानी कायमु मनस्य मानाः तन्मा आवघ्ना निरात शारदाय युष्मा ज्जर दष्टि।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 39 (ग)
शीर्षक	:	व्यवहार शतक
लेखक	:	त्रिविक्रमाचार्य
पृष्ठ संख्या	:	2 – 12
आकार	:	18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण	:	संग्रह की तीसरी रचना।
विशेष विवरण	:	कृति का यह दूसरा पृष्ठ है । पहला पृष्ठ साथ नहीं है। मानव व्यवहार से सम्बन्धी शतक रचना कवि ने गुलाबराय के पठनार्थ की है।
आरम्भ	:	साध्य हर्षण शूला नांवैघृति व्यतिपातयो यदं गंडस्य चाते स्यातत्या तेननिपातितं।। ५ ।।
अन्त	:	इति श्री त्रिविक्रमाचार्य कृतं व्यवहार शतक समाप्तं संपूर्णम् संवत् १८६६ मिति ज्येष्ट १० लिषितम् सुचेतराम धारी पठनार्थी गुलाबराय सारदम जी गेविच्च।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 39 (घ)
शीर्षक	:	श्री क्षीर धेनुविद्या
रचनाकाल	:	1786
पृष्ठ संख्या	:	13 – 18
आकार	:	18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण	:	संग्रह की चौथी रचना।
विशेष विवरण	:	क्षीरधेनु विद्या नामक इस रचना में विभिन्न मंत्रों के द्वारा पूजन विधि का वर्णन किया गया है।
आरम्भ	:	अथ क्षीर धेनु लिषते विधानं हो तो वाच धे क्षीर धेनुं प्रवक्षामि तांनि वोधराधिप।
अन्त	:	इति श्री क्षीर धेनुविद्यानं समाप्तं श्रुभं भूयात्। संवत् १७८६ मिती ज्येष्ठ श्रुदिन वम्यां भौम वासरे लिषतम्।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 39 (ड.)
शीर्षक	:	सूतकाध्याई
लेखक	:	गंगाचार्य
रचनाकाल	:	1786
पृष्ठ संख्या	:	9
आकार	:	18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् । लेखक ने रचना के कई पन्नों के ऊपर नीचे के हाशिये में भी लिखा है।
विशेष विवरण	:	सूतकाध्याई नामक इस रचना में गर्ग ऋषि ने विभिन्न राशियों के आधार पर पुत्र जन्म के संयोग का वर्णन किया है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः अथ सूतकाध्याई लिख्यते। विषमे विषमांशे च सूर्येयु गुरवः स्थिता पुत्र जन्मकए सत्यं समाशेयोषितां वदेतः। १।
अन्त	:	तुर्यमा सेतिथौ रामदत्वावारं त्रिकंद रात्रक्ष पंचवुधो राशो गर्भमास्रदकंदेत इति गंगाचार्य विरचितं सूतकाध्यायः समाप्तम्। श्रुभं भूयात।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 39 (च)
शीर्षक	:	स्कंध पुराणे भौम स्तोत्र
पृष्ठ संख्या	:	9
आकार	:	18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण	:	संग्रह की छठी रचना । रचना से पूर्व तीन खाली पृष्ठ हैं जिनमें से एक पृष्ठ पर एक कुंडली बनी है तथा किसी दूसरे की लिखाई में कुछ लिखा भी है ।

विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति में स्कंध पुराण के भौम स्तोत्र के मंत्रों का वर्णन है पहले भौम पूजा पद्धति का वर्णन है और फिर विभिन्न स्तोत्र हैं ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः भौम वासरे अरुणे दय वेलायां समुत्था पापा मार्गेण दंतधावनं विधाया चभ्यश्वाति लोमलक चूर्णेन ।
अन्त : देवो पितंलं घपितुंन शक्य न तत्र शोचतिन विस्मयामि यदस्या दीयो नहि परेषा ।। १ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 39 (छ)
शीर्षक : विश्वेश्वर द्वादश नाम स्तोत्र
पृष्ठ संख्या : 18
आकार : 18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में विश्वेश्वर के बारह नाम जैसे गणपति, गणेश, सरस्वती आदि का वर्णन कर उनके स्तोत्र वर्णित हैं।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों अस्य श्री विश्वेश्वर द्वादश नाम स्तोत्रस्य नारायण ऋषि श्रीविश्वेश्वरो प्रसादसिध्यर्थे जपे विनियोगः ।
अन्त : कृघ्मानि धानपानि क्षै कार्या संव मनं च गई भरवो दक्षेपेति रुट्गर्भिणे मुराउा र्छाम्वर दुर्वचो ऽन्धव ऐदरान द्यष्टा श्रुभाः ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 39 (ज)
शीर्षक : गंगा स्नान फल
पृष्ठ संख्या : 4
आकार : 18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् । रचना के पहले और बाद में एक खाली पृष्ठ है।
विशेष विवरण : विभिन्न देवताओं की वंदना कर गंगा स्नान का फलादेश बताया है ।
आरम्भ : उों श्री सूर्याया क्षयतेजसे नमः उों खेच राय नमः उों महते नमः उों तमसे नमः उों रजसे नमः अस्तो मां सद्गमय तमसो मां ज्योतिर्गमय।
अन्त : गावो देया सुपात्रेभयो गंगा स्नान फले श्रुभिः इति वारुणी समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 39 (झ)
शीर्षक : वलि प्रहार
पृष्ठ संख्या : 3
आकार : 18 x 12 स०म० लिखित 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : कवि द्वारा वंदना पश्चात् महाज्वर के लक्षणों का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः साधु साधु माहाभागयद्भावंपरिपृछति तत्सर्वे कथयिष्यामि सर्व व्याधि विनाशनम् ।
अन्त : कूप मध्ये तदोषपेत् तथा वलिप्रहारेण सिद्धिर्भवत्तिनान्यथा पीड़ा दिन ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 39 (ञ)
शीर्षक : रोग वहु विचार
पृष्ठ संख्या : 3
आकार : 18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : सत्ताईस श्लोकों में सत्ताईस नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाले रोगों का वर्णन किया गया है।
आरम्भ : अथ नक्षत्र प्रध्यः अश्वनीनष्ट दश रात्रेण लम्यते मंदो नवरात्रेण उत्तष्टभि वदुः त्रिर्मसै मुच्यते १।।
अन्त : इति सप्त विशति नक्षत्रे षु नष्ट रोग वहु विचार श्रुभं भूयात राम.........

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 39 (ट)

शीर्षक	:	सोमा पूजा पद्धति	लिपिकार : भवानीदास
पृष्ठ संख्या	:	3	लिपिकाल : १८०८
आकार	:	18 x 12 स०म०	लिखित : 14 x 8 स०म०

सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : बाल वैधव्य दोष की परिणति के लिए सोमा पूजा पद्धति का वर्णन किया गया है।
आरम्भ : अथ वाल वैधव्य नाशाय सोमपूजा विधि आचम्यं गणेशस्य स्तोत्रं पठित्वा संकल्प कुर्यात।
अन्त : इति प्रदक्षिणं कृत्वा अमान संकल्पः इति सोमा पूजा पद्धति १ संवत् १८०८ मार्ग प्रविष्ठे १८ भवानीदासेन लिपी कृतं राम।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 39 (ठ)
शीर्षक : पूतना विर्धन
पृष्ठ संख्या : 10
आकार : 18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में द्वादश दिन तक चलने वाले पूतना विघ्नों का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अथ पूतनाविर्धन लिख्यते प्रथमेदिवसे वर्षे वावालकं गृन्हाति नंदानाम मांता तथा गृहीतर्मंत्रस्य ।।
अन्त : उों नमो रावणाय पिपीलिके वलि गृहाणं वालकं मुंच स्वाहा इति पूतना विघ्न समाप्तं ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 39 (ड)
शीर्षक : अनंतोधापन विधि
रचनाकाल : १८५४
पृष्ठ संख्या : 8
आकार : 18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : इस रचना में अनंत ईश्वर के व्रत उद्यापन विधि का वर्णन है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अथ अनंतोधापन विधि र्लिख्यते उों नमो अनंताय आदौ कलश पूजा अनादि पुरुष सूक्तेन :
अन्त : इति अनंत उद्धापन विधि समाप्तं संपूर्ण संवत् १८५४ मिती ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 39 (ढ)

शीर्षक	:	श्रुति वोध	लिपिकार : चेतराम
पृष्ठ संख्या	:	8–16	लिपिकाल : १७६४
आकार	:	18 x 12 स०म०	लिखित : 14 x 8 स०म०

सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : इकतालीस श्लोकों में श्रुति वोध का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः छन्द सांलक्षणं येन श्रुत मात्रेण वुध्यते तदहं कथयिष्यामि श्रुत वोधम विस्तरम् ।
अन्त : इति श्रुति वोध नाम छंदः समाप्तं श्रुभम भूयात संवत् १८५४ मिती आश्विन श्रुदि लिपी कृत सु चेतराम ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 39 (ण)
शीर्षक : संध्या प्रयोग
आकार : 18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की 15वीं रचना । पूर्ववत्
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में संध्या समय में किए जाने वाले विभिन्न प्रयोगों का वर्णन है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अथ संध्या प्रयोगः उों वामे बहू कृशान दक्षिणे पाणौस पवित्र कश त्रयंचघत्वा सप्रण ।
अन्त : ततः प्रदक्षणी कृत्य प्रणिपत्य विसर्जयेत इति संध्या सावित्री समाप्तम् ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 39 (त)
शीर्षक : विजय दशमी पूजा
आकार : 18 x 12 स०म० लिखित : 14 x 8 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
रचना के आगे पीछे चार – चार खाली पृष्ठ । पृष्ठों में छेद हुए हैं ।
विशेष विवरण : इस रचना में विजय दशमी पर्व पर की जाने वाली पूजा का वर्णन है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अथ विजय दशमी पूजनं आदौ गणपति पूजनं गणानां त्वेति मंत्रेण।
अन्त : तेन सिंहासते तितं मत्तै वेद श्रगीयते नमस्ते सर्वतो भदु सुसुभ दो भव भूद उों काल काल महाकाल काल काल नमोर्स्तुत काल दंड प्रभावेन ज्वरोपंतति भूललें १

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 280 संग्रह (क)
शीर्षक : श्री भगवद्गीता माला
पृष्ठ संख्या : 160
आकार : 16 X 9.5 स०म० लिखित : 12.5 X 6 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े में सजिल्द संग्रह की प्रथम रचना । काली, लाल एवं सुनहरी स्याही का प्रयोग किया गया है। प्रति पृष्ठ पांच पंक्तियां लिखी गई हैं। रचना के आरम्भ में महाभारत से सम्बन्धित एक रंगदार चित्र है जिसमें कृष्ण सारथि एवं अर्जुन योद्धा के रूप में दिखाई दे रहे हैं। आरंभ में दो–तीन पृष्ठों में किसी ने रचना के पृष्ठों की आवृत्ति की है। लिखाई सुन्दर है ।
विषेष विवरण : महाभारत के युद्ध में कृष्ण द्वारा उच्चरित गीता को सरल भाषा में लिखा गया है। पहले पृष्ठ पर रंगदार फूलों वाला हाशिया बनाया है जबकि अन्य पृष्ठों पर काला तथा संतरी हाशिया खींचा गया है ।
आरम्भ : उों नमो भगवते वासुदेवाय।। उों अस्य श्री भगवद्गीता माला मंत्रस्य।। श्री भगवानवेद व्यास ऋषिः।। अनुष्टुप छंदः।।
अन्त : इति श्री महाभारते शतसहस्रां संहितायां वैयासिकयां भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु मोक्ष संन्यास योगनामाष्टदशोध्यायः।। १८ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 280 (ख)
शीर्षक : श्री विस्नोर्नाम सहस्तोत्रं
पृष्ठ संख्या : 40
आकार : 16 X 9.5 स०म० लिखित : 12.5 X 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : विष्णु की सहस्र नामों के द्वारा स्तुति की गई है। रचना के आरम्भ में रंगदार चित्र है जिसमें श्री विष्णु क्षीर सागर में शेष शैय्या पर विराजमान हैं और लक्ष्मी जी उनके चरण दबा रही हैं।
आरम्भ : उों नमो भगवते वासुदेवाय।। उों यस्य स्मरण मात्रेण जन्म संसार बन्धनात विभुच्यते नरस्तस्मै विस्मवे प्रभ विस्मवे।। १ ।।
अन्त : इति श्री महाभारते शतसहस्त्रयां संहितायां वैयामिक्या शांतिपर्वणि उतमानुशासने दानधर्मोतरेषु श्री विस्मोर्नाम सहस्त्र स्तोत्रं संपूर्णम।। शुभमस्तु।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 280 (ग)
शीर्षक : भीष्म स्तवराज स्तोत्रं
पृष्ठ संख्या : 18
आकार : 16 X 9.5 स०म० लिखित : 9.5 X 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में महाभारत के शांतिपर्व के अंतर्गत भीष्म पितामह द्वारा श्री विष्णु की स्तुति स्तोत्र के रूप में की गई है। रचना के आरंभ में रंगदार चित्र है जिसमें भीष्म पितामह शरशैय्या पर लेटे श्रीविष्णु की स्तुति कर रहे हैं और उनके पीछे अर्जुन अपना धनुषबाण लेकर खड़े हैं।

आरम्भ	:	उों नमो भगवते वासुदेवाय।। उों जनमेजय उवाच उों शर तल्ये शयानस्तु भारतानांपितामहः।।
अन्त	:	इति श्री महाभारते शत सहस्रां संहितायां वैयासिक्या।। शांति पर्वणि उत्तमानुशासने दान धर्मोतरेषु भीष्म पितामह प्रोक्तं भीष्म स्तवराज स्तोत्रं संपूर्णम्।। शुभमस्तु।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 280 (घ)
शीर्षक	:	अनुस्मृति
पृष्ठ संख्या	:	4 – 17
आकार	:	16 X 9.5 स०म० लिखित : 12.5 X 6 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	रचना चौथे पृष्ठ से उपलब्ध है। पहले तीन पृष्ठ नहीं है। महाभारत के शांति पर्व में विष्णु की स्तुति में धर्म की चर्चा की गई है।
आरम्भ	:	भगवते वासुदेवाय।। अनंत शाश्वतं देवम व्यक्तं पुरुषोत्तमं।।
अन्त	:	इति श्री महाभारते शांति पर्वणि विष्मु धर्मोत्तरेषु अनुस्मृति संपूर्णम्।। श्रुभमस्तु।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 280 (ड.)
शीर्षक	:	गजेन्द्र मोक्ष
पृष्ठ संख्या	:	38
आकार	:	16 X 9.5 स०म० लिखित : 12.5 X 6 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् । रचना की समाप्ति के पश्चात् अन्तिम पृष्ठों पर अन्य भाषा में स्तोत्र लिखे गये हैं।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में गज के द्वारा विष्णु की स्तुति की गई है । जब सरोवर में ग्राह उसका पैर पकड़ लेता है तो उस समय वह भगवान विष्णु की स्तुति करता हुआ उन्हें पुष्प भेंट करता हैं। इसी से सम्बन्धित रंगदार चित्र रचना के आरंभ में लगा है।
आरम्भ	:	उों नमो भगवते वासुदेवाय।। उों शतानीक उवाच उों याहि देवदेवस्य विस्मोरमित तेजसः।।
अन्त	:	इति श्री महाभारते शत सहस्त्र संहितायां वैयासिक्यां शांति पर्वणि मोक्ष धर्मेषु गजेन्द्र मोक्षणं सम्पूर्णम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 281 (क)
शीर्षक	:	संध्या प्रयोग
पृष्ठ संख्या	:	22
आकार	:	17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण	:	संग्रह की प्रथम रचना बीच में कुछ पंक्तियां सुनहरी स्याही से लिखी गई हैं। सजिल्द। काली एवं संतरी स्याही का प्रयोग। प्रथम दो पृष्ठों में नीले, सुनहरी एवं अन्य रंगों के मेल से सुंदर और संतरी रंग का हाशिया बनाया है। प्रति पृष्ठ चार पंक्तियां हैं ।
विशेष विवरण	:	संग्रह की इस प्रथम रचना में सायंकाल में प्रयुक्त किए जाने वाले मंत्रों का वर्णन किया गया है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः। अथ संध्या प्रयोगः।। अपवित्रः पवित्रो वासर्वाव रुवंग तो पिवा।। यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं सवाह्नाभ्यंतरः श्रुचिः।।
अन्त	:	व्रह्मणैव मनुताता गञ्ज देविधथा सुखम।। इति श्री संध्या प्रयोगः संपूर्ण समाप्तम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 281 (ख)
शीर्षक	:	श्री तर्पण विधि
पृष्ठ संख्या	:	7
आकार	:	17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में दान करने हेतु तर्पण विधि का वर्णन हुआ है। रचना के पश्चात् आगे वाला पृष्ठ खाली है ।

आरम्भ : उों अथ तर्पणं। उों विस्मुः ।। उों विस्मुः उों विस्मुः ।। आचम्य।।
अन्त : इति श्री तर्पण विधिः । संपूर्ण समाप्तम् ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS - 281 (ग)
शीर्षक : गणेश स्तोत्रं
लेखक : शंकराचार्य
पृष्ठ संख्या : 5
आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : गणेश स्तुति हेतु शंकराचार्य ने गणेश स्तोत्र की रचना की है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः । उों उमा गंगजं कर्ण वक्रं गणेशं भुजा कंकण शोभित धूम केतुं।।
अन्त : इति श्री शंकराचार्य विरचितं गणेश स्तोत्रं संपूर्ण समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 281 (घ)
शीर्षक : चतुश्लोकी भागवत
पृष्ठ संख्या : 3
आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : चार श्लोकों में भागवत का पूर्ण वर्णन हुआ है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। श्री भगवानुवाच ।। ज्ञातं परम गुह्यं में यद्विज्ञान समन्वितम ।।
अन्त : इति श्री चतुश्लोकी भागवतं संपूर्ण समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 281 (ड.)
शीर्षक : एकश्लोकी रामायण
पृष्ठ संख्या : 1
आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : एक श्लोक में रामायण का पूर्ण सार वर्णित किया है ।
आरम्भ : उों श्री रामाय नमः।। उो आदौ राम तपो वनादि गमनं हत्वा मृगं कांचते ।।
अन्त : इति श्री एकश्लोकी रामायणं समाप्तं ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 281 (च)
शीर्षक : द्वादश पंजर स्रोत्रं
लेखक : श्री शंकराचार्य
पृष्ठ संख्या : 7
आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में देवी लक्ष्मी की स्तुति हेतु स्त्रोत रचना की गई है व अंत में कमलासीन अष्टबाहु देवी का रंगदार चित्र है ।
आरम्भ : उों श्री रामाय नमः।। उों दिनमपिजति सायं प्रातः शिशिर वसंतः पुनरायातः।।
अन्त : इति श्री शंकराचार्य विरचितं द्वादश पंजर स्त्रोतं संपूर्ण समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 281 (छ)
शीर्षक : सहस्र स्तवराजः
लेखक : रुद्रयामले
पृष्ठ संख्या : 69
आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।

विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में नंदिकेश्वर एवं भगवान के संवाद के माध्यम से भगवती के सहस्र रूपों की स्तुति की गई है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः। ओं खत्रि शूल शर चाप करांत्रि नेत्रांतिग्मेत....
अन्त : इति श्री रुद्रयामले तंत्रनंदिकेश्वर संवादे महाप्रभावो भवाती तामसहस्र स्तवराजः संमाप्तं.... दंपा तुनः श्रुभमस्तु ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 281 (ज)
शीर्षक : श्री इंद्राक्षी स्तोत्रं
पृष्ठ संख्या : 10
आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : दस पृष्ठों में इंद्राक्षी स्तोत्र की रचना की गई है ।
आरम्भ : उों श्री इंद्राक्ष्यै भगवत्यै नमः ।। उों अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्र मंत्रस्य ।।
अन्त : इति श्री इंद्राक्षी स्तोत्रं संपूर्णं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 281 (झ)
शीर्षक : काली स्तोंत्र
पृष्ठ संख्या : 10
आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : काली पूजा हेतु स्तोत्र रचना की गई है ।
आरम्भ : उों श्री कालिका भगवत्यै ।। उों कपाली काली जी कर वर कपाली रस भरी।।
अन्त : तु रौ भक्त की शक्ती तव लग जु तेरी शरण है । इति काली स्तोत्रं ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 281 (ञ)
शीर्षक : संकट स्तोत्र
लेखक : शंकराचार्य
पृष्ठ संख्या : 4
आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : विपत्ति के निवारण हेतु संकट स्तोत्र की रचना सरल भाषा में की गई है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः। उों तमो कासिती वासिनी गंग तीरे सदा अर्चितं चंदनं रक्तपुष्पं।।
अन्त : इति श्री शंकराचार्य विरचितं संकटास्तोत्रं संपूर्णम् समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 281 (ट)
शीर्षक : महिम्नः पार स्तोत्रं
लेखक : पुष्पदंताचार्य
पृष्ठ संख्या : 31
आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में ब्रह्मा एवं गणेश द्वारा शिव पार्वती की उपासना एवं स्तुति की गई है। रचना के आरम्भ में एक रंगदार चित्र में ब्रह्मा एवं गणेश को उपासना करते दर्शाया है।
आरम्भ : उों नमः शिवाय।। उों महिम्नः पारंते परम विदुषो यद्यमदृशी स्तुतिर्ब्रस्मादी नाम पित दवमना स्त्वयि गिरः।।
अन्त : इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्नः पारस्तोत्रं संपूर्णम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 281 (ठ)
शीर्षक : शिव कवच
पृष्ठ संख्या : 39

आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : स्कंद पुराण के आधार पर शिव कवच की रचना की गई है। रचना के पश्चात् दो खाली पृष्ठ भी लगे हैं।
आरम्भ : उों नमः शिवाय ।। उों अस्य श्री शिव कवच स्तोत्र मंत्रस्य ।। ऋषभ योगीश्वर ऋषि।।
अन्त : इति श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोंत्तर खंडे रुद्राख्याने नाम शिव कवचं संपूर्ण समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 281 (ड)
शीर्षक : नीलकंठ स्तोत्र
पृष्ठ संख्या : 6
आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में आदि शिव की स्तुति हेतु नीलकंठ स्तोत्र की रचना की गई है ।
आरम्भ : उों नमः शिवाय।। उों आदि शंभु सुरम्य मुनि वरचंद्र सीस जटा धरं रूंड माल विशाल लोचन वाहनं वृषभध्वजं ।।
अन्त : इति श्री नीलकंठ स्तोत्रं संपूर्णं समाप्तं ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 281 (ढ)
शीर्षक : शिवराम स्तोत्र
लेखक : रामानंद सरस्वती
पृष्ठ संख्या : 6
आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : संग्रह की अन्तिम रचना में रामानंद सरस्वती के द्वारा शिव एवं राम महिमा युक्त स्त्रोत की रचना की गई है ।
आरम्भ : उों नमः शिवाय ।। उों शिव हरे शिव राम सरवे प्रभो त्रिविध ताप निवारण हे विभो ।।
अन्त : इति श्रीमद्रामानंदे सरस्वती विरचितं शिव राम स्त्रोतं संपूर्णं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 282
शीर्षक : श्रीमद् दक्षिण कालिपूजा पद्धति
लेखक : श्री स्वनूपानंद परमहंस
रचनाकाल : संवत् १६०१
पृष्ठ संख्या : 119
आकार : 17 x 10 स०म० लिखित : 13 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : सजिल्द गत्ता कपड़ा, काली स्याही का प्रयोग । पृष्ठों के आपस में जुड़ जाने के कारण कई स्थानों से स्याही उखड़ी हुई है। प्रति पृष्ठ नौ पंक्तियाँ लिखी गई हैं । लिखाई सुन्दर एवं आकर्षक है । प्रति 31 पृष्ठ से आरम्भ होती है । इससे पहले एक पृष्ठ गुरुमुखी में लिखकर जोड़ा गया है जो किसी अन्य कृति एवं दूसरे हाथ का लिखा लगता है ।
विशेष विवरण : 119 पृष्ठों की प्रस्तुत हस्तलिखित प्रति पृष्ठ 31 से आरंभ हुई है। पहले के तीस पृष्ठ इसमें नहीं हैं और पंजाबी (गुरुमुखी) में एक पृष्ठ लिखवा कर साथ जोड़ा गया है। कवि ने विभिन्न मंत्रों के द्वारा कालिका पूजा की विधि का पूर्ण अंग–उपांगों से वर्णन किया है।
आरम्भ : शोयने विनियोगाय नमः सर्वांगेषु इति ऋष्यादि न्यासः अथ करन्यासः आहीक्रों अंगुष्ठाभ्यां नमः।
अन्त : इति श्री स्वनूपानंद परमहंस विरचितं श्री मद् दक्षिण कालिपूजा पद्धति संपूर्णम् ।। संवत् १६०१ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 301
शीर्षक : बीजक
लेखक : कबीर

पृष्ठ संख्या : 164
आकार : 14 x 9 स०म० लिखित : 11 x 5 स०म०
सामान्य विवरण : कपड़े गत्ते की जिल्द में प्रस्तुत रचना को लिखने के लिए काली लाल स्याही का प्रयोग किया है । कुल पृष्ठ 164 हैं पर पृष्ठ 81 तक पृष्ठ संख्या अंकित है उसके पश्चात् नहीं ।
विशेष विवरण : रचना में कबीर की साखियां विभिन्न अंगों में प्रस्तुत हैं जिनमें गुरदेव को अंग, अकाल को अंग, प्रमारथ को अंग, उपदेश को अंग आदि के अंतर्गत कबीर ने उपदेशात्मक विचार दिए हैं ।
आरम्भ : अथ गुरदेव को अंग लिष्यते ।। साषी ।। बीजक कबीर डंडोंत गोबिंद गुर ।। बंदौं अब जन सोय ।। पह जन पे प्रनाम त्तिन ।। नमौ जे आगे होय।। १ ।।
अन्त : कबीर डसन कौ तो साध हैं ।। सुमिरन क्नु ।। ब्रह्मज्ञान ।। तिरबें को अधीन जा ।। चूडन कौ अभिमान ११ अंग ।। सीष ।। संपूरण ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 435
शीर्षक : दत्तात्रेय ईश्वर संवाद
लेखक : संवत् १८६१
पृष्ठ संख्या : 64
आकार : 14 x 11 स०म० लिखित : 11 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : सजिल्द । प्रस्तुत ग्रंथ के आरंभ में काली एवं लाल स्याही का प्रयोग हुआ है । रचना के किनारे कीड़े द्वारा जर्जर कर दिए गये हैं । अन्तिम में चार पृष्ठ आपस में जुड़ जाने के कारण लिपि में विकार आ गया हैं खाली पृष्ठों पर किसी ने काले पैन से रंगमंच एवं लेखक के विषय में लिखा है ।
विशेष विवरण : तेईस अध्यायों में लिखित इस कृति में ईश्वर–दत्तात्रेण का संवाद वर्णित है । ऋषि दत्तात्रेय प्रश्न करते हैं और ईश्वर उसके प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं।
आरम्भ : ओं श्री गणेशाय नमः ।। श्री दत्तात्रेयुवाच ।। ओं कैलास शिखरासी नं देव देवंमहेश्वरं दत्तात्रेय परिपृछ शंकरं लोक शंकर १
अन्त : इति श्री दत्तात्रेय ईश्वर संवादे जन्म वंद्या दिनो पुत्रकरणं नाम त्रिविंशति पटलः समाप्तः।। १८६१ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 522
शीर्षक : वसंत पचीसी
लेखक : जीवनाथ
रचनाकाल : सप्तमी संवत वरनौ चारु माध कृष्ण तिथि
पृष्ठ संख्या : 6
आकार : 13 x 21 स०म० लिखित : 11 x 17 स०म०
सामान्य विवरण : जिल्द रहित छः पन्नों की कृति वसंत पचीसी में प्रति पृष्ठ 22 पंक्तियां हैं। पृष्ठ कुछ हद तक जर्जर हो चुके हैं लेखक ने काली तथा लाल स्याही का प्रयोग करते हुए बड़े सुन्दर एवं आकर्षक ढंग से लिखा है।
विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति 'वसंत पचीसी' कुल 54 दोहे, कवित्त तथा सवैयों में लिखी गई है । कवि ने समय का संकेत देते हुए लिखा है – "अबुध लोचनगज सशि संवत वरनौ चारु माघ कृष्म तिथि सप्तमी ग्रंथ भयोः अवतारू ।।" इसमें कवि ने बसंत ऋतु में खिलने वाले फूलों का वर्णन करते हुए उनकी सुन्दरता को व्यक्त कर मानव मन पर उनके पड़ने वाले प्रभाव को वर्णित किया है। वसंत का कोयल आदि पर पड़ने वाले प्रभाव का भी वर्णन मिलता हैं ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अथ वसंत पचीसी लिख्यते ।। सवैया ।। जाकी कृपा गिरि लंघत पंगुहूं गुंगहं बोलत बात जची सी अंध त्रिलोकै विलोकै महाजडकू करै कविताइ रचीसी कायरजंग जुरे जयपावत दारिदी संपत्ति साज पचीसी तागन नाथ को माथै निवावै सुनाथ वनावै वसंत पचीसी।। १ ।। दोहा ।
अन्त : वरने कवित्त पचीसमै तेगचंद की प्रीति लीजै सुक विसुधारिकै कविताई की रीति ।। ५४।। इति श्री जीवनाथ कवि विरचितायां वसंत पचीसी समाप्त ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 532
शीर्षक : भगवद्गीता पदबोधिनी टीका
टीकाकार : दीनानाथ अगरवाला
रचनाकाल : संवत् १६०७ ।। शके ।। १७७२
पृष्ठ संख्या : सभी अध्यायों की पृष्ठ संख्या भिन्न है।
आकार : 30 x 15 स०म० लिखित : 23 x 11 स०म०
सामान्य विवरण : बिना जिल्द के अलग–अलग बंधे हुए अध्याय। सभी अध्यायों पर रंगदार चित्र बने हैं । पृष्ठों के किनारे पर रंगदार हाशिया बनाया है। कृति जिल्द में होनी चाहिए । प्रति पृष्ठ 11 से 13 पंक्तियाँ हैं।
विशेष विवरण : अठारह अध्याय अलग–अलग बंधे हैं। भगवद्गीता के इन अठारह अध्यायों में कृष्ण अर्जुन के संवाद के माध्यम से कुरूक्षेत्र के युद्ध का वर्णन संजय धृतराष्ट्र को बता रहे हैं।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः।। श्री कृश्मगुरु परब्रह्म नमः। अथ भगवद्गीता पदबोधिनी टीका लिख्यते।। हे संजय ।। आग्ग संजया।। धर्मक्षेत्रे ।। धर्मरूप क्षेत्र अैसे।। कुरुक्षेत्र।।
अन्त : इति श्री भगवद्गीतासुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृहमार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगोनाम अष्टादशोध्यायः ।। १८ ।। X X X लिखितं दीनानाथ अगरवाला वास्तव्यगिरउ पुस्तकवांच विचारत्यास साष्टांग प्रणिपात यथानुक्रमे पुस्तक सतगुरु प्रसादास्तवपूर्ण भया । १।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 576 संग्रह (क)
शीर्षक : गोपचरित्र
लेखक : कवि घनैया
रचनाकाल : संवत् 1910
पृष्ठ संख्या : 6
आकार : 14 x 23 स०म० लिखित : 11.5 x 18 स०म०
सामान्य विवरण : प्रस्तुत ग्रंथ चार कृतियों का संग्रह है । ग्रंथ के कुल 30 पृष्ठ हैं। आरम्भ के दो पृष्ठ किसी दूसरे की लिखाई में साथ जोड़े गये हैं अंत के 18 से 30 पृष्ठ भी अन्य लिखाई के हैं । ग्रंथ के पृष्ठों को सुई के साथ जोड़ा गया है । इसकी पहली रचना गोप चरित्र से सम्बंधित है। लाल स्याही से हाशिया बनाकर काली स्याही से रचना लिखी गई है।
विशेष विवरण : कवि द्वारा रचित इस गोप चरित्र में कृष्ण के मथुरा जाने के पश्चात् ऊधो का ब्रज में गोपियों को शिक्षा देने के लिए आना और विरह में गोपियों का व्याकुल होना और कृष्ण को स्मरण करने के साथ–साथ यशोदा तथा गोपियों का उद्धव के साथ वार्तालाप है। इसमें संवाद शैली का प्रयोग किया गया है। प्रति पृष्ठ 20 पंक्तियाँ हैं। रचना का प्रथम पृष्ठ उल्टा जोड़ा गया है।
आरम्भ : वतयनेप्रवरी गावत गणेश सो महेश सो सुरेश सरचरित अनेक रोक पावत न सेउरी भउन सो निहारोरिध पावत अपारो जन वाजित नगारो वरदानी विजेश्वरी कन् देवदरबार पुंज सेवत हजार वार वार।
अन्त : गोप चलित्र विचित्र को पड़े सुने चित लाइ ताको कार्य श्री किस्न करे सदा मन लाइ ।। ४६।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 576 (ख)
शीर्षक : पावस रुत
लेखक : कवि घनैया
पृष्ठ संख्या : 7 से 14 तक
आकार : 14 x 23 स०म० लिखित : 11.5 x 18 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की यह दूसरी रचना है। लेखक ने लाल स्याही से हाशिया बनाकर काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया है। स्थान–स्थान से फटे पृष्ठ होने के कारण उसके स्थान पर नया पृष्ठ जोड़ा गया है जिससे प्रति खंडित हो गयी है।
विशेष विवरण : कृति में पावस ऋतु में प्रकृति छटा का वर्णन करते हुए नदी, नाले, पुष्प, वृक्षों एक पशु–पक्षियों पर पड़ने वाले इसके प्रभाव का वर्णन किया है।

आरम्भ : पावस रुत वर्णनं।। कवित्त ।। दादर बुलान मोर कूकत मदान देष वेग वगला नतेज तडतात टानकी कीदर वुलान चार चात्र कर टानकं।

अन्त : न सो वेलन हवेल सो केलन कराइदै नैनन मुष जरद होइ ता तो तनशद होह हेरीही। आदर दहो हरीद लगाइ दै ।। ४५०

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 576 ग

शीर्षक : मुकरनी

लेखक : कवि घनैया

पृष्ठ संख्या : 14–18 तक

आकार : 14 x 23 स०म० लिखित : 11.5 x 18 स०म०

सामान्य विवरण : संग्रह की यह तीसरी रचना है जिसमें 65 मुकरियां हैं। मुकरियों के पश्चात् कुछ कवित्त है पर आगे पृष्ठ दूसरे लग जाने से अधूरे हैं।

विशेष विवरण : मुकरनी नामक इस रचना के कवि घनैया ने अमीर खुसरो की शैली में 65 मुकरियां लिखी हैं जो कि समसामयिक विषयों तथा वस्तुओं पर आधारित हैं।

आरम्भ : अथ मुकरनी लिख्यते । जेकर लामा पैदा पाइ निशि को लैदा ऊपर पाइ भोर भइ होवत है नंगा । किउ सखी साजन न सखी मंजा ।। १ ।।

अन्त : अत विचित्र सुंदूर है प्यारा तिसको चाहत सकल संसारा जव बोले तब ही गुलजार । किउ सखी साजन नही अनार ।। ६५।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 576 (घ)

शीर्षक : पटियाला दरबार की महिमा

लेखक : कवि घनैया

रचनाकाल : संवत् 1910 के आसपास

पृष्ठ संख्या : 19–29

आकार : 14 x 23 स०म० लिखित : 11.5 x 18 स०म०

सामान्य विवरण : संग्रह की चौथी कृति है जिसकी लिखाई सुन्दर न होने के कारण उसको पढ़ना कठिन है । कवि ने काली स्याही का प्रयोग किया है । स्थान–स्थान पर कागज के टुकड़े जोड़े गये हैं जिसमें यह कृति खंडित लगती है ।

विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति में पटियाला दरबार के महाराज श्री नरिन्द्र सिंह के दरबार की महिमा का वर्णन किया गया है । इसमें दरबार की संरचना एवं चित्रकारी का वर्णन भी है । किसी पृष्ठ पर पन्द्रह पंक्तियाँ हैं तो किसी पर अठारह । अंत में दो अन्य पृष्ठ भी जोड़े गये हैं।

आरम्भ : सौमवंस हंस महराज श्री नरंद्र सिंघ मृरत मदन मानो विद चतराई है।। कवित्त।।

अन्त : कुल तव पुरख कुल विघत जैवं घन मानै वध हिं।। संन्यास धार घन संग्रहते सजमै मूरखचित ।। ६ ।। इति श्री।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 660 संग्रह (क)

शीर्षक : अरजुन गीत

पृष्ठ संख्या : 48

आकार : 15 x 23 स०म० लिखित : 12 x 21 स०म०

सामान्य विवरण : संग्रह की पहली रचना । भूरी स्याही का हाशिया चारों ओर खींचा गया है । प्रति पृष्ठ 18 पंक्तियाँ लिखी गई हैं ।

विशेष विवरण : रचना की लिखावट में निजी विशेषता है। दोह चौपाई शैली में अर्जुन द्वारा वर्णित गीता प्रसंग इसका विषय है ।

आरम्भ : स्रीरी सुरसती मता जी सहंऐ नमस्रीरी गनेस जी सहऐ नम स्रीरी पोथी आरजुन गीतन आरभ होत । दोह ।

अन्त : हलघत सुप्पइरम पोजी राघ मनी चांव ससघ्न वजरापोरी पौच फीमंदी सेसचुफीवंयन परापार।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 660 (ख)

शीर्षक : नाम जन्मफल
पृष्ठ संख्या : 31
आकार : 15 x 23 स०म० लिखित : 12 x 21 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की दूसरी रचना ।
विशेष विवरण : शीर्षक अनुसार विभिन्न समय के आधार पर जन्मकाल के प्रभाव का वर्णन किया है ।
आरम्भ : स्री पोथी नाम जन्म सोप्पतेस्ही । स्री गनेस जी सऐनाम स्री सुरसती मतजी स्पेऐनाम :
अन्त : इती स्री पोथी नाम जनम फल संमपुरन स्हीजो पत्र ईप्प सो सीप्पतः 30 घ्सफत सुधइरम पोजीर ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 661 संग्रह (क)
शीर्षक : राम जनम
रचनाकाल : १८६७
पृष्ठ संख्या : 65
आकार : 14 x 19 स०म० लिखित : 13 x 17 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की पहली रचना । काली लाल स्याही का प्रयोग । प्रति पृष्ठ आठ पंक्तियाँ । लाल स्याही से हाशिया खींचा हुआ है ।
विशेष विवरण : राम जन्म से सम्बन्धित वृत्तांत । आरंभ में मंदिरनुमा चित्र बनाकर ग्रंथ आरम्भ उसी में किया गया है।
आरम्भ : स्री गनेस जी साहाऐ पोथी राम जनम ।
अन्त : इती त्षी पोथी राम जनंम संपुरन लाइ ल सो सदी सन १८६७ तः १३ वैसघ मोकाम समलनाहसप्पत मुंना रामलीप्पनी मलरामरम ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 661 (ख)
शीर्षक : महापुरान
लेखक : सूरजदास
पृष्ठ संख्या : 1–22, 1–20
आकार : 14 x 19 स०म० लिखित : 13 x 17 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की दूसरी सचित्र रचना ।
विशेष विवरण : सुरज महात्मा द्वारा सचित्र महापुराण वर्णित है। पहले पृष्ठ के बाद दूसरा तीसरा पृष्ठ उल्टा जोड़ा गया गया है।
आरम्भ : दोहा सदा भवानी दाहीनी सीच फरही गनेस पामहे पतार छाफनै व्रम्हा वीसुन माहेस।
अन्त : इती श्री म्हापुरान स्रुजमाह तमोनाम सींउपारवती रचहभ्रच्यै ऐ फादसी ११ समपतो।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 661 (ग)
शीर्षक : स्री पोथी अरजुन गीता
रचनाकाल : १८८८
पृष्ठ संख्या : 1–56, 1–21, 1–19
आकार : 14 x 19 स०म० लिखित : 13 x 17 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : अरजुन गीता, भोगस पुरान आदि दो तीन कृतियों का संग्रह । प्रत्येक कृति का आरंभ तथा अंत सचित्र किया गया है। लिखाई साफ है पर शैली लेखक की अपनी है जिसके कारण पढ़ने में कठिनाई अनुभव होती है।
आरम्भ : दोहा सीनी लोफफेस्यामी दीनवंधु नं दलास वीनती फरौभ्रघी नहोऐ माघौ पयन री सील ।। चौपाई।।
अन्त : इती स्री पोथी भोगस पुरान संमपुरंन भऐ सुभ जो पत्री दो सो लीफाहसघ त पोरी राम मफामसपाद संन १८८८.

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 671
शीर्षक : प्रबोध ज्ञान योग
लेखक : नदासेन
लिपिकार : शिवरामेण

रचनाकाल	:	संवत् १८३६
पृष्ठ संख्या	:	108
आकार	:	14.5 x 23.5 स०म० लिखित : 11 x 19 स०म०
सामान्य विवरण	:	प्रस्तुत ग्रंथ जिल्द में है पर जिल्द उखड़ी हुई है। काली स्याही से पूरा ग्रंथ लिखा गया है प्रति पृष्ठ 17 पंक्तियाँ अंकित हैं।
विशेष विवरण	:	प्रबोध ज्ञान योग नामक इस रचना में कवि ने मार्कण्डेय पुराण से प्रमाण एवं उदाहरण देते हुए ज्ञान योग के सभी पक्षों पर विचार किया है। जो विभिन्न उपदेशों के अंतर्गत वर्णित हैं।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ओं सतगुर प्रसाद ।। अथ भ्नुयौमत प्रबोध ज्ञान योग लिख्यते ।।
अन्त	:	इति श्री मत्महाराज दया सिंह जी शिष्ये नमया प्रल्यंमति संतनदासन्नदासेन कृत वर्णने नाम प्रष्टमे उपदेशज नमय प्रबोध ग्रंथ ज्ञान योग भक्ति संयुक्त समाप्तं । शुभमस्तु संवत् १८३६ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 675 संग्रह (क)
शीर्षक	:	श्रीकालाग्निरुद्धोपनिषदं
पृष्ठ संख्या	:	22
आकार	:	16.5 x 10.5 स०म० लिखित : 12 x 5 स०म०
सामान्य विवरण	:	गत्ते कपड़े में सजिल्द इस ग्रंथ की पहली रचना में लेखक ने काली स्याही का प्रयोग किया है जबकि विराम चिन्हों के लिए पीली स्याही प्रयुक्त की है। प्रति पृष्ठ पांच पंक्तियाँ अंकित हैं।
विशेष विवरण	:	22 पृष्ठों की इस काल अग्नि रुद्उपनिषद में सभी अंगों की वंदना के पश्चात् सभी देवताओं की वंदना की गई है। तत्पश्चात् काल की वन्दना वर्णित है।
आरम्भ	:	ओं नमो भगवते वासुदेवाय।। ओं विस्मुः ।। ओं विस्मुः ।। ओं विस्मुः ।। ओं वाक्।। ओं वाक्।। ओं प्राण।। प्राणाः।। घ्राण घ्राण चक्षुः । चक्षुः।। श्रोत्रः श्रोत्रः नाभि. स्यदयं।।
अन्त	:	ओं विस्मुं ओं। विस्मुं ओ विस्मुंः। सोहंमस्यस्च रज स्रंसर्वदातयः। स्वयं उतटं भस्मश्च फट्स्वाहा ।। इति श्री कालाग्निरुद्धोपनिषदं संपूर्णम् ।। श्रुभंभू ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 675 (ख)
शीर्षक	:	अन्नपूर्ण स्रोत्र
पृष्ठ संख्या	:	6
आकार	:	16.5 x 10.5 स०म० लिखित : 12 x 5 स०म०
सामान्य विवरण	:	संग्रह की यह दूसरी रचना है। काली एवं पीली स्याही का प्रयोग किया है। प्रति पृष्ठ पांच पंक्तियाँ है ।
विशेष विवरण	:	कृति के छः पृष्ठों में उमा–शंकर का संवाद और काशी पुरी का महात्म्य वर्णित है काशी को इसलिए अन्नपूर्णा कहा गया है क्योंकि इस पर शंकर की अनुकंपा है ।
आरम्भ	:	ओं श्री गणेशाय नमः ।। ओं नित्यानंद क री वराभयकारी सौंदर्य रत्नाकरी ।
अन्त	:	ज्ञान वैराग्य सिद्धार्थे अन्नपूर्णे तमो स्तुतै ।। १२ ।। इतिश्री अन्नपूर्णा स्रोत्रं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 678 संग्रह (क)
शीर्षक	:	ब्राह्मण सर्वस्वाभिधानं
लेखक	:	हलायुध
रचनाकाल	:	संवत् १६१२
पृष्ठ संख्या	:	145
आकार	:	26 x 12 स०म० लिखित : 21 x 9 स०म०
सामान्य विवरण	:	गत्ते कपड़े में सजिल्द। लेखक ने पृष्ठ संख्या अंकित नहीं की है । बाद में पैंसिल से पृष्ठ संख्या दी गई है। सफेद पृष्ठों के साथ कुछ पीले पृष्ठों का प्रयोग भी किया गया है । प्रति पृष्ठ 11 से 14 पंक्तियाँ हैं। काली स्याही का प्रयोग हुआ है । लिखावट सुन्दर है ।
विशेष विवरण	:	ग्रंथ में ब्राह्मणों द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले सोलह संस्कार वर्णित है । इन संस्कारों में प्रयुक्त होने वाले मंत्रों का वर्णन करते हुए देवी–देवताओं की स्तुति भी की गई है ।

		रचना का अन्तिम पृष्ठ जो पृष्ठ 145 के बाद आना चाहिए था वह आरम्भ में जोड़ा गया है । पृष्ठ 145 के पश्चात् दूसरी कृति का आरंभ हो जाता है ।
आरम्भ	:	ओं आग्नेय स्वाहा इदमग्नये ओं सोमाय स्वाहा इद सोमाय ततो ब्राह्मणान्वरंभत्यागः आज्येनाष्टाहुतीर्जुहुयात् ।
अन्त	:	इत्या वसथिक महाधर्माध्यक्ष हलायुध कृतौ ब्राह्मण सर्वस्वाभिधान पुस्तकं समाप्तमिति शुभं भूयात सं० १६१२ वैशाख श्रुक्ल–५।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 678 (ख)
शीर्षक	:	वस्मुपुराणम्
पृष्ठ संख्या	:	146–154
आकार	:	26 x 12 स०म० लिखित : 21 x 9 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	विस्मुपुराण नामक इस रचना में ब्राह्मणों द्वारा किये जाने वाले सभी कृत्यों में प्रयुक्त होने वाले मंत्रों का वर्णन किया गया है। रचना के पृष्ठ क्रम में नहीं है । जैसे – पृष्ठ 152, 153 154 को पृष्ठ 151 से पहलें लगाया गया है ।
आरम्भ	:	विस्मुपुराणम् अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जंबू द्वीपे महामुने यतोहि कर्म्म भू रेखा ततोन्या भोगभूयसः अत्र जन्म सहस्राणां सहस्रै द्विज सत्रम ।
अन्त	:	इति स्थिते वेदाध्यन वेदार्थ ज्ञान मंतरेण गार्हस्थ्याधिकार एवम् स्यात् तदनधिकारेच सर्वकर्मानधिकार एवयतः नधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र फुरुते श्रमंसजीवन्ने ।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 679 संग्रह (क)
शीर्षक	:	कवित्त गौतम के, गीतज्ञान चंद तथा राजनीति के कबीत
रचनाकाल	:	संवत् १८४०
पृष्ठ संख्या	:	1–25
आकार	:	21 x 15 स०म० 15 x 11 स०म०
सामान्य विवरण	:	काली–लाल स्याही से लिखी गई यह कृति दो लोगों द्वारा लिखी लगती है । बीच में पृष्ठ नः 15–16 खाली हैं। कुछ पृष्ठ आधे–अधूरे हैं । प्रति पृष्ठ 15 पंक्तियाँ अंकित है।
विशेष विवरण	:	इसमें कवि ने राजनीति सम्बन्धी कवित्त लिखकर राजकाज की शिक्षा दी है। इसके अतिरिक्त इसमें 'कवित्त गौतम के', 'गीत ज्ञानचंद के' तथा 'गीत भक्त सिंह के' भी समाहित हैं। रचना के बाद कुछ दोहे अगले पृष्ठ पर लिखे गये हैं।
आरम्भ	:	ओं गणेशाय नमः।। कवित्त।। पूरण सुषसोमत हैं।। गजमुष एक हारदन बहु विघन हर तहै लंबोदर घट सो तौ विद्या दशच्या रहा वौ सुंभ मै। अषं म गुन मोद कमरत हैं।
अन्त	:	अथ संवत् १८४० मीती असाढ बदी १२ वार ब्रसपतवार कु लिखतं जो जग वहादसी मेवाची बेरोज केर नै जील राजनीत के कबीत समपूर्ण सभंभवैत ।। 4 ।। 4 ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 679 (ख)
शीर्षक	:	स्याह नांवा
रचनाकाल	:	संवत् १८२५
पृष्ठ संख्या	:	30 – 36
आकार	:	21 x 15 स०म० लिखित : 15 x 11 स०म०
सामान्य विवरण	:	सजिल्द। संग्रह की दूसरी रचना । काली स्याही का प्रयोग किया गया है । पृष्ठ के दोनों ओर हाशिया है । रचना से पूर्व पृष्ठ नः 26–29 तक खाली हैं ।
विशेष विवरण	:	कवि ने संवत् 1750 में दिल्ली सिंहासन पर राज्य करने वाले दिल्ली पति की कीर्ति में यह रचना लिखी है । इसके पहले तीन खाली पृष्ठ लगे हैं ।
आरम्भ	:	ओं गणेशाय नमः अथ स्याह नांव लिष्यते ।। प्रथम मनाकुं सारदा सुभ अक्षर लावै विमल बुद्धि कर दीजीयै सेवग सुष पावै आदि पुरस कौ यादिकर पद छपै छंद वाक् वादिनी ध्याइयै होय सदाआनंद १
अन्त	:	कवहंस कहै वंशावली सबके नाव वर्षान दिल्लीपत ऐते भऐ सई यह मूगल पठान ६० संवत् १८२५ भाद्रपद वहि ३० रवों स्याह नांवा संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 679 (ग)
शीर्षक : वसीकरण मंत्र
पृष्ठ संख्या : 36 – 39
आकार : 21 x 15 स०म० लिखित : 15 x 11 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की तीसरी रचना । काली लाल स्याही से यंत्र बनाए गये हैं । प्रति पृष्ठ 11 पंक्तियाँ हैं।
विशेष विवरण : भवानी दास कृत गीत इसमें समाहित हैं ।
अरम्भ : पती भवनी जी सत वषीकरण । उों हंट कटुके कटुक यत्रे स्रभगे असुरि रक्तबास से अथर्बस्य टुही ते अघोर कर्मकारके :
अन्त : सुंदर कहत गुरुदेव जुलयाल हौंई फरा घाट घउ करी मोंहनि सतास्यौ हैं।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 679 (घ)
शीर्षक : गुरदेव के अंग
लेखक : सुंदर दास
रचनाकाल : संवत् १८२५
पृष्ठ संख्या : 39 – 43
आकार : 21 x 15 स०म० लिखित : 15 x 11 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की अंतिम रचना ।
विशेष विवरण : इसमें संत सुंदरदास द्वारा गुरुदेव की प्रशंसा में दोहे लिखे गये हैं ।
आरम्भ : श्रीराम जी सहायै । सवया लीषतं गुरदेव को अंग ।। छंद व छह ।। मोजकरी गुरुदेव दया करि :
अन्त : सुंदर कहत गूरुदेव जुलंया ।। लहौइ फरी घाटघ उठकर । मोंहनि मतार चौहै ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 694 संग्रह (क)
शीर्षक : श्री विक्रम अवतार शरणं
पृष्ठ संख्या : 21 x 14 स०म० लिखित : 19.5 x 12 स०म०
सामान्य विवरण : जर्जर हुई जिल्द की यह पहली रचना है । रचना के लिखित पृष्ठ भी कीड़े द्वारा खाये जा चुके हैं जिसके कारण कृति का पूरा पता नहीं चलता है । प्रति पृष्ठ 25 पंक्तियाँ हैं । लेखक द्वारा लाल तथा काली स्याही का प्रयोग किया गया है ।
विशेष विवरण : संवाद शैली में पहले राम की महिमा का वर्णन किया है फिर राम के वंश तथा बाद में सीता के वंश का वर्णन है।
आरम्भ : ।। राम जी सति। श्री गणेशायं न्मः । रांम रांम। शिधोवरन शवा वनाया। चित्रु चित्रु दासा दउ शवारा।। दसैश मन्या।।
अन्त : तीजेथा जौ सासंक्र कुमै। ईद्र पंद्रावा जुसुर्प्ती।। पोतीम् नेषोंयंन्मः ।। ती सस्य भ्यौ जे केचो प्रथतैः।चम्यो श्रपम्यो नमः।। ई ई तत मुमु ल ल सां सांतिति स स मा मा प प र ता ता ।। १ ।। श्री रांम जी सहाया ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 694 (ख)
शीर्षक : जनक सगाई
रचनाकाल : संवत् १७३० माघ महीना
पृष्ठ संख्या : केवल 16वां पृष्ठ
आकार : 21 x 14 स०म० लिखित : 19.5 x 12 स०म०
सामान्य विवरण : केवल डेढ़ पृष्ठ की यह संग्रह की दूसरी रचना है। आरंभ है पर अंत नहीं।
विशेष विवरण : ईश वंदना के पश्चात् कवि ने जानकी की सगाई का वर्णन किया है। इस अवसर पर जानकी के रूप सौंदर्य का चित्रण करना कवि का उद्देश्य है।
आरम्भ : ।। राम जी सत।। गौरि नंद गणेश मनाउ।। सुमर सारदा अग्या पाई।। सुभं सृ व्रह्मा विश्न महेश।। जिन मोह दीनी वुध वसेष।
अन्त : जांनुं ईद्र पुरी लिया ओतारा। छुटी पतल चे तोमिंत ।। मंन मघर कै मोह चित।। क्षुटे रंधे वर ओर पुरकार ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 694 (संग्रह ग)
शीर्षक : क्रस्म औतार
लेखक : नंदलाल
पृष्ठ संख्या : 17 से 44 तक
आकार : 21 x 14 स०म० लिखित : 19.5 x 12 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की तीसरी रचना। प्रति पृष्ठ 23 पंक्तियाँ काली तथा लाल स्याही का प्रयोग । पृष्ठ कीड़ों द्वारा नष्ट किए गये हैं।
विशेष विवरण : इस रचना के 476 पदों में कृष्ण अवतार से लेकर कंस वध तक सारा प्रसंग संवाद शैली में वर्णित हैं रचना के आरम्भ में पहले आधा पृष्ठ फिर एक पृष्ठ लिखकर फिर पुनः रचना आरंभ की गई है ।
आरम्भ : प्रथम वीनायक सुंमरू तोहे । सिध कांम वर दीजे मोहे।। दुजै सुमंरू गौरि भरतार।। जटा भस्म जिन कियो सिंगार।।
अन्त : मारक सगल दिन्सो पाव।। हम तमा जीयो गोरे कौराव।। ४७४।। ईती क्रिस्म औतार संरनं समांप्रत।। लीषत हरसेवग नंदलाल।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 694 (संग्रह घ)
शीर्षक : राम महिमा
पृष्ठ संख्या : 45 एवं 46
आकार : 21 x 14 स०म० लिखित : 19.5 x 12 स०म०
सामान्य विवरण : काली तथा लाल स्याही का प्रयोग। संग्रह की चौथी रचना ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में राम महिमा का गुणगान करते हुए भक्त को राम सिमरण की प्रेरणा दी है और नाम स्मरण का प्रभाव बताया है।
आरम्भ : ।। १ ।। राम जी सती ।। अरे निरअंधा पसु गवारा ।। हर सुमरो वारंवारा ।। हर सुंमर्त विलंव मत लावो ।। मांनिखा जन्म वहो रनां पावो ।
अन्त : भग्तिकारी पर्मां नंदिसुर ।। दिनो दर्स नर लोहि जुर । गांव धांवई जन रासो गुजर।। वउ गुजर जस कथिया ।। परसन हुवा मुरारी ।। राम राम ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 695
शीर्षक : भागवत दशम स्कन्ध
लेखक : लक्ष्मनदास
रचनाकाल : संवत् १६०८
पृष्ठ संख्या : 182
आकार : 29 x 24 स०म० लिखित : 20 x 18 स०म०
सामान्य विवरण : 182 पृष्ठों की कृति भागवत् दशम स्कन्ध गत्ते कपड़े में सजिल्द है । पृष्ठ के दोनों ओर लाल स्याही से लाइने खींची गई हैं । प्रति पृष्ठ 20 पंक्तियाँ हैं । लेखक ने लाल तथा काली स्याही का प्रयोग किया है । आरम्भ में चार खाली पृष्ठ रखे गये हैं ।
विशेष विवरण : लेखक के अनुसार इस पुराण का आरंभ माघ महीने की नवमी तिथि को तथा समाप्ति चैत्र मास की दशमी तिथि को हुई । श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कन्ध को भगवानदास के पढ़ने हेतु इसे लक्ष्मणदास ने लिखा । रचना में कुल 90 अध्याय है। आरम्भ से अंत तक कृष्ण चरित्र का वर्णन हुआ है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। अथ भागवत दशम स्कंद भाषा कृस्म दास कृति लिख्यते। दोहरा ।। दो मति घट महि परसपर बोलत एक समान ।। इक गावै गुण श्याम के इक वर्जे सुर ज्ञान ।।
अन्त : इति भागवते महापुराणे दशम स्कंधे कृस्म दास कृत महो ध्यायः।। ६०।। संवत् १६०८ चैत्रवदि दशमी चंद्रवासरा लिष्यंत लक्ष्मनदास भणेत गोते मध्ये पठनार्थ भगवानदास ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 731
शीर्षक : कर्ण पर्व
लिपिकार : सनातन देव
लिपिकाल : १८६३
स्थान : वृंदावन
पृष्ठ संख्या : 176

आकार : 22 x 29 स०म० लिखित : 17 x 19 स०म०

सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े में सजिल्द कृति महभारत का कर्ण पर्व में कवि ने काली तथा लाल स्याही का प्रयोग किया है । कृति के आरम्भ और अंत में दो खाली पृष्ठ हैं प्रति पृष्ठ 20 पंक्तियाँ अंकित हैं ।

विशेष विवरण : राजा संसार चंद कांगड़े वाले के कहने पर लिखा गया ग्रंथ कर्ण पर्व ब्रज भाषा में है जिसमें लेखक ने कर्ण की वीरता एवं बुद्धि का वर्णन किया है । कृति के 93 अध्याय हैं और यह महाभारत के कर्ण पर्व का अनुवाद मात्र है । कृति के अंत में तथा अगले पृष्ठ पर कुछ औषधियों के नुस्खे लिखे है । इसी प्रकार आरम्भ में भी लिखा है जो कि पठनीय नहीं है ।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः । अथ करण पर्व भाषा लिख्यते।। त्रिभंगी छंद।। विघन विनासय वुधि परगासय पूरन आसय बहुविधि के।।

अन्त : इति श्री महाभारते कर्ण पर्वणी वीर कौतूहल त्रनवयो ध्यायः।। ९३।। समाप्तोये कर्णपर्व भाषायां संपूर्ण समाप्तम् । मम् ।। शुभं ।। संवत् १८६३

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 801 संग्रह (क)

शीर्षक : दादू जी की वाणी

लिपिकार : किसदास

लिपिकाल : विक्रमी संवत १९०२

पृष्ठ संख्या : 169

आकार : 13.5 **x** 20.5 स०म० लिखित : 11.5 **x** 16.5 स०म०

सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े की जिल्द में वह प्रस्तुत रचना 'दादू की वाणी' 169 पृष्ठों की है। रचना के लिए काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। कृति में कुल 445 पद हैं रचना के आरम्भ में दादू जी पोथी क्रिसदास कृत लिखा है।

विशेष विवरण : 445 पदों की इस कृति में संत दादू दयाल की वाणी को लिखित रूप दिया गया है जो कि विभिन्न रागों और पदों में गाई गयी है। प्रति पृष्ठ 23 पंक्तियाँ अंकित हैं।

आरम्भ : राम जी सति ।। श्री परमात्मांने नमैः ।। श्री स्वामी दादू दयाल जी को क्रित लिषतं।। प्रथम गुरुदेव को अंग ।। दादून्मोन्मो निरंजनं नमसकार गुरदेव तह बंदनं ।

अन्त : जुगि जुगि तारनहार।। जुगि जुगि दरसन देषिये।। ३ ।। जुगि जुगि मंगलचार।। जुगि जुगि दादू गाईये ।। ४।। इती श्री स्वामी दादू दयाल जी की वाणी संपूरण समापतः ।। साषी सबद का जोड़ ।। साषी ।। पद ।। ६६५ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 801 (ख)

शीर्षक : कबीर जी की वाणी

लिपिकार : किसदास

लिपिकाल : विक्रमी १९०२

पृष्ठ संख्या : 170–287

आकार : 13.5 **x** 20.5 स०म० लिखित : 11.5 **x** 16.5 स०म०

सामान्य विवरण : प्रस्तुत रचना ग्रंथ की दूसरी रचना है । लाल–काली स्याही का प्रयोग लिखने हेतु किया गया है।

विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति में कबीर जी की वाणी के अन्तर्गत कबीर की साखियाँ, सबद एवं रमैणी को अंकित किया गया है। इसमें 926 साखियाँ, 404, सबद एवं 8 रमैनियां अंकित हैं ।

आरम्भ : अथ कबीर जी की वाणी लिषतं।। अथ गुरदेव कौ अंग।। कबीर सत्गुर सवान को सगा सोधी सवीनदति।।

अन्त : तब लग भौसागर नहीं तिरिहौ । भाव भगति विसवास बिन ।। कटै न संसै मूल ।। कहै कबीर हरि भगति बिन।। मुक्ति नहीं रे मूल।। इती कबीर जी की वाणी संपूरण समाप्तः ।। सबद ४०४।। साखी ६२६ ।। रमैणी।। ८ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 801 (ग)

शीर्षक : नामदेव की वाणी

लिपिकार : किसदास

लिपिकाल : विक्रमी १९०२

पृष्ठ संख्या : 288 – 311
आकार : 13.5 x 20.5 स०म० लिखित : 11.5 x 16.5 स०म०
सामान्य विवरण : पोथी की यह तीसरी रचना है।
विशेष विवरण : नामदेव की वाणी के अंतर्गत राग, सबद और साखियाँ संकलित हैं जिनका विषय अध्यात्म के साथ संबंधित है। रागों की संख्या 21, सबद 166 तथा साखियाँ 13 हैं।
आरम्भ : अथ नामदेव जी की वाणी लिख्यते।। राग टौसी।। राम नामवेती रामनाम बारी।। हमारै घन बाबा बृनदरी।। टेक ।।
अन्त : मांमं सभ म्याघट कौ यौबणैं। यऊतौ बात अगाध।। सिरजे सौ नृबैरता। पूजण कौ ऐ साध। १३। इती नामदेव जी की बाणी समसत संपूरण समापतः।। राग ।। २२।। सबद ।। १६६ ।। साषी ।। १३ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 801 (घ)
शीर्षक : रैदास जी की वाणी
लिपिकार : किसदास
लिपिकाल : विक्रमी १६०२
पृष्ठ संख्या : 312–326
आकार : 13.5 x 20.5 स०म० लिखित : 11.5 x 16.5 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की चौथी रचना है।
विशेष विवरण : 'रैदास जी की बाणी' नामक यह रचना संग्रह की चौथी रचना है जिसमें रैदास कृत सबद, साखियां और रागों पर प्रकाश डाला गया है। इनका विषय नाम महिमा से सम्बन्धित है।
आरम्भ : अथ रैदास जी की बाणी लिषतं।। अथमें सबद।। राग रामकली ।। परचै राम रमैं जे कोई ।। पारस परसेइ बिधि न होई।।
अन्त : रैदास तूंकां वछिफला।। नुकैंन धावै कोई।। तैं निज नांवं न जानियां।। क्तरमलेरा होइ।। इती रैदास जी की बाणी साषी सबद समसत संपूरण।। सबद।। ८१ ।। साषी ।। ४।। राग ।। १४।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 801 (ड.)
शीर्षक : हरदास जी की वाणी
लिपिकार : किसदास
लिपिकाल : १६०२
पृष्ठ संख्या : 326 – 345
आकार : 13.5 x 20.5 स०म० लिखित : 11.5 x 16.5 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की अन्तिम पांचवी रचना । कृति के अंत में 21 खाली पृष्ठ जोड़े गये हैं।
विशेष विवरण : हरदास जी की वाणी रमैणी, साखी और पदों में अंकित है जिनकी संख्या तीन चार और एक सौ बियासी है। लेखक ने सभी रचनाएं दादू दयाल को गुरु एवं सहायक राम रूप में मान कर संग्रहित की हैं।
आरम्भ : अथ हरदास जी की बांणी लिषतं। प्रथमे राग गोडी ।। अवधू ब्रह्मा को घर लाघौ रे।। हरि न जि औसर कदे न होरे।।
अन्त : तब हरदास तस गीत।। बिचके बेरूयंपूता ।। १ ।। रमैणी ।। ३ ।। सषी ।। ४।। पद ।। १८२ ।। हरदास जी की वाणी संपूर्ण।। रांमं रांम दादू रांम जी सहाइक दादू रांम साहाई ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 802 संग्रह (क)
शीर्षक : बाणी दादू दयाल
पृष्ठ संख्या : 69
आकार : 14 x 8 स०म० लिखित : 12 x 5 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की पहली रचना। काली एवं लाल स्याही से लिखी गई है। प्रति पृष्ठ सात पंक्तियां। पृष्ठ के दोनों ओर लाल स्याही से हाशिया खींचा है। कृति के आरंभ में तीन खाली पृष्ठ हैं।
विशेष विवरण : दादू जी की वाणी से परचां का अंग एवं बीनती को अंग इसमें संग्रहीत किये गये हैं।

आरम्भ : श्री राम जी सति ।। श्री स्वामी दादू दयाल जी सहाइ।। प्रथम प्रचा को अंग लषतं।। दादू नमो नमो निरंजन ।। नमसकार गुरदेव।।
अन्त : दादू साहिब लेखा लीपा।। तौ सीस कटि सूली दीया।। मिहरम पाकरि फल कीया।। तौ जीरों जोऐ करि जीया ।। १५।। इति बीनती कौ अंग सनपूरण।। अंग ।। २।। साखी।। ४०२ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 802 (ख)
शीर्षक : चिंतावर्ण सुंदरदास
पृष्ठ संख्या : 70 – 97
आकार : 14 x 8 स०म० लिखित : 12 x 5 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की दूसरी रचना। पृष्ठ 95 के दोनों ओर लाल स्याही से बार्डर बनाया है।
विशेष विवरण : चिंतामणि संग्रह के अंतर्गत सुंदरदास की वाणी में से तारक चिंतामणि, बबेक चिंतामणि एवं हरि बोल चिंतामणि में ईश्वर की एवं गुरु की महिमा का गान किया है ।
आरम्भ : अथम तरक च्यंतामणि लषतम् ।। पूरण ब्रह्म निरंजन राया ।। जिन यह न षर्स्षि साज बनाया ।।
अन्त : सुंदरदास पुकार कै। कहत बजारो ढोल ।। चेतस कैतौ चेतियौ।। सुहरि बोलो हरि बोल।। २६ ।। इति हरि बोल चिंतावणि। समपूरण।। ३ ।। चौपाई दोहा ।। १२३ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 802 (ग)
शीर्षक : सवईया सुंदरदास
लेखक : सुंदरदास
पृष्ठ संख्या : 95 – 164
आकार : 14 x 8 स० म० लिखित : 12 x 5 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की तीसरी रचना । पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना के अंतर्गत सुंदरदास के सवैयों में छः अंग 'गुरदेव कौ अंग', 'त्रयदेस चिंतावणी कौ अंग', 'काल चिंतामणि कौ अंग', 'प्रेम ज्ञानी कौ अंग' आदि पर विचार किया गया है।
आरम्भ : अथ सुंदरदास जी का सवईया लषऽत्तम।। अथ गुरदेव कौ अंग।। इंदवं छंद।। मॉज करी गुरदेव दया कर सबद सुनाइ कीयौ हरि नेंरो।।
अन्त : सुंदर को कण जांग सकयेह गोकल गांव कौ पै मोहि न्यारौ।। ५।। इति प्रेम पराज्ञांनी कौ अंग समपूरणं।। अंग ।। ६ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 802 (घ)
शीर्षक : नरसी जी कौ माहिरो
लेखक : सुंदरदास
पृष्ठ संख्या : 106 – 178
आकार : 14 x 8 स०म० लिखित 12 x 5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में पद्यों में नरसी की कथा का वर्णन है।
आरम्भ : अथ नरसी जी कौ माहिरो लषतं।। राग सोरठ।। गणपति की आज्ञा पांऊं।। हरि भगतन कौ जस गाऊं।। टेक ।।
अन्त : भगति में प्रेम पियारो।। है सब मैं सब थैं न्यारों।। ३ ।। जाकी लीलां अप्रम अनंता।। इन चरनन की सरन बसंता ।। ४ ।। २० ।। इति श्री नरसी जी कौ माहरौ सममपूरण समापत्तः।। २०।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 802 (ड.)
शीर्षक : दसौ दिशा का सवईयां
लेखक : सुंदरदास
पृष्ठ संख्या : 178 – 182
आकार : 14 x 8 स०म० लिखित : 12 x 5 स०म०

सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में दसों दिशाओं से सम्बन्धित दस सवैये सुंदरदास ने लिखे हैं।
आरम्भ	:	अथ दसौ दिसा का सवईया लषतं ।। पूरब देसन संत पछतरत्त। लोग मलीन परेचरू कीन क्रिया करिहीं नले जीच समाप्रत ।।
अन्त	:	सुंदरदास भये मन फूहड़ नारि फतेपुर मांही ।। इति दसां दिसा का सवईया समपूरण ।। १० ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 802 (च)
शीर्षक	:	सुंदरदास जी को बरंनन
लिपिकार	:	आतमागम
लिपिकाल	:	१६०५ (संवत्)
स्थान	:	नगर भीलोदङा
पृष्ठ संख्या	:	183 – 186
आकार	:	19 x 26 स०म० लिखित : 12 x 21 स०म०
सामान्य विवरण	:	संग्रह की अन्तिम रचना । रचना के अन्त में तीन खाली पृष्ठ हैं ।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में सुंदरदास का परिचय पद्य में दिया गया है। इसमें यह भी संकेत दिया गया है कि भीलदड. नगर में जो संतवाणी का गुटका पड़ा है । उसे आतमा राम नामक व्यक्ति ने लिपिबद्ध किया है । फिर अंत में दोहा दिया गया है ।
आरम्भ	:	अथ सुंदरदास जी को बरननं।। दादू जी दयाल की टसाल सरोमन अैसे घड़े यट वोय मांला इक।।
अन्त	:	इति सुंदरदास जी कौ बरननं समपूरणं समापति।। ८ ।। सलोक प्रमांण बतीसा अषर ।। जोङ समसत ।। १०२२५ ।। मत्ती बसाष वुध।। १५ ।। समत ।। १६०५ ।। का ।। नगर भीलोदङा तामखि गुटका समपूरण समापती ।। दोहा ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 828
शीर्षक	:	श्रीमद् भागवत गीता (भाषा टीका)
टीकाकार	:	दिवाकर
टीकाकाल	:	१८६६ संवत्
स्थान	:	विहार
पृष्ठ संख्या	:	311
आकार	:	35 x 18.5 स०म० लिखित : 28 x 12 स०म०
सामान्य विवरण	:	दुर्लभ सम्पूर्ण किन्तु पृष्ठ–पृष्ठ हुई यह कृति बड़े आकर्षक ढंग से सुन्दर लिखाई में लिखी गई है। पृष्ठों को रंगदार हाशिये से सुसज्जित किया गया है । प्रति पृष्ठ 11 से 13 पंक्तियाँ हैं। कृति को जिल्द में बांधकर सुरक्षित कर लेना चाहिए ।
विशेष विवरण	:	श्रीमद्भागवत् गीता के अठारह अध्यायों की टीका बड़ी सुंदर भाषा में सुन्दर ढंग से की गई है ।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। उों नमः श्री सच्चिदानंद नरहरि गुरुमूर्तये।। नरनारायण शेषचतः सन् व्यास पर धृतराष्ट्र संजय कू सर नारद सवहूँ ।।
अन्त	:	मतिः निक्षय है । ताही ते मैते तेरे कूँ राज्य नहीं प्रापत होवेगा पेस कहा।। ७८ ।। इति श्री भाषा गीता सारे अष्टदशोध्यायः ।। १८ ।। संवत् १८६६

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 874
शीर्षक	:	श्रीमद्भागवत पुराण
पृष्ठ संख्या	:	404
आकार	:	23 x 33.5 स०म० लिखित : 24.5 x 16 स०म०
सामान्य विवरण	:	गत्ते कपड़े में सजिल्द श्रीमद्भागवत पुराण के लिए काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। हर स्कन्ध की पृष्ठ संख्या अलग–अलग है। दो लेखकों की लिखाई है आगे चार खाली पृष्ठ हैं पीछे दो । प्रति पृष्ठ 20 पंक्तियाँ हैं। दोनों तरफ लाल स्याही से हाशिया खींचा है।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत ग्रंथ में श्रीमद्भागवत् के प्रथम सात स्कंधों का वर्णन है। हर स्कन्ध में निजी अध्याय हैं प्रत्येक नये स्कन्ध को नये पृष्ठ एवं नवीन पृष्ठ संख्या से आरंभ किया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों श्रीमते रामानुजाय नमः ।। सोरठा।। जासु चरण मकरंद परम हंस पीवहि मुदा ।। मेटहि भवरूजद्वंदवं दोसोइ रघुवीर पद ।। १ ।।

अन्त : राम कृपा जेहि होइ तासु श्रवण हरि गुण परै।। अपरन चाहैं कोई विनु हरि कृपा कटाक्षतै।। २६ ।। इति ।। श्री भागवते महापुराणे सप्तम स्कंधे भाषा निवद्धे प्रहलादानुचरिते युधिष्ठिर नारद संवादे पंचदशो अध्याय।। १५ ।। सप्तम स्कंध संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 875

शीर्षक : संत वाणी

पृष्ठ संख्या : 840

आकार : 18 x 26 स०मे० लिखित : 14 x 19 स०मे०

सामान्य विवरण : प्रस्तुत ग्रंथ में काली लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। ग्रंथ का आरंभ दसवें पृष्ठ से होता है। ग्रंथ सूची से पूर्व आठ खाली पृष्ठ हैं और अन्त में भी एक पृष्ठ खाली है और उस पृष्ठ के दूसरी ओर किसी दूसरी लिखाई में कुछ पंक्तियाँ लिखी गई हैं। प्रति पृष्ठ 25 पंक्तियाँ अंकित हैं। पृष्ठ के दोनों ओर काली स्याही का हाशिया बना है।

विशेष विवरण : प्रस्तुत ग्रंथ में संत कबीर, रैदास, दादू, गरीबदास आदि एक सौ बाईस संतों की वाणी संग्रहीत है जो भिन्न–भिन्न रागों में बद्ध है।

आरम्भ : मरै सिष साषासिरिलाल।। १३५ ।। सूरिज सनख आरसी पाव कीया प्रकास।। दादू सांई साध विचि। सह जैंनि पजैंदास।।

अन्त : चक रि रचांमि श्री राम श्रुनि।। दूरि मोते रहीम भक्ति तेरी।। दास परमानंद हाल अैसे भये।। एक सतसंगबिन बूड बेरी।। ३ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 संग्रह (क)

शीर्षक : श्री नासकेत व्याष्यांने

रचनाकाल : संवत् १७६७

पृष्ठ संख्या : 72

आकार : 12 x 18.5 स०मे० लिखित : 9.5 x 16 स०मे०

सामान्य विवरण : संग्रह की पहली रचना । गत्ते कपड़े में बंधी होने पर भी कई पृष्ठ निकले हुए हैं पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं। प्रति पृष्ठ 18 पंक्तियाँ हैं ।

विशेष विवरण : 17 अध्यायों की इस कृति में संवादात्मक शैली में ऋषि नासकेत और यमराज अर्थात् पिता – पुत्र के विचारों का वर्णन है ।

आरम्भ : अथ ग्रंथ सुष सबद लिषत ।। सीस न वांक्र गुरचरन ।। फुनि बिन नृसिंघ सास ।। निराकार की अन्त गति के ।।

अन्त : इति श्री नासकेत व्याष्यांने।। पिता पुत्र रिष्य संवादे।। धरमाधरम बिचारणे।। नाम सप्तदसो ध्याय।। १३१ ।। संवत् १७१७ ।। वरषे सांमण बदी ६ ।। के दिन ग्रंथ संपूरणं तया ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 (ख)

शीर्षक : प्रहिलाद चरित्र

पृष्ठ संख्या : 72 – 96

आकार : 12 x 18.5 स०मे० लिखित : 9.5 x 16 स०मे०

सामान्य विवरण : ग्रंथ की दूसरी रचना। पृष्ठ बीच में से उखड़े हैं।

विशेष विवरण : प्रहलादचरित्र नामक इस कृति में नारद एवं सनकादि के संवाद के द्वारा प्रहलाद् की विष्णु भक्ति पर प्रकाश डाला है ।

आरम्भ : ग्रंथ प्रहिला चारित्र।। चौपाई।। प्रथमैं सीस हरि गुर को नांऊं ।। कंहू कथा जो आग्या पांऊं।।

अन्त : इति प्रहिलाद चरित्र भक्ति जोग नांम प्रताप ग्रंथ संपूरण समापत।। चौपाई।। १५६ ।। दोहा २६ छंद २७ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 (ग)
शीर्षक : जैमल जी का ग्रंथ
पृष्ठ संख्या : 33
आकार : 12 x 18.5 स०म० लिखित 9.5 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की तीसरी रचना । 33 पृष्ठों की कृति। काली लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना 'जैमल जी का ग्रंथ' में 314 दोहों मे संत स्वभाव एवं ईश्वर पर चर्चा की गई है ।
आरम्भ :– सुनऊ अजव नुप देस फकीरा।। राजमांल हिये गहै जहीरी।। आवलिपक पुसंगु सुनाउ।। गुर पीरा। नेमिह पे जे पाऊ।। १ ।।
अन्त : ऐक साध अकेला जैमल अग छाडै नहीं। दादू का चेला।। ३१६ ।। इति जैमल जी का ग्रंथ संपूरणं समापतहं।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 (घ)
शीर्षक : जागति बिङदावल
लेखक : दत्तुमल
पृष्ठ संख्या : 5
आकार : 12 x 18.5 स०म० लिखित : 9.5 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की चौथी रचना। विवरण पूर्ववत्।
विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति में जगत् वासियों में व्याप्त रोग, शोक का वर्णन करके उनके निवारण का उपाय एकमात्र ईश्वर को बताया है।
आरम्भ : जोई जोई देषूं सोई सोई रोगी रोग रहत मेरा सतगुरु जोगी।। टेक ।।
अन्त : दास सरन की औट लंई है। विड.दत्रुमल रौजांन।। १५ ।। इति जगति बिड.दावला संपूरण भवेत।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 (ड.)
शीर्षक : बालमीक ग्रंथ
पृष्ठ संख्या : 5
आकार : 12 x 18.5 स०म० लिखित : 9.5 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : 23 पदों की इस कृति में महर्षि व्यास द्वारा श्रवण किये गये बालमीकि ग्रंथ के नैतिक पक्ष पर विचार किया गया है ।
आरम्भ : अथं बालमीक ग्रंथ लिषत।। संतनि की महिमां कही।। पारथ कौ संम काइ।। कहत गोपाल हरी।। टेक।।
अन्त : कथा सुनाई व्यासं तन संतनि के चरन कवल परि।। सीस नवावत दास।। २३ ।। इति बालंमीक ग्रंथ संपूरण ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 (च)
शीर्षक : ध्रुव चरित
आकार : 12 x 18.5 स०म० लिखित : 9.5 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : ध्रुव चरित नामक इस रचना में ध्रुव के भक्ति योग पर संवादात्मक शैली में प्रकाश डाला है।
आरम्भ : भगवानो बाच।। जती निद्यां सत्ता निंद्या।। निंद्या चमुपकारकं।। तेन पाये श्रुणु पारथ।।
अन्त : मै अज्ञां नमति आपंना।। कलपि कहँ कछू बात।। बक सतसु अथ राधकं।। जन गोपाल पितमात।। इति श्री धूं चरित्र ग्रंथ भगति जोग नांम प्रतासंपूरणं।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 (छ)
शीर्षक : श्री सुषसंमांद ग्रंथ
पृष्ठ संख्या : 20

आकार : 12 x 18.5 स०म० लिखित : 9.5 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् । ग्रंथ की इस रचना का प्रथम पृष्ठ नहीं है। रचना का आरंभ पद संख्या 10 से होता है।
विशेष विवरण : श्री सुकसंवाद नामक यह रचना संग्रह की छठी कृति है जिसमें 207 पदों में देवताओं और शुकदेव का संवाद ईश्वरीय बोध का ज्ञान देता है।
आरम्भ : परसे सुरसे रहै पराइन।। कहै औत क्रिस्नदी पाइन।। १० ।।
अन्त : बक ना श्रुत्वान जांनांमि।। ब्रिथा तसि जीवंन।। २०७ ।। इती श्री सुषसमांद ग्रंथ संपूरण सुत कल्याण।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 (ज)
शीर्षक : मोहमरदराजा की कथा
पृष्ठ संख्या : 11
आकार : 12 x 18.5 स०म० लिखित : 9.5 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : मोहमरद राजा की कथा नामक इस रचना में कवि ने गुरु गोबिन्द सिंह की आज्ञा से ऋषि संत समागम में उसका वर्णन किया है। रचना में 110 पद हैं ।
आरम्भ : अथ मोह मरदराजा की कथा लिषतं।। गुर गोबिंद की आग्या पांऊं।। संत समागम बरणि सुणांऊं।।
अन्त : संत समागम कथा सुणाऊं ।। मोह मरद राजा की कथा नित प्रत गावै जन जगनाथा।। ११० ।। मोह मरद राजा की कथा संपूरण भंवतं ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 (झ)
शीर्षक : ग्रन्थ बिप्रबोध
पृष्ठ संख्या : 4
आकार : 12 x 18.5 स०म० लिखित : 9.5 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : बिप्र बोध नामक यह रचना संग्रह की नौवीं रचना है जिसमें कवि ने 39 दोहों में ब्राह्मण के कर्त्तव्यों व उनकी विनम्रता का वर्णन किया है ।
आरम्भ : गरंथ बिप्र बोध लिषत।। बिप्र हसि करि बोलइ।। हम तै बडा न कोइ।। सुंदर तप स्वाबऊ करै तुऊ सरल रहोइ।। १ ।।
अन्त : बालमीक की ताकही।। कहानुति मति रैदास।। कहै षेमबांझन भयौ।। सु नर लगति प्रकास।। ३६ ।। इति बिप्र बोध ग्रंथ संपूरण भवेत।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 (ञ)
शीर्षक : लघुता नामा
पृष्ठ संख्या : 4
आकार : 12 x 18.5 स०म० लिखित : 9.5 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में व्यक्ति को विनम्रता से रहने का संदेश दिया है क्योंकि लघुता ही व्यक्ति को श्रेष्ठ बनाती है। इसमें 44 दोहे हैं।
आरम्भ : अथ लघुता नामा ग्रंथ लिषतः।। लघुता बड़ी लहै जे कोई।। रामन क्रिया थै पावै सोई।। जहां जहां लघुता कै आई।। तहां तहां सुनऊ बड़ाई।।
अन्त : पऊ लघुतानांमां बांचतां।। सुरां तां नुप जै ग्यान ।। कबहू गरब न कीजिये पावै पद नृ बांण।। ४४।। इति लघुता नामां ग्रंथ संपूर्ण समाप्तः।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 (ट)
शीर्षक : गुन राजा कीरति नामौ
पृष्ठ संख्या : 6
आकार : 12 x 18.5 स०म० लिखित : 9.5 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।

विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में 60 दोहों में राजा एवं कोढ़ी के संवाद के माध्यम से राजा कीरति के गुणों पर प्रकाश डाला गया है।

आरम्भ : गुन राजा कीरत नामा ग्रंथ लिषतं।। दोहा।। एक सुष भुगतै सुरग के।। दुष नरक निमांहि जो जैसो बीरज बोवे।। सो तैसे फल षाइ।। १ ।।

अन्त : जब लग जीवै तब लग वेती ।। आष्यां देषै कांनां सुणैं।। जैसा बाहै तैसा लु रौ ।। ६० ।। इती ग्रंथ गुनराजा कीरति नामौ संपूरण ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 (ठ)

शीर्षक : हरिचंदसत

पृष्ठ संख्या : 21

आकार : 12 x 18.5 स०म० लिखित : 9.5 x 16 स०म०

सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।

विशेष विवरण : सत्यवादी हरिश्चन्द्र पर आधारित इस रचना के 270 दोहों के पश्चात् एक पृष्ठ नहीं है वहीं पर कथा की समाप्ति प्रतीत होती है । इस रचना में राजा हरिचंद्र की सत्यवादिता पर एवं उसके संघर्ष पर प्रकाश डाला गया है ।

आरम्भ : हरिचंद सत ग्रंथ भाषा लिषतं।। चौपाई।। अबिगत आलष अनाहद भारी।। नृपति नषपति महासुधसारी।। नाच नगं वगावक कहा कहिये।। आगम अंगाध साध संगि लहिये ।। १।।

अन्त : रानी ऊबाच।। मन मैं कह्यौ मृत है आई ...... (आगे का पृष्ठ गायब है) ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 932 (ड)

शीर्षक : कर्मधर्म

रचनाकाल : संवत् १७६७

आकार : 12 x 18.5 स०म० लिखित : 9.5 x 16 स०म०

विषेष विवरण : कर्म धर्म नामक यह रचना संग्रह की अन्तिम कृति है जिसमें 96 पद हैं। इसमें कर्म धर्म के संवाद के द्वारा अच्छे कर्मों के सद् परिणाम एवं धर्म पर विचार किया गया है। रचना का पहला पृष्ठ गायब है।

आरम्भ : नै कौं चाहै।। मन परधानं राजा कौ बाहै।। धर्मपुत्र रष्या कौं दौरै।। ताकौं कर्म न देई गौरै।। १५ ।।

अन्त : वो नमो प्रमेसुर वो नमो श्रवसाधूनांअं।। वो नमो सिध साधिकं ।। ६६ कर्म धर्म नामं ग्रंथ संपूरण भवा।। संवत् १७६७ ।। पोह बदी ८ बार सोमवार कै दिन पोथी संपूरणं भई रांम रांम रामरां राग गौड़ी।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 933

शीर्षक : रुकमनि मंगल लीला विनोद

लेखक : नवीन कवि वृंदावन

रचनाकाल : संवत् १८६३

पृष्ठ संख्या : 83

आकार : 14 x 25 स०म० लिखित : 12 x 22 स०म०

सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े में बंधी यह रचना लाल तथा काली स्याही से लिखी गई है। हाशिया काली स्याही से खींचा गया है। अन्तिम दो–तीन पृष्ठों में केवल काली स्याही का प्रयोग किया गया है। कृति पर पृष्ठ अंकित नहीं है और कृति का आरंभ कवि ने पद नं. 497 से किया है। कीड़े द्वारा अन्दर से पृष्ठों के किनारे जर्जर कर दिए गये हैं।

विशेष विवरण : 42 अध्यायों की इस रचना में कवि ने रुक्मिणी–कृष्ण के विवाह का चित्रण किया है। कृष्ण द्वारा रुक्मिणी का हरण कर द्वारका में दोनों के विधिवत् विवाह का प्रसंग है फिर अंत में ग्रहण के अवसर पर सभी कृष्ण की स्तुति करते हैं। रचना के अंत के तीन पृष्ठों में उपदेशात्मक दोहे संकलित हैं जिनमें लाल स्याही का प्रयोग नहीं किया है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। श्री रुकमनि मंगल कथा अनुपं।। केवल मंगल को हे सरूपं।। स्याम सनेही कथा बनाई।। पठे सुने सुष संपति दाई।।

अन्त : मधु मास राका ससि होई।। ग्रंथ संपूरन कियो है योई।। ईती श्री लीला विनोद ग्रंथे पुन द्वारिका प्रवेस वैतालीसमो ध्याय सुभ श्री।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 934 संग्रह (क)
शीर्षक : चण्डी चरित्र उक्ति विलास
लेखक : गुरु गोबिंद सिंह
लिपिकार : राजा राम पंडित कश्मीरी
लिपिकाल : १८८० संवत्
पृष्ठ संख्या : 65
आकार : 16 x 26 स०म० लिखित : 10 x 17 स०म०
सामान्य विवरण : बिना जिल्द के यह 65 पृष्ठ की कृति है। पहला पृष्ठ कीड़े द्वारा खाया गया है पृष्ठ 1से 40 तक 'चण्डी चरित्र उक्ति विलास' नामक रचना है और फिर 41–65 तक चण्डी चरित्र नाटक संग्रहीत है। आरम्भ में तथा अन्त में चार पृष्ठ खाली जोड़े गये हैं। लेखक ने काली तथा लाल स्याही का प्रयोग किया है। प्रति पृष्ठ 14 पंक्तियाँ हैं।
विशेष विवरण : प्रस्तुत काव्य रचना में कवि ने आरम्भ में ईश वंदना करके बाद में उक्ति विलास लिखा गया है जिसमें चण्डी के शौर्य का वर्णन तथा चण्डी द्वारा मधुकैटभ, महिषासुर, धूमसैन, चंडमुंड, रक्तबीज, निसुंभ तथा सुंभ आदि राक्षसों के वध का वर्णन है। कृति में आठ अध्याय हैं।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः।। उों मंगल भगवान्।। विस्नु मंगलं गरुड़ध्वज।। मंगलं पुंडरिकाक्ष मंगलायज तनो हरी।।
अन्त : ग्रंथ सतसया कोकस्गोजासम अवर न कोइ।। जिह नमित्त कवि ने कह्यो चंडिका सोइ।। ३१ ।। इति मारकंडे पुराणे श्री चंडी चरित्र उकत विलास अष्टमोध्याइ।। ८।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 934 (ख)
शीर्षक : चण्डी चरित्र नाटक
लेखक : गुरु गोबिंद सिंह,
लिपिकार : राजा राम पंडित कश्मीरी
लिपिकाल : १८८० संवत्
पृष्ठ संख्या : 40–65
आकार : 16 x 26 स०म० लिखित : 10 x 17 स०म०
सामान्य विवरण : बिना जिल्द की यह कृति 'चण्डी चरित्र नाटक' लाल तथा काली स्याही में विभिन्न छंदों में लिखी गई है। प्रति पृष्ठ 14 पंक्तियाँ हैं। अंत में लिपिकार ने अपना तथा समय का संकेत दिया है।
विशेष विवरण : आठ अध्यायों की इस कृति में पहले चण्डी द्वारा अनेक वीरों, जैसे धूम्रकेतु, रक्तबीज, निशुंभ, शुंभ आदि के वध का वर्णन है और फिर चण्डी की स्तुति की गई है।
आरम्भ : अथ चंडी चरित्र नाटक लिष्यते।। नराज छंद।। महिष्य दैतसूर यंवद्योसलोह पृग्यं।। सदैव राज जीतायं।।
अन्त : इति श्री मारकंडे पुराणे श्री चंडी चरित्र नाटक उसतति वरननं नामअष्टमोध्याइ।। ८ ।। सप्तसत का संपूरणं। संवत् ।। १८८० ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 994 संग्रह (क)
शीर्षक : दादूदयाल की साषी
पृष्ठ संख्या : 1–142–241
आकार : 19 x 26 स०म० लिखित : 12 x 21 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े में काफी पुरानी हुई यह कृति संग्रह की पहली रचना है। काली लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। प्रति पृष्ठ 19 पंक्तियाँ हैं।
विशेष विवरण : इस रचना में दादू कृत 2800 साखियाँ हैं जो कि 38 अंगों जैसे गुरदेव को अंग, सुमिरण को अंग, परचा, पतिव्रता, मन, विचार को अंग आदि विषयों पर हैं। यह साखियाँ विभिन्न रागों में रागबद्ध हैं।
आरम्भ : प्राणपति सति।। दादू गुरदेव प्रसादात ।। प्रथमे साषिमाडा।। गुरदेव का अंग।। दादू न मोन मो निरंजन।। निमसकार गुरदेवतह।।
अन्त : कबहू न बिहडै सोलला। साधु डिढमत होइ दादू हीए एकरस।। बांधि गावडी सोइ अंग।। १२ ।। साषी।। १७०० ।। रचा भी दादू दयाल जी की साषी संपूर्ण।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 994 (ख)
शीर्षक	:	कबीर जी की साषी
पृष्ठ संख्या	:	242–372
आकार	:	19 x 26 स०म० लिखित : 12 x 21 स०म०
सामान्य विवरण	:	संग्रह की दूसरी रचना
विशेष विवरण	:	कबीर वाणी के आरम्भ में पहले दादूवाणी के समान ही 60 अंगों में 810 साखियाँ हैं। इन अंगों में गुरदेव, पतिव्रता, मन, साच को अंग आदि है। इसी प्रकार विभिन्न रागों में कबीर की साखियां, पद, रमैणी का वर्णन है। रचना में कुल इसमें 810 साखियां, 384 पद तथा 8 रमैणियां हैं।
आरम्भ	:	कबीर जी की साषी ।। गुरदेव कौ अंग।। कबीर सतगुर संचान का सगा। सोधी सई न दाति ।। हरि जीसवान को हिनू ।। हरिजन सईं न जाति।। १ ।।
अन्त	:	तावत गति बिसवास बिन।। कटै न ससैं सूल।। कहै कबीर हरि लगति बिन।। मुकति नहीं रे मूल।। ४ ।। ७ ।। साषी ।। ८१० ।। पद ।। ३८४ ।। रमैणी ।। ७ ।। कबीर जी का क्रित पूर्ण।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 994 (ग)
शीर्षक	:	गरीबदास का अनतै प्रमोघ ग्रंथ
पृष्ठ संख्या	:	373 – 382
आकार	:	19 x 26 स०म० लिखित : 12 x 21 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	इसमें संत वाणी के अंतर्गत गरीब दास जी के पद एवं उनके प्रमोद ग्रंथ का वर्णन है।
आरम्भ	:	गरीबदास जी का अनतै प्रमोघ ग्रंथ माडग।। ओऊ प्रण ऊंगुर के याइ।। मति बुधि ग्यांन देऊ समकाइ।।
अन्त	:	नुझ सौं करौ पुकारा।। गरीब दास कै नुम ही जावनि।। सनमुष देदीदारा।। ३ ।। १० ।। गरीबदास जी के पद।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 994 (घ)
शीर्षक	:	नामदेव जी का ग्रंथ
संग्रहकर्त्ता	:	बाबा केवलदास
रचनाकाल	:	संवत् १७८४
पृष्ठ संख्या	:	382–402
आकार	:	19 x 26 स०म० लिखित : 12 x 21 स०म०
सामान्य विवरण	:	संग्रह की चौथी रचना।
विशेष विवरण	:	इस संग्रह में नामदेव के ग्रंथ की चार साखियां व 122 पद वर्णित हैं।
आरम्भ	:	नामदेव जी का ग्रंथ माडया।। पद राग टोडी।। हरि नांउ हीरा हरि नाउं हीरा।। हरि नाउं लेत मिटै सब पीरा।। टेक।।
अन्त	:	ढिग ढिग ढूंढै अघ ज्यू।। चीन्है नांही संत।। नाम कहै कह पाइये।। बिन लगतां लगवत।। ४ ।। साषी ।। ४ ।। पद ।। १२२ ।। नामदेव जी का ग्रंथ संपूर्ण।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 994 (ङ)
शीर्षक	:	रैदास जी का ग्रंथ
संग्रहकर्त्ता	:	बाबा केवलदास
रचनाकाल	:	संवत् १७८४
पृष्ठ संख्या	:	402 – 417
आकार	:	19 x 26 स०म० लिखित : 12 x 21 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	संत रैदास की वाणी अंकित है। सबद तथा साखियाँ विभिन्न रागों में गाई गई हैं।
आरम्भ	:	रैदास जी का।। पद मांडजा ।। राग रामकली।। परचै राम रमै जे कोइ।। पारसपर सेंउ बिघन न होइ।। टेक
अन्त	:	कहै रैदास मैं देष्या मांही।। सकल जोति संम संमि नांही।। ४ ।। १ ।। सबद ।। ७१ साषी ।। २ ।। रैदास जी का ग्रंथ संपूर्ण समापतह ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 994 (च)
शीर्षक : जन गोपाल जी के सबद
संग्रहकर्त्ता : बाबा केवलदास
रचनाकाल : संवत् १७८४
पृष्ठ संख्या : 417–430
आकार : 19 x 26 स०म० लिखित : 12 x 21 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : ग्रंथ के अंत में यह बताया गया है कि इस सब वाणी के संग्रहकार दादू दयाल का शिष्य केवलदास है। दादू के दरबार में ही यह कार्य सम्पन्न किया गया है जिसका समय संवत् 1784 है। मंगलवार पोथी सम्पूर्ण की गई। इसमें गोपाल कवि के 12 पद तथा 59 सबद हैं।
आरम्भ : दादू गुरदेव प्रसादात ।। जन गोपाल जी का सबद । । राग कल्यांण ।। हरि कौ सुजस जौन सुनत।। श्रवन तौ सांप की बबई ।। बिन हरि दरस नैनं मोरच दवा।। रसना दादर नाई।। टेक ।।
अन्त : छाडि अम्रित फल विषै षातरे।।। विद्या दास आस तजि औरै। श्री गोपाल कैरे गिराचरे।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 995
शीर्षक : श्रीभगवद्गीता
पृष्ठ संख्या : 140
आकार : 10 x 7.5 स०म० लिखित : 8 x 5 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ते में सजिल्द यह रचना काली स्याही से लिखी गई एवं स्पष्ट है। रचना की हालत ठीक है।
विशेष विवरण : अठारह अध्यायों में रचित श्रीमद्भागवत् गीता को सरल हिन्दी कविता में लिखा गया है।
आरम्भ : उों सतिगुरु प्रसादि।। श्री गणेशाय नमः।। श्री भगवद्गीता लिख्यते।। श्लोक।। धृतराष्ट्र उवाच।।
अन्त : इति श्री भगवत गीता सूपनिखत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्म अर्जुन संबादे संन्यास योगे नाम अष्टदशमो ध्याय समाप्तम् ।। १८ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1037 संग्रह (क)
शीर्षक : अनभो ज्ञान रतन
लेखक : सांईदास
पृष्ठ संख्या : 89
आकार : 12 x 16 स०म० लिखित : 8 x 13 स०म०
सामान्य विवरण : जिल्द में परन्तु खुली हुई कृति ।। काली लाल स्याही का प्रयोग। इसमें प्रति पृष्ठ 13 पंक्तियाँ है।
विशेष विवरण : रामानुज सम्प्रदाय के भक्त मुकंददास के शिष्य सांईदास ने अनुभव ज्ञानरतन को अपने गुरु की अनुकंपा से पूर्ण किया है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः। श्री रामानुज जी की संमप्रदाय में सिरोमनि श्री मुकंददास तिन के शिष्य बाबा सांई दास जी तिनका अनभो ज्ञान रतन जप लिष्यते।। श्लोक ।।
अन्त : मुक्ति न पावे जगत गुरु तटतीरथ भर्माय।। सांईदास जे प्रभ किर्पाल होय ताप तत भी मुक्ति हो जाय इत श्री ज्ञान रतन संपूर्ण शुंभं भवत।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1037 (ख)
शीर्षक : अमरदास मन अरु बुध की वार
लिपिकार : सांईदास
पृष्ठ संख्या : 90–108
आकार : 12 x 16 स०म० लिखित : 8 x 13 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् । संग्रह की दूसरी रचना।

विशेष विवरण	:	बाबा सांई दास ने राग आसा, रामकली, गुजरी आदि में गुरु अमरदास की मन और बुध की वार का वर्णन किया है।
आरम्भ	:	शवद आसा रागे।। बाबा जी निधान निध तेरे पास ।। देष्यो निगम दिष्ट निरंतरी गुरु पूछ के निर्दास।।
अन्त	:	तीरथ वर्तनेम तप संजम मत कोऊ निंदे जान।। कह सांईदास नाम की महमा होत न नाम समान।। इत अमरदास मन अरु बुधकी वार ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1037 (ग)
शीर्षक	:	श्री भागवत् महापुराण
लिपिकार	:	सांईदास
पृष्ठ संख्या	:	109–159
आकार	:	12 x 16 स०म० लिखित : 8 x 13 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	इस रचना में सूरदास, नारायणदास, कबीर, राजा पीपा, नामदेव, गुरु तेग बहादुर, बाबा लाल दयाल, तुलसीदास, शुकदेव, विदुर, ब्रह्म, शिव की वाणी को विविध रागों में दिया गया है।
आरम्भ	:	कोई होय सूरा मुक्ति षेतजीते ।। जनम अरु मर्न को बांध रष्या करे ब्रह्म की जोत मिल जायवीते ।।
अन्त	:	भृगुरिष केथे केस जिसी विधि करि ले सोई उपाउ ।। जाय समापत करहु भाग ले लालदास गुन गाउ ।। इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्थ संकधे षष्टमोध्याय ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1037 (घ)
शीर्षक	:	ज्ञान लहर
लेखक	:	मिश्र नंदलाल
पृष्ठ संख्या	:	53
आकार	:	12 x 16 स०म० लिखित : 8 x 13 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	गुरु अष्टावक्र, अर्जुन, वाशिष्ट के संवादों को सम्मुख रखते हुए ज्ञानलहर नामक कृति की रचना की गई है ।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशायं नमः ।। नमो प्रेम परमातम स्वामी ।। घट घट वसे सु अंतरजामी।। पूरन पुरुष निरंतर देवा ।। हम्ह नही जानी तुमरी सेवा।।
अन्त	:	जोय ज्ञास ज्ञान का धैरं।। सोई इस पोथी का परैं ।। इति श्री सर्वविद्यानिधानं मिश्र नंद लाल विरचते ज्ञान लहर प्रकर्ण एकादस समाप्तम ।। ११।। शुभमस्त ।। लिषतं कर्मनारायण।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1037 (ङ.)
शीर्षक	:	श्री भागवते महांपुराणे दसम स्कंध
लेखक	:	कृहमदास
पृष्ठ संख्या	:	15
आकार	:	12 x 16 स०म० लिखित : 8 x 13 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् । संग्रह की पांचवी रचना ।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में श्री भागवत महापुराणे के दशम स्कंध की कृष्णलीला का गायन कवि कृष्णदास ने किया है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः श्री कृस्माय पर्मात्मा नमः। उों नमों पर्मात्म देवा श्री पुरान पुरषोत्म जी।। नरनरान निवान शांत पदनमो नाथ पुरशोतम जी।।
अन्त	:	इत श्री भागवते महापुराने दसम स्कंधे प्रेम रसे।। गावें सुनें गुन कृहम के तिन संतन के भाग जगे।। इह लील्हा कोई सुने सुनाय प्रेम भक्ति माधो की पावे । कृहमदास की यही जाचना प्रेम भक्ति वधती जावे । दसम स्कंध कृत कृहमदास संमपूरन।। लषतं कर्मनारायणन। शुभम सत सर्व जगताम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1038 संग्रह (क)
शीर्षक : नारायण स्रोत
लेखक : श्री स्वामी ज्वालानंद
रचनाकाल : संवत् १६५०
पृष्ठ संख्या : 58
आकार : 4.5 x 4 स०म० लिखित : 4 x 3 स०म०
सामान्य विवरण : 58 पृष्ठों की यह कृति संग्रह की पहली कृति है। प्रस्तुत संग्रह गत्ते की जिल्द में बंधा है । प्रति पृष्ठ पर ज्योतिष सम्बंधी फलादेश अंकित हैं । कवि ने काली तथा लाल स्याही का प्रयोग किया है। पृष्ठों के हाशिये भी बनाये गये हैं । पानी लगने के प्रभाव से कहीं–कहीं शब्द विकृत हो गये हैं तो कहीं उनकी स्याही भी उखड़ गयी है ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति 'नारायण स्रोत' में कवि श्री स्वामी ज्वाला नंद ने अठारह अध्यायों में नारायण भगवान की सर्वपक्षीय उपासना के मंत्र स्रोत रूप में गाये हैं । अंत में कवि ने रचना काल एवं दिन मास का भी विस्तृत वर्णन किया है ।
आरम्भ : उों श्री सतगुरु चरण कमलेभ्यो नमः।। अथ श्रीस्वामी ज्वाला नंद जी कृत नारायण स्रोत लिख्यते ।।
अन्त : उनी से पंचास मा पोष मास रवीवार ।। जन तुलसीया कूं लिखी अर्थ विचार विचार ।। इती श्री स्वामी ज्वाला नंद जी कृत्य नारायण स्रोत संपूर्ण संपातं ।। १ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1038 (ख)
शीर्षक : राजयोग
लेखक : तुलसीदास
रचनाकाल : विक्रमी संवत् १८५०
पृष्ठ संख्या : 37
आकार : 4.5 x 4 स०म० लिखित : 4 x 3 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की यह दूसरी रचना है। प्रति पृष्ठ 7 पंक्तियाँ लिखी गई हैं । लेखक ने काली और लाल स्याही का प्रयोग किया है । पानी के प्रभाव से भीगनेके कारण कहीं–कहीं स्याही फैल गई है तो कहीं पृष्ठ जुड़ जाने के कारण स्याही उखड़ भी गई है ।
विशेष विवरण : 37 पृष्ठों की यह कृति राजयोग स्वामी ज्वालानंद जी के शिष्य जवाहर राम उनके शिष्य तुलसीदास द्वारा रचित है। कवि ने जातक की कुंडली में पड़ने वाले राजयोग का प्रभाव और उसके लक्षणों का वर्णन किया है । सर्वप्रथम उद्धव को अर्जुन ने भगवान कृष्ण का राजयोग सुनाया था ।
आरम्भ : उों श्री सद्गुरु चरण कमलेभ्यो नमः अथ श्री तुलसीदास जी कृत्य राजयोग लिख्यते ।। दोहा ।। श्री गुरु के पद कंज कों कर प्रथमे जु प्रणाम ।। राजयोग विध पुन कहुं जाकर होय कल्याण ।।
अन्त : तुलसी जिस पर गुरु कृपा करे परे पहचान ।। इती श्री स्वामी ज्वालानंद जी के सिख स्वामी ज्वाहर राम जि तिन के सिष तुलसीदास जी कृत्य राजयोग संर्पूर्ण ।। 1 ।। १६५० महिना माघ सप्तमी सुदी संर्पूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1038 (ग)
शीर्षक : पराभक्ति योग
लेखक : तुलसीदास
पृष्ठ संख्या : 38 – 39
आकार : 12 x 10 स०म० लिखित : 9.5 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की चौथी रचना है । स्याही जुड़ जाने के कारण कई शब्दों की स्याही उखड़ गई है जिसे पढ़ना कठिन है । लेखक ने काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया है ।
विशेष विवरण : पराभक्ति योग में उद्धव ने कृष्ण से भक्ति के विषय में जो प्रश्न किया उसी का उत्तर देते हुए कृष्ण ने पराभक्ति का वर्णन किया है ।
आरम्भ : अथ पराभक्ति योग प्रकर्ण लिख्यते ।। दोहा ।। उद्धव ने श्रीकृष्म सूं प्रहप किया ते भांत ।। भक्त जु अपणो आप कूं केसें जाने नाथ ।।
अन्त : अथ पराभक्ति स्वरूप वर्णनं लिख्यते ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1038 (घ)
शीर्षक : भक्ति लक्षण
लेखक : तुलसीदास
पृष्ठ संख्या : 40–43
आकार : 12 x 10 स०म० लिखित : 9.5 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : भक्ति लक्षण नामक यह रचना कवि तुलसीदास कृत है । इसकी स्याही स्थान–स्थान से उखड़ी होने के कारण इसे पढ़ना कठिन है ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में श्रीकृष्ण ने उद्धव को भक्त की भक्ति के लक्षण उदाहरण सहित बताएं है ।
आरम्भ : अव में भा भक्ति कूं ओहे भक्ति ।। जा भक्ति के करत नर हो जु ब्रंह्म रूप ।।
अन्त : जन तुलसी वंदन वारे वार–वार पद दोय ।। इति भक्ति लक्षण संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1038 (ङ.)
शीर्षक : साध परिक्षा लक्षण
लेखक : तुलसीदास
पृष्ठ संख्या : 44 – 54
आकार : 12 x 10 स०म० लिखित : 9.5 x 21 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की यह पांचवीं रचना है । हर पृष्ठ पर सात पंक्तियाँ हैं। लाल काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया है । स्याही जुड़ जाने के कारण शब्दों को पढ़ना कठिन है ।
विशेष विवरण : साध परिक्षा लक्षण नामक कृति में कवि ने साधुओं के लक्षण एवं उनकी परीक्षा का वर्णन किया है ।
आरम्भ : अथ साध परिक्ष्या लक्षण वर्णते। अथ अंतर लक्षण साध के वर्णते ।
अन्त : इति साध लक्षण – वर वाग संपूर्ण समाप्तं ।। उों।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1038 (च)
शीर्षक : पंच संस्कार
लेखक : तुलसीदास
पृष्ठ संख्या : 4
आकार : 12 x 10 स०म० लिखित : 9.5 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : चार पृष्ठों की यह कृति संग्रह की अन्तिम कृति है । लेखक ने आरम्भ तथा अंत में लाल स्याही का प्रयोग किया है तथा बीच में काली स्याही लिखने के लिए तथा पूर्णविराम लाल स्याही से अंकित किए हैं ।
विशेष विवरण : 'पंच संस्कार' नामक इस रचना श्रुति स्याम वेद पर आधारित है जिसमें पन्च संस्कारों का विशद वर्णन किया है ।
आरम्भ : उों श्री राधाकृघ्माय नमः ।। अथ पंच संस्कार लिख्यते ।। श्री कृहम नामं कि सपाद मुद्रापाव नीयो ।।
अन्त : इति श्रुति स्याम वेदे षष्टभ परिक्षः तथा चाग मे पुडुं मुद्रास्त्रथा नाम माला मंत्रश्च अमीहि पंच संस्कार । परमैकांत हेतवे ।। श्री गुरुदद्यात ईती पंच संस्कार स्याम वेदे श्रुति संपूर्ण ।। ५।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1042
शीर्षक : दादू वाणी
लिपिकार : हरजी राम
लिपिकाल : संवत् १८०५
स्थान : हरलाल नगर
पृष्ठ संख्या : 117
आकार : 32 x 16 स०म० लिखित : 26 x 12 स०म०
सामान्य विवरण : पत्रांक कृति । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है । पृष्ठ के दोनों ओर लाल स्याही का हाशिया है। लिखावट सुन्दर है । प्रति पृष्ठ 16 पंक्तियाँ लिखी गयी हैं।

विशेष विवरण : दादू वाणी के सभी अंगों को लिपिबद्ध किया गया है। दादू पंथ के महंत हरजी राम जी ने इसे सम्पन्न किया ।

आरम्भ : श्रीराम जी सत्य ।। श्री स्वामी दादू जी की वाणी लिषतं ।। नमस्कार बंदनां अंग ।। श्लोक।।

अन्त : इति श्री दादू दास विरचत सतगुर प्रसादे प्रोक्त भक्ति जोगोनाम तत्वसार मत सरब साधू वुधि ज्ञान सरव साक्ष चमो धय रामंनाम सतगुरु सिख्या समस्त वाणी नाम महिमां महातम कृत संपूर्ण ।। समस्त साषी ।। १५५८ ।। सबद ४४१ ।। अंग ३२ ।। राग २७।। अंत समै की साषी ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1066

शीर्षक : रचना सेनदास

लेखक : सेनदास

पृष्ठ संख्या : 222

आकार : 14 x 10 स०म० लिखित : 11 x 6 स०म०

सामान्य विवरण : जिल्द में पर खुली हुई खंडित कृति । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग । आरंभ एवं अंत के पृष्ठ इसमें नहीं हैं। काली एवं लाल स्याही से पृष्ठ के दोनों ओर हाशिया बनाया गया है । प्रति पृष्ठ छः पंक्तियाँ हैं ।

विशेष विवरण : संत सेनदास ने दोहा एवं पउड़ी में नीति एवं भक्ति सम्बन्धी विचार दिए हैं ।

आरम्भ : यर्न हरभजन प्यास ।। जननी भर्भक्ति रावयो पेट बांध दशमास ।। पौड़ी १० हरहि र्देतै किउ विसरांही ।।

अन्त : ताते सत्त क छत्र वरन लहे ।। उम मउ मग जस हरका ।। गावे दुभ दामन ते सक्त।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1074

शीर्षक : श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध

रचनाकाल : १६८७ संवत विक्रमी

पृष्ठ संख्या : 243

आकार : 15 x 21.5 स०म० लिखित : 11 x 16.5 स०म०

सामान्य विवरण : सजिल्द । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग । कुछ पृष्ठ जर्जर होकर टूट रहे हैं जिससे रचना का अन्त पठनीय नहीं है ।।

विशेष विवरण : श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध नामक कृति में कृष्णलीला का चित्रण कवि द्वारा किया गया है । इसमें 84 अध्याय हैं ।

आरम्भ : श्री पार्श्वनाथाय नमः।। श्री कृस्माय नमः श्री गणेशाय नमः।। अथ श्री भागवत दस्म सुकंध लिष्यते ।। आदगणका चरित्र ।। विश्र पद लिष्यते ।।

अन्त : इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कन्ध सोना जल क्रीड़ा वर्णनं...........
(नोट – आगे पठनीय नहीं है।)

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1076 संग्रह (क)

शीर्षक : श्री ग्रंथ भवतारन

रचनाकाल : संवत् १६३२

पृष्ठ संख्या : 39

आकार : 15 x 10 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०

सामान्य विवरण : ग्रंथ की पहली रचना। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग। प्रति पृष्ठ सात पंक्तियाँ । लिखाई सुंदर है। हाशिया नहीं बना है।

विशेष विवरण : संत कबीर और धर्मदास का संवाद भवतारन नाम से साखी, दोहा और चौपाई में रचा गया है जिसमें संवादात्मक शैली में भव से पार जाने के उपाय एवं विधियों पर प्रकाश डाला है ।

आरम्भ : वार नहि पारा तामे अटका सब संसारा सो दरियाव कौन बिधि पावो परमपुरुष कैसे कै ध्यावौ करो भक्ति कै जोग कमावो देवदान कै तीरथ न्हावो ।।

अन्त : इति श्री ग्रंथ भवतारन सतगुर संत कबीर और धर्मदास जी का संवाद संपूर्ण समाप्ति । श्रावण सुदी १२ संम्वत १६८३ शुक्रवार।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1076 (ख)
शीर्षक : रचना कबीर
लेखक : कबीर
लिपिकाल : संवत् 1932
पृष्ठ संख्या : 39–62
आकार : 15 x 10 स०म० लिखित 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : रचना कबीर संग्रह की दूसरी रचना है । प्रति पृष्ठ सात पंक्तियाँ अंकित हैं । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है ।
विशेष विवरण : इस रचना में गुरदेव की रमैनी, गुरदेव को अंग, गुरमुख को अंग, निगुरे नर को अंग, भक्ति को अंग तथा रमैनी सम्बन्धी दोहे एवं पद हैं ।
आरम्भ : अथ गुरदेव की रमैनी । गुर सम दाता कोई न भाई मुक्ति को मारग दियौ बताई गुर बिन हृदये ज्ञान न आवै ज्यौं कस्तूरी मृग भुलावै ।
अन्त : कहै कबीर गुर दिया बताई होती गुप्त प्रगट देखलाई सत्तनाम सुमिरे जो कोई ताकौ आवागौन न होई । इति श्री रमैनी ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1077
शीर्षक : श्री भगवद् जी का टीका
पृष्ठ संख्या : 362
आकार : 25 x 16 स०म० लिखित : 16 x 10 स०म०
सामान्य विवरण : सजिल्द गत्ता कपड़े सहित । काली स्याही का प्रयोग, बिना हाशिये के प्रति पृष्ठ 16 पंक्तियां लिखी गई हैं ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत हस्तलिखित पोथी श्रीमद्भगवद्गीता जी का टीका में कुल पृष्ठ 362 हैं जिनमें से पृष्ठ 118 खाली है । पृष्ठ पीले, विकृत एवं जर्जर हैं आरम्भ तथा अन्त में चार–चार पृष्ठ खाली हैं । कृति में कुल 18 अध्याय हैं सभी अध्यायों का महात्म्य भी दिया गया है । प्रत्येक अध्याय समाप्ति की सूचना लेखक ने अध्याय संख्या के साथ दी है।
आरम्भ : ऊँ श्री गणेशाय नमः । ऊँ अस्य श्री भगवद् गीता माला मंत्रस्य श्री भगवद् वेदव्यासम् ऋषि ।
अन्त : इति श्री गीता महात्म्ये फलं सम्पूर्णं शुभम् अस्तु सर्व जगतो । नमो भगवद वासुदेवाय ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1078
शीर्षक : राघव पाण्डवीय प्रकाश
लेखक : श्री शशिधर
पृष्ठ संख्या : 378
आकार : 14 x 23 स०म० लिखित : 11 x 17 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ता जिल्द में बंधा प्रस्तुत ग्रंथ 378 पृष्ठों का है । लेखक श्री शशिधर ने काली स्याही का प्रयोग किया है । कृति में आए श्लोकों को संतरी पैंसिल से दर्शाया गया है । प्रति पृष्ठ 16 पंक्तियाँ अंकित हैं ।
विशेष विवरण : राघव पाण्डवीय प्रकाश नामक यह महाकाव्य तेरह अध्यायों में लिखा गया है । हर अध्याय में श्लोकों की संख्या अंकित है । इसमें युधिष्ठिर आदि पांडवों एवं राम की कथा का वर्णन है ।
आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः उों नमो गुरवे सरस्वती नूपाय उों स्वाधिष्ठानां ब्रजरजः युज्जपिज्जर मूर्तये । इच्छायीन जगत् सृष्टि कर्मणे ब्रह्मणे नमः ।।
अन्त : उों श्री रामः शरणं समस्त जगतांरामं विना का गती रामेण प्रतिहम्पते कलिमलं रामाय कार्य नमः रामान्नस्यतिकाल भीम भुजगो रामस्य विश्रवं वशे रामे भक्ति रखष्ठिता भवतुम राम त्वमेवाश्रयः।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1079
शीर्षक : कक्षपुरे कक्षपुरी
लेखक : सिद्धनागार्जुन
पृष्ठ संख्या : 250

आकार : 15 x 12 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : सजिल्द । सुन्दर लिखावट । लाल एवं काली स्याही का प्रयोग । प्रति पृष्ठ सात पंक्तियाँ ।
विशेष विवरण : सिद्ध नागार्जुन द्वारा रचित तंत्र से सम्बन्धित इस रचना को तेइस अध्यायों में सम्पन्न किया गया है ।
आरम्भ : ओं श्री गणेशाय नमः।। श्री गुरवे नमः यः शांतः परमान्वयः परवशी कालांत को ज्ञान वान्ध्यातीत मनादि नित्य निचयाः संकल्प संकोचकः।।
अन्त : इति श्री सिद्ध नागार्जुन विरचिते कक्षपुरे कक्षपुरी सांगोंपांग माधनं नाम त्रयोविशः पटलः।। २३ ।। ओं तत्सदोम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1130
शीर्षक : श्री गीता भाष्य
भाष्यकार : श्री श्रद्धानंद
पृष्ठ संख्या : प्रति अध्याय की अलग पृष्ठ संख्या
आकार : 34 x 19 स०म० लिखित : 26 x 15 स०म०
सामान्य विवरण : जिल्द रहित । संतरीरंग का हाशिया । काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया गया है । प्रति पृष्ठ 18 से 21 पंक्तियां हैं ।
विशेष विवरण : श्रीमद्‌भगवद् गीता का भाष्य परिव्राजकाचार्य श्री श्रद्धानंद द्वारा विरचित है । गीता के अठारह अध्यायों का वर्णन इसमें किया गया है ।
आरम्भ : ओं श्री गणेशाय नमः।। दृष्टिमयि विशिष्टार्थाकृपा पीयूषवर्षिणी ।। हेरंव देहि प्रत्यूहक्ष्वे व्यूह निवारिंणी । १।
अन्त : इति श्री मत्यपरमहंस परिव्राजकाचार्य श्री श्रद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंद ज्ञानविरचिते श्री गीता भाष्य विवेचने अष्टादशोध्यायः ।। १८ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1131 संग्रह
शीर्षक : स्तोत्र रचना
लेखक : शंकराचार्य
पृष्ठ संख्या : हर स्तोत्र की अपनी पृष्ठ संख्या हैं।
आकार : 15 x 12 स०म० लिखित : 10 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : प्रस्तुत रचना में काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है । पृष्ठ कीड़े द्वारा जर्जर कर दिये गये हैं। जिल्द में भी कृति खुली हुई है प्रति पृष्ठ सात पंक्तियाँ हैं । हर स्तोत्र के पश्चात् एक खाली पृष्ठ है फिर दूसरा स्तोत्र आरम्भ होता है । कुछ स्तोत्र दूसरे आचार्यों के द्वारा भी लिखे गये हैं ।
विशेष विवरण : स्तोत्र रचना के अन्तर्गत गणपति भुंजगप्रयात स्तोत्र, श्री गणपति पंचरत्न स्तोत्रं, नवग्रह स्तोत्र, अपराध सौदर्स्तोत्र, श्री विस्मुर्सहस्रनाम स्तोत्र, अन्नपूर्णा स्तोत्र तथा ज्वालमुखी स्तोत्र आदि दस स्तोत्रों का वर्णन है ।
आरम्भ : उों श्री गणेषाय नमः।। उों उमा गगजंकर्ण वक्रं गणेशं भुजा कंकणं शोभितं धूम्र केतुं।।
अन्त : दशार्घा ओत्थिता ज्वाला दिग्.........................
इति श्री ज्वालामुखी नमोस्तुते स्तोत्रं संपूर्णम् ।। श्रुभम।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1132
शीर्षक : तंत्र–पत्र
पृष्ठ संख्या : 23–43
आकार : 23 x 11 स०म० लिखित : 15 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : यह कृति पृष्ठ 23 से 43 तक है । काली एवं लाली स्याही का प्रयोग हुआ है । कुछ पृष्ठ कीड़े द्वारा जर्जर कर दिये गए हैं । प्रति पृष्ठ 7 पंक्तियाँ हैं ।
विशेष विवरण : बाहर जिल्द पर तंत्र पत्र यह नाम दिया गया है कृति स्वरांत स्त्रीलिंग एवं स्वरांत पुल्लिंग विषय से सम्बन्धित है । अतः व्याकरण सम्बन्धी यह कृति, अधूरी है पृष्ठ 23 से 43 तक चलती है। पृष्ठों के किनारों पर भी लिखा है । पृष्ठ 26 एवं 42 पर पृष्ठ के मध्य में चित्र बनाया गया हैं। शब्दों की पुनरावृत्ति हुई है ।

आरम्भ : नित क्षापां बहुवचने देव जसूइतिस्थि तेज कारस्य तिसक्षापां लोप प्रयोजनं जसीति विशेषणांर्थः देव अस् इतिस्थिते दीर्घ विसर्गै ।

अन्त : लक्षम्यः लक्ष्मेयाः लक्ष्मीनां लक्ष्म्यां लक्ष्मेयाः लक्ष्मीछ ।। ईकारांता स्त्री लिंगः स्त्री शुद्धः तस्ये वंतत्व भावा ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1133
शीर्षक : श्रीरामायण
लिपिकाल : संवत् १६५७
पृष्ठ संख्या : अलग–अलग कांडों की अपनी पृष्ठ संख्या अंकित है।
आकार : 30 x 12 स०म० लिखित : 24 x 8 स०म०
सामान्य विवरण : काली स्याही में लिखी गई यह कृति सुन्दर लिखाई युक्त है । प्रति पृष्ठ 8 से लेकर 12 पंक्तियाँ हैं। अलग–अलग कांडों की पृष्ठ संख्या अलग–अलग है ।
विशेष विवरण : इस कृति में रामायण कथा अयोध्या कांड से लेकर उत्तरकांड तक चलती है । कुल छः कांड हैं पहला बालकांड इसमें नहीं है ।
आरम्भ : ।। श्री गणेशाय नमः ।। श्री रामचंद्राय नमः ।। कस्य चित्त्वथकाल सा राजा दशरथः सुतां भरतं कैकयी पुत्रमिदं वचनम् व्रवीत ।।
अन्त : इत्युत्तर कांडस्य अनुक्रमणिका समाप्त ।। श्रुभंभवतुसंवत् १६५७ माघे श्रुक्ला १० नौ लिखितमिदं पुस्तकं ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1134
शीर्षक : याज्ञवल्कीय धर्मशास्त्र
लिपिकार : जनार्दन पंडित
लिपिकाल : संवत् १६०६
पृष्ठ संख्या : 629
आकार : 30 x 21 स०म० लिखित : 21 x 12 स०म०
सामान्य विवरण : 629 पृष्ठों की खुली कृति काली स्याही से लिखी गई है । प्रति पृष्ठ 14 पंक्तियाँ हैं ।
विशेष विवरण : याज्ञवल्कीय धर्मशास्त्र को जनार्दन पंडित ने लिपिबद्ध किया है । इसके तीन अध्यायों में सभी संस्कारों के आधार पर धर्म का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः।। उों नमो भगवते वासुदेवाय।। उों श्री गुरुवै नमः।। उों संसिद्यर्थ मिलत्सुरासुर रत्नरनरमौलि स्थित प्रौल्लः।।
अन्त : इति श्री धर्मशास्त्र याज्ञवल्कीय अपरारक संपूर्ण समाप्तम्।। श्रुभम्भवतु ।। संवत १६०६ मार्गशीर्ष वति प्रतिपद्यां शनिवासरे संपूर्णं श्री ज्वालामुखी मंदिर समीपे गो ब्राह्मण दासानुदास जनार्दन पंडितेन लिपीं कृतम् श्रुभम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1135
शीर्षक : शिव पुराण
लिपिकाल : संवत् १८८२
पृष्ठ संख्या : अलग–अलग संहिताओं की पृष्ठ संख्या अलग–अलग है।
आकार : 41 x 15 स०म० लिखित : 33.5 x 10 स०म०
सामान्य विवरण : संहिताओं का संग्रह शिव पुराण । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग । प्रति पृष्ठ 12 पंक्तियाँ । लिखावट सुन्दर पृष्ठ के दोनों ओर लाल काली स्याही का हाशिया खींचा गया है ।
विशेष विवरण : शिव पुराण के अंतर्गत विश्वेश्वर संहिता, विद्येश्वर संहिता, वायवीय संहिता (उत्तरार्द्ध एवं पूर्वार्द्ध) कैलाश संहिता, सनत्कुमार संहिता तथा परं विद्येश्वर संहिताओं में शिव चरित्र गायन किया गया है ।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः। नारायणं नमस्कृपा नर्रचैव नरोत्तम ।। दैंवी सरस्वंती व्यासंत तो जयमुदीरयेतज्ञ यति परासर सुतुः सत्यवती ह्रदयं नंद नो व्यासः।।
अन्त :–

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1136 संग्रह (क)
शीर्षक : शिव रहस्य
पृष्ठ संख्या : 517
आकार : 35 x 18 स०म० लिखित : 25 x 10 स०म०
सामान्य विवरण : पृष्ठ – पृष्ठ हुई यह कृति 517 पृष्ठों की है। लिखाई सुन्दर । काली स्याही का प्रयोग। सफेद तथा पीले पृष्ठों का प्रयोग किया गया है । प्रति पृष्ठ ग्यारह पंक्तियाँ हैं।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में 50 अध्यायों के अंतर्गत शिव–कथा का वर्णन है ।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः । श्री सरस्वत्यै नमः विश्वेत्रां माधवंटुटि दंडपाणिं चभैरवं वंदे काशीं गुहा गंगा भवानी मणि कर्णिका।। १।।
अन्त : इति श्री स्कांदे महापुराणे शत सहस्त्रं संहितायां हिमवत्खंडे शिवरहस्येत तीयां शेउतर खंडे स्कंदागस्त्य मुनि संवादोनाम पंचाशततमो ध्यायः ।। ५०।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1136 (ख)
शीर्षक : शिव रहस्य द्वितीयांश
पृष्ठ संख्या : 222
आकार : 35 x 18 स०म० लिखित : 25 x 10 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : इस रचना में तीस अध्यायों में शिव रहस्य वर्णन किया गया है।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः माहेश्वरे पुरां सत्रे प्रवृत्ते मुनयस्रदा यदृछया गत्रं सूत्रं पैप्पलादं हिसत्रिणः वाजश्वस.......।
अन्त : इति श्री शिवरहस्ये द्वितीयांशे जैगीषव्य स्कंद संवादे त्रिशोध्यायः ३० समाप्त।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1137
शीर्षक : स्कन्ध पुराण नगरखंड
रचनाकाल : संवत् १८७५
पृष्ठ संख्या : 538
आकार : 35 x 19 स०म० लिखित : 25 x 13 स०म०
सामान्य विवरण : स्कन्ध पुराण के नगरखंड नामक इस रचना के पृष्ठ–पृष्ठ अलग हुए हैं । पूर्ण तथा अति दुर्लभ रचना है लेखक ने इसके लिए सफेद तथा पीले पृष्ठ प्रयुक्त किए हैं । लिखावट साफ है । प्रति पृष्ठ 13 पंक्तियाँ हैं । रचना को जिल्द द्वारा सुरक्षित कर लेना चाहिए ।
विशेष विवरण : स्कन्ध पुराण के नगरखंड का पूर्ण चित्र इस रचना में शब्दों के माध्यम से खींचा गया है। रचना के आरंभ में लेखक ने लम्बे पृष्ठों पर विषयसूची (अनुक्रम) बनाया है और अनुक्रम में हर अध्याय के प्रत्येक पक्ष का पृष्ठ नम्बर पद नम्बर अंकित किया है । अंत में नगर खंड के श्रवण का माहात्म्य भी वर्णित है ।
आरम्भ : उँ नमोः विनायकाय उँ नमः श्री पुरुषोत्तमाय सघूर्जुटि जटाजूटो जयतां विजयाय चः यत्रै कपलित भांति करोन्य थापि जान्हवीं ।
अन्त : इति श्री स्कंदपुराणे तृतीय परिछेदे हाटकेश्वर क्षेत्र महात्म्येपुराण श्रवण माहात्म्ये नगरखंड समाप्तं संपूर्ण २२६ ग्रं० ११५००० संवत् १८७५ ज्येष्ट १३

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1138 संग्रह (क)
शीर्षक : श्री भागवत महापुराण
लेखक : शंकरेण
लिपिकाल : संवत् १९१८
पृष्ठ संख्या : 168
आकार : 27 x 21 स०म० लिखित : 20 x17 स०म०
सामान्य विवरण : पृष्ठों को अलग से बांधा गया है । काली स्याही से लिखी गई यह रचना साफ–सुथरी है । प्रति पृष्ठ सोलह पंक्तियाँ हैं ।
विशेष विवरण : श्रीभागवत महापुराण नामक इस रचना को 33 अध्यायों में लिखा गया है। पृष्ठ 162 से 168 तक जगह–जगह से खराब होने के कारण खाली पृष्ठों के साथ उन्हें जोड़ा गया

		है । वैसे लेखक ने कई पृष्ठों के किनारों पर भी लिखा है । संवादों के माध्यम से कृति की रचना की है ।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। विश्वसर्ग विसर्गादि नव लक्षण लक्षितं श्री कृषना ख्यं परंधाम जग धाम नमामि तत ।। १ ।।
अन्त	:	इति श्री भागवतय स्कंधे कापिलेयो पाख्यानेत्रे यास्मिशत्तमो ध्यायः।३३। शंकरेण लिखतं स्वपठनार्थ ज्ञातौजेत्तलं १६१८ मित्ती पौषसुदा वारगुर।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1138 (ख)
शीर्षक	:	भागवत महापुराण नवम् स्कन्ध टीका
पृष्ठ संख्या	:	67
आकार	:	27 x 21 स०म० लिखित : 20 x 17 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	श्रीभागवत महापुराण के नवम अध्याय की यह टीका 24 अध्यायों में लिखी गई है ।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः।। गुणापंगुणा त्तवात्थैम्ण ते करुणानिधित महं शरणंयामि परमानद माधव ।।
अन्त	:	इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कंधे टीकायां चतुर्विंशोऽध्यायः २४।। श्री राम कृघ्म राधाकृघ्म शंकरे णैव लितं श्रीमद्भागवत शास्त्रस्व प्रस्रकम् ज्ञातौ जेत्तली स्वपठनार्थे श्री कृघ्मार्पणमस्तु श्रुभमस्तु ।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1138 (ग)
शीर्षक	:	भागवत महापुराण अष्टदश संहिता
लेखक	:	शंकर
लिपिकाल	:	संवत् १६२१
पृष्ठ संख्या	:	200
आकार	:	27 x 21 स०म० लिखित : 20 x 7 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत कृति में अष्टादश संहिता की टीका की गई है ।
आरम्भ	:	श्रीगणेशाय नमः।। उों सच्चिदानंदाय नमः।। त्ततः पंचाशत्तमेतु जरासधिं भायाहि च कारयित्वां बुधौउर्मतन्निनाय निजं जनं।। १ ।।
अन्त	:	इति श्री भागवते महापुराणे ऽष्टाहं साहस्यां संहिता पावैया सिक्यो द्वादश स्कन्धे त्रयोदशोध्यायः १३ । समाप्तोयं ग्रंथः ।। श्री कृष्णार्पणमस्तु ।। संवत् १६२१ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1138 (घ)
शीर्षक	:	श्री भागवत महापुराण (द्वादशस्कंध टीका)
पृष्ठ संख्या	:	52
आकार	:	27 x 21 स०म० लिखित : 20 x 17 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत । रचना के अन्तिम पृष्ठ नहीं हैं ।
विशेष विवरण	:	श्री भागवत महापुराण के द्वादश स्कंध की टीका की गई है।
आरम्भ	:	श्री गुरु भ्यो नमः।। उों गणेशांबिकाभ्यो नमो नमो नमः ।। जयंति श्री परानंद कृपाऽपांग लसदृशः यानित्यमनुवर्त्तते संपदो विगतादृशः।। १ ।।
अन्त	:	गायत्र्यारष्य ब्रह्म विधेय मिति दर्शयति तमेव देवतारुपेण गुरु रूपेण च प्रण।। *(नोट – रचना अधूरी है आगे का पृष्ठ नहीं है।)*

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1159 संग्रह (क)
शीर्षक	:	इन्द्राक्षी स्त्रोत
लेखक	:	पुरंदर ऋषि
पृष्ठ संख्या	:	8
आकार	:	16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०

सामान्य विवरण : संग्रह की प्रथम रचना । कृति के पन्ने अलग–अलग हुए हैं । काली तथा लाल स्याही का प्रयोग करते हुए संतरी रंग का हाशिया भी बनाया है । आरंभ में दो खाली पृष्ठ हैं। प्रति पृष्ठ पांच पंक्तियाँ अंकित हैं ।
विशेष विवरण : इन्द्राक्षी स्तोत्र में सर्वप्रथम शरीर के सभी अंगों से वंदना की गई है तथा फिर इन्द्र द्वारा इसकी महिमा का वर्णन किया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों अस्य श्री इंद्राक्षी स्रोत्र मंत्रस्य।। पुरंदर ऋषि ।। अनुष्टुप छंदः ।।
अन्त : यासिध लक्ष्मीपरा ।। सा देवीनवकोटि मूर्ति सहिता ।। मांपात माहेश्वरी ।। इति श्री इंद्राक्षी स्रोत्रं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1159 (ख)
शीर्षक : सामुद्रिके पुरुष स्त्रीणां लक्षणं
पृष्ठ संख्या : 50
आकार : 16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की दूसरी रचना । लाल तथा काली स्याही का प्रयोग करते हुए प्रति पृष्ठ छः पंक्तियाँ अंकित हैं । पृष्ठों पर संतरी स्याही से हाशिया भी बनाया गया है । रचना जिल्द से उखड़ी होने के कारण पृष्ठ–पृष्ठ हुई है ।
विशेष विवरण : पुरुष स्त्री लक्षणं नामक इस कृति में कवि ने पहले पुरुष के शरीर के सभी अंगों का वर्णन करते हुए उसके लक्षण बताए हैं फिर इसी प्रकार स्त्री के प्रत्येक अंग का वर्णन करते हुए प्रत्येक अंग के लक्षण बताएं हैं ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। अथ सामुद्रिके पुरुष स्त्रीणां लक्षणानि लिख्यते ।। उों आदि देवं प्रणभ्या दौ सर्वज्ञ सर्व दर्शनं ।
अन्त : चित्रिणी मानवांछंति कलह वांछांति शंखिनी । इति सामुद्रिके पुरुष स्रीणं लक्षनाति श्रुभा श्रुभं संपूर्णं समाप्तं ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1159 (ग)
शीर्षक : नारायण चिंतामणे।
पृष्ठ संख्या : 16
आकार : 16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की यह तीसरी रचना । लाल तथा काली स्याही का प्रयोग करते हुए लाल रंग का हाशिया भी बनाया गया है । प्रति पृष्ठ छः पंक्तियाँ अंकित हैं ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में नारायण की उपासना मंत्रों के द्वारा करते हुए सभी देवताओं का वर्णन कर नारायण के आयुधों शंख, चक्र, गदा, पद्म की भी वंदना की है।
आरम्भ : उों श्री नारायणाय नमः ।। उों अथ नारायण चिंतामणे लिखिते । उों अस्य श्री नारायण मंत्रराज स्रोत्र मंत्रस्य ।।
अन्त : इति श्री वाराह पुराणे सामवेद विद्यानेष्टयी धरणीधर संवादे श्री महा नारायण मंत्ररात स्त्रोत नारायण चिंतामणि संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1159 (ङ.)
शीर्षक : यमगीता
पृष्ठ संख्या : 7
आकार : 16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की यह पांचवी कृति । लाल काली स्याही का प्रयोग । संतरी स्याही से हाशिया बनाया हुआ हैं ।
विशेष विवरण : इस रचना में मरणासन्न प्राणी द्वारा करवाये जाने वाले कृत्य और यम के साथ दूतों के संवाद के द्वारा पापी तथा पुण्य आत्मा का वर्णन है ।
आरम्भ :– उों श्री गणेशाय नमः ।। उों नृत्यो गंछति भूलो के विस्मवानां परित्यजेत्।। अबैस्मवंतु गृहिणी आनीय तत्रयेलतः।। १।।
अन्त :– पव तां श्रृणतांवै वयम गीनुमत्तगं ।। यम हतीन पीडंती स्वप्नं नैव न पश्यति ।। त्रूर ।। इति श्री यमगीता संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1159 (च)
शीर्षक : श्री घटिका लग्नं
पृष्ठ संख्या : 36
आकार : 16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की छठी रचना ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में पहले दिन फिर तिथियों के प्रभाव का वर्णन करके फिर महीनों का वर्णन किया है और विभिन्न नक्षत्रों में जन्म लेने वाले जातकों के लक्षणों का वर्णन किया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों अर्क वारे मलछेच।। १ ।। सोमवारे सर्वसिद्धये।। २ ।। मंगलवारे यम विद्यात।। ३ ।।
अन्त : शनि रात्रौं । ढ ढं ढं ढं ट ढ ढं ढं ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ । शनि दिन। ढं ढं । ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ढ ।। द द । 00 ।। इति श्री घटिका लग्नं समाप्तं।। श्रुभं।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1159 (छ)
शीर्षक : पंच संस्कार
पृष्ठ संख्या : 5
आकार : 16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की सातवीं रचना । बिना हाशिये के पांच पृष्ठों की काली व लाल स्याही का प्रयोग किया गया है ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में ऋग्वेद उक्त पांच संस्कारों का वर्णन तथा श्री राम के आशीर्वाद को सभी संस्कारों में महत्त्वपूर्ण बताया ळै ।
आरम्भ : उों श्री रामाय नमः ।। पंच संस्कार लिक्ष्यते ।। उों श्री रामपूजा मद्येधारधेत् ।।
अन्त : फेर सतै सतारनवसुत्र नवग्रिह तिन देव साषी ब्रह्मा विस्नु महेश सत्य नाम निर्मल दिसा व्रह्मा के सुत संपूर्ण काला ।। ३० ।। इति ऋग्वेदे पंच संस्कार संपूर्णम् ।। उों ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1159 (ज)
शीर्षक : रामरक्षा
लेखक : रामानंद स्वामी
पृष्ठ संख्या : 9
आकार : 16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की आठवीं रचना । संतरी रंग से हाशिया बनाया गया है । काली तथा लाल स्याही का प्रयोग किया गया है ।
विशेष विवरण : रामानंद स्वामी ने राम लक्षण सीता से प्राणी के दुःखों का हरण एवं सुख प्रदान करने की इच्छा से रामरक्षा स्रोत का निर्माण किया है ।
आरम्भ : उों श्रीमते रामानुजाय नमः।। अथ श्री रामानंद स्वामी कृत्य रामरक्षा लिख्यते।। उों संध्या तारणी सर्व दोष निवारणी ।
अन्त : उों श्री रामचंद उचरंते सीता लक्ष्मण सुणंते मोक्ष मुक्तं फल लभ्यंते।। इति श्री रामानंद सौमी राम रक्षा विरचितं सम्पूर्णम्।। उों ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1159 (झ)
शीर्षक : सामवेदे पंचम संस्कार
पृष्ठ संख्या : 3
आकार : 16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : हाशिये एवं काली लाल स्याही का प्रयोग करते हुए रचना लिखी गई है। प्रति पृष्ठ छः पंक्तियाँ अंकित हैं ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में सामवेद में कहे गये पंच संस्कारों का वर्णन है ।
आरम्भ : उों श्री रामाय नमः ।। उों अथ सामवेदे पंच संस्कारानु भावयेत।। उों श्री कृस्म नामां कित यामुद्रा या पावनीयो सौ आत्म्नो निरधारयति।।
अन्त : इति फतिवतुर्थो संस्कारः।। गोपाल तापिनी निर्णय संस्कारः।। इति पंचम संस्कार सम्पूर्णम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1159 (ञ)
शीर्षक : यजुर्वेद पंचम संस्कार
पृष्ठ संख्या : 2
आकार : 16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की दसवीं रचना ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति में यजुर्वेद के आधार पर पंच संस्कारों का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : उों श्री राम कृस्माय नमः। उों अथ यजुर्वेदे पंचसंस्कारः।। उों संप्रदायानुसारेण यथा कर्म प्रल्प्रेर्वत ।
अन्त : तथा चुग में पुडं मुद्रातथा नाम माला मंत्रस्तथै वच अेमिही पंच संस्कारः प्रमै कांमहे तवः।। उों इतिः पंच संस्कार सम्पूर्णम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1159 (ट)
शीर्षक : श्री सुदामा जी का बाराखरी
पृष्ठ संख्या : 10
आकार : 16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की ग्यारहवीं रचना । हर पृष्ठ पर हाशिया बना है । प्रति पृष्ठ छः पंक्तियाँ ।
विशेष विवरण : इसमें सुदामा भक्त ने बारह प्रकार के अवगुणों के त्यागने हेतु श्रीकृष्ण से प्रार्थना की है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों अथ बारांखरी लिखिते।। उों कका कलिजुग नाम अधारा।।
अन्त : बाराषडि. ज्ञान गुनगाउ।। सब संतन कू सीस नमाउ।। इति श्री सुदामा जी के बाराषरी सम्पूर्णम्।। श्रुभम् ।। उों ।। उों ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1159 (ठ)
शीर्षक : प्रेम वारांखडि
लेखक : संतदास
पृष्ठ संख्या : 8
आकार : 16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : आठ पृष्ठों की इस कृति में लेखक ने काली लाल स्याही का प्रयोग करते हुए प्रति पृष्ठ छः पंक्तियाँ लिखी हैं ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में कृष्ण के गोकुल से चले जाने पर जब मथुरा से उद्धव आता है तो गोपियाँ अपने प्रेम को प्रकट करती हैं ।
आरम्भ : उों श्री रामाय नमः । उों कका कमल नैयन जवते गये तव ते चित नहीं चैन ।
अन्त : जोगा वैसीषै सुनै गोपी कृस्म सनेह प्रीति परसय अनिवदै उपजत है पदनेह।। ३७ ।। इति श्री संतदास की प्रेमवारां खंडि संपूर्णम् ।। उों ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1159 (ड)
शीर्षक : श्री मानसी पूजा विधि
पृष्ठ संख्या : 8
आकार : 16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की 13वीं रचना है। बिना हाशिये के काली लाल स्याही का प्रयोग करते हुए प्रति पृष्ठ छः पंक्तियाँ अंकित हैं ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में राम–सीता की परम रहस्यमयी मानसी पूजा की विधि का वर्णन किया है।
आरम्भ : उों श्रीमते रामानुजाय नमः ।। उों वीरासन स्थशता तरूमूल निवासिने ।। महा सुगंध लिप्तां गंवन माला विराजितं।। १।।
अन्त : इति श्रीमद्गरूप संहितायां परम रहस्ये श्री मानसी पूजा विधि पंचविंशोध्यायः संपूर्णम्।। उों ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1159 (ढ)
शीर्षक : कथा पार्वती

लेखक : नित्य नाथ
पृष्ठ संख्या : 96
आकार : 16 x 9 स०म० लिखित : 12 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की अन्तिम रचना। अंत में दो पृष्ठ खाली व उससे पहले के दो पृष्ठों पर उर्दू में कुछ लिखा गया है । खाली पृष्ठ जर्जर हो चुके हैं । बिना हाशिये की इस रचना में लेखक ने काली तथा लाल स्याही का प्रयोग किया है ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में छः अध्याय हैं जिनके अन्तर्गत नित्यनाथ सिद्ध ने अलग–अलग शीर्षकों में पार्वती गौरी की कथा का वर्णन किया है ।
आरम्भ : उों श्री रामाय नमः ।। उों त्रिविंशतिकन कवी जानि षोडशें द्रियवस्रथा ।।
अन्त : चमीरो साह देइछि रहटा पूर्णमासी के दिनलैकै षडकौषग वै तोव साहोय महाछः ।। इति श्री पार्वती पुत्र नित्यनाथ विरचितं षष्टमो पटलः।। ६ ।। उों ।। श्रुभम् ।। उों ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1160
शीर्षक : श्रीमदभगवत्गीता माला मंत्रस्य
पृष्ठ संख्या : 265
आकार : 13 x 19 स०म० लिखित : 9.5 x 14 स०म०
सामान्य विवरण : जिल्द में रचना बिखरी पड़ी है। सारे पृष्ठ कीड़े द्वारा जर्जर कर दिए गये हैं लेखक ने काली तथा संतरी स्याही का प्रयोग करते हुए सुन्दर लिखावट में भगवदगीता के मंत्र लिखे हैं । प्रति पृष्ठ 16 पंक्तियाँ हैं ।
विशेष विवरण : गीता के अठारह अध्यायों को भगवद्गीता माला मंत्रस्य के रूप में टीका कर कृष्ण–अर्जुन के संवाद के माध्यम से इन अठारह अध्यायों के महत्त्व का वर्णन भी किया है ।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। उों नमो भगवते भगवते वासुदेवायों ।। उों अस्य श्री भगवद्गीता माला मंत्रस्य ।। श्री भगवान्वेद व्यास ऋषि।। अनुष्टुपू छंदः।।
अन्त : इति श्री महाभारते प्रात साहंस्प्रां संहितायां वैयासिवंया भीष्म धर्वणि श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृस्नार्जुन संवादे मोक्ष सेन्या संयोगो नामाष्टादशोध्यायः।। १८।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1162
शीर्षक : ललित विलास
लेखक : महाकवि कल्याण मल्ल
पृष्ठ संख्या : 24
आकार : 14 x 30 स०म० लिखित : 9 x 23 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े सहित सजिल्द रचना काली स्याही से लिखी गई है । बिना हाशिये के तथा प्रति पृष्ठ 10 पंक्तियाँ । प्रस्तुत रचना पानी से भीगी होने के कारण काफी जर्जर हो चुकी है ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत हस्तलिखित ग्रंथ ललित विलास के कुल दस स्थल हैं जिसमें प्रत्येक स्थल की निजी दोहा संख्या है जबकि कुल दोहे 416 हैं । इसमें कवि ने लोधी वंश की सुन्दर नायिकाओं का चित्रण किया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः। प्रद्युम्नाय नमः अति ललित विलासे विश्वचेते निवासं समर कृत विकाशं शेव राख्यप्रणाश रति नयन विरामं संततं चाभिरामं प्रसभविजितवामे शर्म दनौनिकाम ।।
अन्त : इति श्री खाडषानन वल्लभ लोदी वंशावते २१ विनोदाय श्री महाराजर्षि महाकवि कल्पाण मल्ल विरचिते अनंगऐ संभोग निरूपण नाम दशम स्थलः समाप्तः ।। १० ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1163
शीर्षक : वाजसेय संहिता
रचनाकाल : संवत् १६०३
पृष्ठ संख्या : 223
आकार : 21 x 11 स०म० लिखित : 15 x 7 स०म०

सामान्य विवरण : खुली हुई यह कृति काली स्याही में लिखी गई है। कहीं–कहीं गहरे लाल स्याही का प्रयोग भी किया गया है प्रति पृष्ठ पांच पंक्तियाँ लिखी गई हैं। लिखावट साफ है।

विशेष विवरण : दो सौ तेइस पृष्ठों की यह कृति वाजसेन संहिता के नाम से लिखी गई है। प्रारम्भ में ईश वन्दना के पश्चात् लेखक ने संहिता को चालीस अध्यायों में लिखा है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः हरिः ओंम् इमम्मे इमम्मेघ रूणश्रुधी हवम द्याच मृडम त्वाम वस्युराच के १

अन्त : इति वाजसनेय संर्ढहितायां दीर्घ पाठे चत्वारिशो द्यायः ४० संवत् १६०३ मिति वैशाख कृघ्म ७।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (संग्रह क)

शीर्षक : बोध प्रकरणं

लेखक : श्रीमद् शंकराचार्य

रचनाकाल : संवत् १८८४

स्थान : श्रीनगर कोट कांगड़ा

पृष्ठ संख्या : 4

आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०

सामान्य विवरण : कपड़े गत्ते की जिल्द में बंधी संग्रह की यह पहली रचना है जिसमें काली तथा लाल स्याही का प्रयोग किया गया है । लिखाई साफ तथा सुंदर है प्रति पृष्ठ 12 पंक्तियाँ अंकित हैं । कृति के अंत में समय तथा स्थान का वर्णन किया गया है । जैसे श्री संवत् १८८४ आषाढ़ श्रावण वदि २ द्वितीयां भौमवासरे लिखितं इद्म् वेदांत पुस्तकं श्रीनगरकोट कांगड़े भगवती शुभम् भवतु ।।

विशेष विवरण : बोध प्रकरण नामक इस रचना में 672 श्लोक हैं जिनमें साधक को उपासना एवं विकारों को दूर करने की प्रेरणा दी गई है ।

आरम्भ : ओं श्री गणेशाय नमः।। श्री गुरु चरण कमलेम्यो नमः।। ओं नमः सरस्वत्यै।। ओं तपोभिः तीण पापानांशां तानां वीतररागिणा।।

अन्त : इति श्रीमत्परमहंस परिव्रजिकाचार्य गोविंदं भगवन् पूज्यपाद श्रीमच्छी शंकराचार्य्य विरचितात्म वोध प्रकरणं संपूर्ण समाप्तम् ।। श्रुभं भवतु ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (ख)

शीर्षक : महावाक्यं

पृष्ठ संख्या : 4 – 5

आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०

सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।

विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना 'महावाक्यं' में सांसारिक माया से मुक्त होकर मानव को कर्म करके मोक्ष प्राप्ति के साधन बताये हैं ।

आरम्भ : ओं श्री गणेशायनमः ।। ब्रह्मणे ।। अथ महावाक्यार्थ प्रबोध प्रकारं व्याख्या स्यामः।। तत्व मसीति सोभ्य महावाक्यमिति प्रथमं शिष्यंप्रतिज्ञापयेहगुरूः।।

अन्त : सूर्यश्रेवृति।। श्रुकोमुक्तो वामदेवोमुक्तः।। अयमात्मा व्रह्मेति महावाक्यार्थ।। ततः प्राणायामषद्धं।। इति महावाक्यं।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (ग)

शीर्षक : ज्ञान सन्यास

पृष्ठ संख्या : 5 – 10

आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०

सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।

विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में संन्यासी के लिए शौच, भिक्षा, संध्या आदि विधियों का वर्णन कैवल्य उपनिषद के आधार पर किया है ।

आरम्भ : ओं श्री गणेशाय नमः ।। अथ ज्ञान संन्यास लिख्यते वहिरंतःस्थितं देवमात्मानं परमेश्वरं।।

अन्त : इति श्री कैवल्योपनिषद्विवरणे संन्यास पूजाभूत श्रुद्धिप्राणप्रतिष्ठा संपूर्ण।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (घ)
शीर्षक : ज्ञानदीपक योग
रचनाकाल : विक्रमी 1889
पृष्ठ संख्या : 10 – 13
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : तरेसठ श्लोकों की इस रचना में ईश्वर के वाक्यों में ज्ञान की लौ को योग द्वारा किस प्रकार किया जाए बताया गया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः।। उों नमः शिवाय।। मेरु शृंगे सुखासीनंभगवंतंम हेश्वरं ।।
अन्त : ज्ञान दीपंचत्प्राप्तं दृश्यते सर्वतो यदि ।। मुच्यते सर्व पापेभ्योगछंति शिव सन्नियौ ।। ६३।। इति श्री ईश्वर भाषितं ज्ञानदीपक योग ध्यानं संपूर्ण।। श्रुमं।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (ङ.)
शीर्षक : ब्रह्म विद्या प्रबोध
पृष्ठ संख्या : 14 – 15
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में परमहंस सनत्कुमार द्वारा ब्रह्म विद्या प्राप्ति का मार्ग बतलाया गया है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों गौतम उवाच। भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्र.विशारद।। ब्रह्म विद्या प्रबोधोहि केनोपायेन जायते।। १ ।।
अन्त : इति वेद प्रवचनं। वेद प्रवचनमिति।। इति श्री अथर्वण वेदेहं सोयनिषत् समाप्ता।। श्रुभम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (च)
शीर्षक : समाधि विधि
पृष्ठ संख्या : 16–17
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : दो पृष्ठों की इस रचना परमहंसानाम समाधि विधि में समाधि विधि में समाधि में पूर्व सभी प्रकार के विकारों से मुक्त होकर शुद्ध आत्मा द्वारा समाधि लगाने की प्रक्रिया का वर्णन है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः।। उों अथालः परमहंसानां समाधि विधि व्याख्या स्यामः।। सच्छन्द वाच्यम् विद्याशवलं व्रह्म व्रह्मणोव्यक्तं।।
अन्त : ध्यान योगेन मासाच्चव्रह्म हत्यांव्यपोहतिं संवत्सर क्रताभ्यासात्सि। अष्टक मवाप्तुयात।। इति श्री परमहंसनां समाधि विधि समाप्ता।। श्रुभं।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (छ)
शीर्षक : संन्यास पद्धति
लेखक : श्री मच्छंकराचार्य
पृष्ठ संख्या : 16 – 19
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : 50 श्लोकों की इस रचना में संन्यास की पद्धति पर सात महापुरुषों के विचार संकलित है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। अथ संन्यास पद्धति।। उों नारायणं पद्म भवंवशिष्टं शक्तिंचत सुत्र पराशरंच।।
अन्त : इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्यश्री मच्छंकराचार्य विरचिते सप्तमान्य सन्यास पद्धति संपूर्णम्।। श्रुभमस्तु।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (ज)
शीर्षक : श्री विजय स्तोत्रं

पृष्ठ संख्या : 20 – 21
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रथमतः गुरु वंदना के पश्चात् सभी अंगों का पूजन कर शुद्ध होने के पश्चात् इस रचना में विजय स्त्रोत तथा उसके फल का वर्णन है।
आरम्भ : उों श्री गुरुवे नमः ।। उों अस्य श्री वाग्वादिनी विजया देवी मंत्रस्य ।। ब्रह्म ऋषिः।। गायत्री छंद ।।
अन्त : आराधयामि वह शत्रु पराजयेति पत्रेश्वरी त्रिभुवनाधिपतिंनमामि।। ३ ।। इति श्री विजया स्तोत्रं संपूर्णम्।। श्रुभं भवतु।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (झ)
शीर्षक : शिव सहस्त्र नाम स्तोत्रं
लेखक : श्री मच्छंकराचार्य
पृष्ठ संख्या : 22 – 34
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में शिव के सहस्रों नामों का जाप करके शिव की आराधना की है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। श्री महाविस्मुरुवाच ।। उों भवाय नमः ।। उों शर्वायनमः।। उों हराय नमः ।। ओं रुद्राय नमः।।
अन्त : उों सारज्ञाय नमः।। उों सर्वसत्ववलाम नमः।। उों वलाय नमः ।। इति श्री शिव सहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (ञ)
शीर्षक : शिव स्तोत्रं
लेखक : नारायण
पृष्ठ संख्या : 34 – 35
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में नंदि पुराण के आधार पर शिव स्त्रोतं का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों कारे आदिनूपे सुकृत बहुविधे श्वेत पीते च कृस्मे ।।
अन्त : स्वर्गे नर्के अनर्के अखिल खिलमये चेतचेते अचेते।। एको व्यापी०।। १०।। इति श्री नंदि पुराणोक्तं नारायण कृतं शिव स्तोत्रं संपूर्ण।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (ट)
शीर्षक : शिव स्तोत्रं
लेखक : शंकराचार्य
पृष्ठ संख्या : 1
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : शंकराचार्य ने शिव महिमा का गान शिव स्तोत्रं के माध्यम से किया है और बताया है कि कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ शिव का अस्तित्व नहीं है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। न भूमिर्न तोयं न तेजो न वायुर्न खंनेंद्रियावान तेषां समूहः।।
अन्त : न श्रून्यं न वाश्रून्यम द्वै तकत्वात्कथ सर्व वेदांत सिद्धि व्रवीमे।। १०।। इति श्री शंकराचार्य विरचितं शिव स्तोत्रं संपूर्ण समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (ठ)
शीर्षक : विज्ञान नौका
लेखक : श्रीमद् शंकराचार्य
पृष्ठ संख्या : 1
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०

सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : विज्ञान नौक नामक इस रचना में कवि ने उस अनन्त की भक्ति एवं उसके गुणों का स्मरण ही मानव को ज्ञान प्राप्ति का साधन बतलाया है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। तपो यज्ञ दानादिभिः शुद्व बुद्धि र्विरक्तों नृपादेः पदे तुछ ब्रह्मा।
अन्त : शृणेतीह वा नित्यमुकक्त चित्तोभवेद्विस्मुरे वैब वेद प्रमाणात ।।१८।। इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं विज्ञान नौका संपूर्ण ।। श्रुभं भवतु ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (ड)
शीर्षक : निरंजन अष्टक
लेखक : शंकराचार्य
पृष्ठ संख्या : 1
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में निराकार ईश्वर की पूजा विधि आठ प्रकार से बताई गई है। रचना में नौ श्लोक हैं ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। स्थानं न मानं नच नाद विंडनूपं न रेखा नच धातु वंर्ण।।
अन्त : वालोन वृद्धों न तारुण्य नूपं तस्मै नमो देव निरंजनाय।। ६।। इति श्रीशंकराचार्य विरचितं निरंजनाष्टकं संपूर्ण।। शुभं भवतु।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (ठ)
शीर्षक : भगवन पटलं
पृष्ठ संख्या : 1
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : एक पृष्ठ की इस रचना में ध्यान एवं मंत्र विधि का वर्णन किया गया है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों अस्य श्री भगवान्वसु मंत्रस्य।। नारायण ऋषि ।। माया छंदः।।
अन्त : पीना वसु पीनावान वसुधते।। स्वेत वसुं नर को भवेत पुनः पुनः ।। इति श्री आमर उह्यातंत्रे गौरी कल्पे उमाम हेश्वर सं वादि भगवन पटलं संपूर्ण श्रुभं।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (ण)
शीर्षक : शिव चैतन्य अष्टक
लेखक : श्री मच्छंकराचार्य
पृष्ठ संख्या : 1
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : 'शिव चैतन्य अष्टक' नामक इस रचना में छः श्लोकों के माध्यम से कवि ने विकारों को छोड़कर नये गुणों का अपनाने की बात कही है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। मनो व्रह्महंकार चित्ता दि नाहं न श्रोत्रं न जिह्वान च घ्राण नेत्रं ।।
अन्त : न चा सं मतं नैव मुक्ति र्वचोभिश्रिदानंद नूपं शिवाहं शिवोहं ।। ६।। इति श्री शिव चैतन्याष्टकं संपूर्णं ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (त)
शीर्षक : सप्त श्लोकी गीता
लेखक : दत्तात्रेय
पृष्ठ संख्या : 1
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में श्री दत्तात्रेय ने सात श्लोकों में गीता का रहस्य वर्णित किया है।

आरम्भ : उों श्री गुरवे नमः ।। श्री दत्तात्रेय उवाच।। न वेदा न लोकान सुरा न यज्ञ।। वर्णश्रमो नैव कलं न जाति ।।
अन्त : षडंग योगाय चनैव श्रुद्धं मने पिनाशाय च नैव शुद्धं स्व नूप निर्वाणम् नामयोहं वयं च तत्रं वयमेव शुद्धं।। 7 ।। इति श्री दत्तात्रेय विरचितं सप्त श्लोकी गीता संपूर्ण।। श्रुभं ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (थ)
शीर्षक : अवधूत अष्टक
लेखक : शंकराचार्य
पृष्ठ संख्या : 1
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : इस रचना में श्रीमद् शंकराचार्य ने उस निर्गुण ईश्वर को अवधूत की संज्ञा देकर आठ श्लोकों में उसकी वन्दना की है ।
आरम्भ : उों श्री परमात्मा गुरवे नमः।। उों न योगी न भोगी वामोत्त कांत्ती न वीरो न धीरो न वासाय केन्द्रः।
अन्त : जन्म मृत्यु जरा दुःखेः न श्यं तस्यस्य ना न्यथा।। ६।। इति श्रीमच्छंकराचार्य्य विरचितायां अवधूतांष्टकं संपूर्ण।। श्रुभम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (द)
शीर्षक : अवधूत गीता
लेखक : श्री दत्तात्रेय
पृष्ठ संख्या : 40—58
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : आठ प्रकरणों की इस अवधूत गीता में श्री दत्तात्रेय ने निर्गुण ईश्वर की महिमा का गान किया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। श्री गुरवे नमः।। उों ईश्वरानुग्रहा देव पुसांमद्वैत वासना महद्भय परित्राणां द्वित्राणामुप जायते ।।
अन्त : तस्माच्चितं सर्वतोरक्षणीयं स्वस्थ चित्तेवुद्वनयः संभवंति।। २६।। इति श्री दत्तात्रेय विरचितायां अवधूत गीता यां स्वात्मं सवित्युपदेशं अष्टम् प्रकरणं।। समाप्तमिति अवधूत गीता ।। श्रुभं।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (ध)
शीर्षक : कपिल गीता रहस्यं
लेखक : कपिल ऋषि
पृष्ठ संख्या : 59 — 84
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : कपिल गीता रहस्य में संवादात्मक शैली में कपिल एवं सिद्ध ऋषि संवाद, पार्वती एवं शिव संवाद तथा ईश्वर तथा पार्वती संवाद के माध्यम से गीता के रहस्य पर प्रकाश डाला गया है । इसमें छः अध्याय हैं ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों नत्वा श्री गुरु पाया बुजं स्मरन्मोक्षार्थ सिद्धि दं ।।
अन्त : तस्मात्सर्व प्रयत्नेतन कर्त्तव्यं आत्म साधनं ।। ३०।। इति श्री कपिल गीता रहस्य समाप्ता ।। श्रुभं भवतु ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1164 (न)
शीर्षक : श्री दशनाम अभिधान
लेखक : लेखक पाठकयो
आकार : 24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।

विशेष विवरण	:	दशनाम अभिधान नामक इस रचना में दशनामों की महिमा तथा उनके कृत्यों का वर्णन किया है ।
आरम्भ	:	श्री गुरवे नमः ।। उों हरिविकसित पद्मंसार्क सोमाग्नि विबं प्रणव मयविकाशंयस्य पींठ प्रकल्पं अचल परम सूक्ष्मं ज्योति राकाश मेवंसभव्तु मनसोमे वासुदेव प्रतिप्ता ।।
अन्त	:	परं व्रह्वर तो नित्यं पुरी नामा प्रकीर्नितः ।। १३ ।। इति श्री दशनामाभिधानः समाप्त्म् ।। शुभं भवतु लेखक पाठकयोः ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1164 (प)
शीर्षक	:	अज्ञान वोधिनी
लेखक	:	श्रीशंकराचार्य
पृष्ठ संख्या	:	86–104
आकार	:	24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	अज्ञान वोधिनी नामक इस रचना में कवि शंकराचार्य ने वेदांत शास्त्र की संक्षिप्त प्रक्रिया का वर्णन किया है ।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः।। अथ अज्ञानबोधनी लिख्यते।। चित्सदानंदनूश्पाय सर्वधी वृत्ति साक्षिणे।।
अन्त	:	इति श्वतेः इति संक्षिप्त वेदांत शास्त्र प्रक्रियायां श्रीमत्परम हंस परिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकराचार्य कृता ऽज्ञान बोधिनी प्रक्रिया समाप्ता।। श्रुभं भवतु।। उोंत्सादित्यों।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1164 (फ)
शीर्षक	:	तत्व वोध
लेखक	:	श्रीशंकराचार्य
पृष्ठ संख्या	:	105 – 108
आकार	:	24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	वेदांत से लिए गये प्रकरण के आधार पर इस रचना में तत्व का ज्ञान अर्थात् आत्मा की गति पर विचार किया गया है ।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः।। उों वासुदेवेंद्र योगीद्रन्नताज्ञान प्रदंगुरूं ।। मुमुक्षूणं हितार्थाय तत्ववोधो विधीयते ।। १ ।।
अन्त	:	इति स्मृतिः।। इति तत्ववोध वेदांत प्रकरण समाप्तः।। शुभं भवतु।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1164 (ब)
शीर्षक	:	श्री गोरक्ष शतकं
लेखक	:	श्रीगोरक्ष नाथ
पृष्ठ संख्या	:	108 – 117
आकार	:	24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	श्री गोरखनाथ द्वारा रचित इस 'गोरक्ष शतक' में पहले इसका महात्म्य वर्णित किया है फिर योग विधि के द्वारा उपासना विधि पर प्रकाश डाला है ।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः।। अथ गोरखशत आरंभः श्री गुरुं परमानंदं वंदाभ्यानंद विग्रहं।।
अन्त	:	एक चित्तोय दायो गीतेषां पुण्यफलं युक्तवं। इति श्री गोरक्षनाथ विरचितं गोरक्षं शतकं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1164 (भ)
शीर्षक	:	ज्ञानसार
रचनाकाल	:	संवत् १८८४
स्थान	:	नगर कोट कांगड़ा
पृष्ठ संख्या	:	117 – 120
आकार	:	24 x 15 स०म० लिखित : 17.5 x 9.5 स०म०

सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : संग्रह की इस अन्तिम चौबीसवीं रचना में देवताओं और ईश्वर के संवाद के माध्यम से संक्षिप्त रूप से ज्ञान गंगा का वर्णन है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः।। देव्युवाच।। आहारं कांक्षते कोसौ भुंजते पिचयत्कथं।। जाग्रतेसुप्यते कोसौ सुप्तको वाविवुष्यते।। ईश्वर उवाच।।
अन्त : इति श्री ज्ञान सारं समाप्तम्।। प्रण वोधनुः शराहंयात्मा व्रह्मतल्लक्ष्यमुच्यते।। अप्रमतेन वेद्वव्यं शरवन्तन्मयो भवेत।। श्रुभं भवतु लेखक पाठकयोः।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1174
शीर्षक : फलित ज्योतिष
पृष्ठ संख्या : 31 – 86 अर्थात् 55 पृष्ठ
आकार : 17 x 25 स०म० लिखित : 13.5 x 23 स०म०
सामान्य विवरण : फलित ज्योतिष सम्बन्धी लगभग 55 पृष्ठ जो 31 ये 86 तक चलते हैं। काली तथा लाल स्याही का प्रयोग किया है प्रस्तुत रचना की संख्या लाल स्याही से अंकित है। प्रति पृष्ठ 18 पंक्तियाँ हैं। नः 30 पृष्ठ पर 57वां पद अंकित है शेष आगे है।
विशेष विवरण : फलित ज्योतिष सम्बन्धी इस ग्रंथ में लेखक ने सभी राशियों का जातक पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया है। इसके लिए लेखक ने सभी ग्रहों के आधार पर पत्रिका तैयार करके ग्रहों की स्थिति का अंकन किया है। प्रति खंडित है। 32 पृष्ठ से आरंभ होती है। 33 पृष्ठ उसमें नहीं है। फिर 56 के बाद 58 व उसके बाद पृष्ठ नः 60 है। पृ0 78 की पुनरावृत्ति की गई है। लेखक ने ज्योतिष के आधार पर विभिन्न राशि के मानवों के स्वभाव का चित्रण किया है। वैसे ग्रंथ का नाम नहीं मिलता पर पढ़ने से यह फलित ज्योतिष का ग्रंथ लगता है ।
आरम्भ : विषाहि नृप चौरादि मृत्त कृच्छान्महद भयम् प्रमेहाद्रुधिरं रोगं कुत्सितान्नशिरोरुजम् ।। ५७।।
अन्त : उपदेशन नमिह गतवतिराहौदद्रु गणेन जनः परितप्तः राज समाज युतो वडमानी वितसुखे न सदा रहितः स्यात् १३७ नेत्रपाणा ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1174 (ख)
शीर्षक : पंच पक्षिका
लेखक : अंवतिकाचार्य गरामिहिर
पृष्ठ संख्या : 5
आकार : 24 x 27 स०म० लिखित : 12 x 20 स०म०
सामान्य विवरण : कागज में लपेटी हुई पाँच पन्नों की प्रस्तुत कृति जिल्द रहित है। लिखने के लिए लाल तथा काली स्याही का प्रयोग किया गया है। प्रति पृष्ठ 11 पंक्तियाँ हैं। बीच में से पृष्ठ का कुछ भाग फट जाने से यह कृति खंडित हो गई है।
विषेष विवरण : प्रस्तुत हस्तलिखित कृति कवि अवंतिकाचार्य गरामिहिर द्वारा पंच पक्षिका नाम शीर्षक में है। इसमें कुल 66 श्लोक पद हैं। इसमें पांच पक्षियों की बोली के आधार पर ज्योतिष फलादेश बताया गया है।
आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः नम स्तुत्य महादेवं गुरुच्शास्त्र विशारदं भविष्यत्य वोधाय वक्षेह पंच पंक्षिका ?
अन्त : तापन्तारां विराज षतिया वन्नोदयते चन्द्रमा उदकतेतु सहस्रां शौन तारा नच चंद्रमा। इत्यावंतिकाचार्य गरा मिहिर कृतौ पंचपक्षी सम्पूर्णम् लिख्यते जी ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1175
शीर्षक : दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं
पृष्ठ संख्या : 31
आकार : 18 x 12 स०म० लिखित : 13 x 7 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े में सजिल्द इस रचना में काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है जबकि हाशिये के लिए संतरी एवं काली स्याही प्रयुक्त की है। प्रति पृष्ठ छः पंक्तियाँ अंकित हैं।

विशेष विवरण : संवादात्मक शैली में महर्षि व्यास तथा कृष्ण एवं वेशपायन एवं युधिष्ठिर के संवाद के माध्यम से महाभारत शत सहस्त संहिता के अंतर्गत दिव्य सहस्र नाम स्तोत्रं का महत्त्व बताया गया है। इससे पहले सभी शारीरिक अंगों की उपासना की गई है।

आरम्भ : उों श्री भगवते वासुदेवाय नमः।। उों यस्य स्मरण मात्रेण जन्मसंसार वंयनात् विमुच्यतेनमस्त स्मैविस्मवे प्रभ विस्मवे

अन्त : इति श्री महाभारते शतसाहस्रस्र्यां संहिताया वैयासिमां शांति पर्वणि उत्तमानुशासनेदान धर्मोत्तरे श्री विस्मो दिव्य सहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1176

शीर्षक : जोतस प्रकाश

लेखक : कवि निहाल

स्थान : पटियाला

पृष्ठ संख्या : 98

आकार : 11.5 x 14.5 स०म० लिखित : 12 x 9 स०म०

सामान्य विवरण : गत्ते में बंधा प्रस्तुत ग्रंथ काली स्याही से लिखा गया है । पृष्ठ 71 तक मोटे अक्षरों में लिखा गया है उसके पष्चात् बारीक लिखाई प्रयुक्त की है रचना के आरम्भ से पहले वाले पृष्ठ पर स्याही बनाने की विधि बताई गई है ।

विशेष विवरण : चार सौ पैंतीस (435) पदों में रचित इस रचना को कवि निहाल ने महाराजा कर्म सिंह के आश्रम में पूरा किया है । इसमें उन्होंने ज्योतिष सम्बन्धी विभिन्न योग एवं महूर्तो पर विचार किया है । रचना के आरम्भ में दो खाली पृष्ठ हैं जिसमें से एक पृष्ठ फटा हुआ है।

आरम्भ : उों श्री गणेशय नमः।। दोहरा।। श्री गुर गणपत गवर सुत भालचन्द सुख रूप। विघन हरो मंगल करो जै जै जै गण भूप ।१।

अन्त : इति श्री महाराज राजाधिराज महाराज राजेष्वर कर्म सिंह महिंदर बहादर हित कव निहाल विरचितं जोतस प्रकाष ग्रंथ उत्तरार्ध संपूर्णम् श्रुभम् भूयात महावीर शिव शिव शिव शिव ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1177

शीर्षक : श्री संहिता

लेखक : वाजसेन

पृष्ठ संख्या : 196

आकार : 23 x 12 स०म० लिखित : 19 x 9 स०म०

सामान्य विवरण : संजिल्द ग्रंथ 'श्री संहिता' को ठीक से जिल्द चढ़ाई गई क्योंकि कृति का आरम्भ अन्तिम पृष्ठ से होता है और आरम्भ में अन्तिम पृष्ठ जोड़ा गया है। प्रति पृष्ठ 7 पंक्तियाँ हैं। ग्रंथ की हालत ठीक है लेखक ने लाल तथा काली स्याही का प्रयोग किया है। पहला पृष्ठ पीले वर्ण का है।

विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति 'श्री संहिता' में 20 अध्याय हैं। सर्वप्रथम वेदों की वंदना करते हुए कवि ने सभी देवताओं की वन्दना कर फिर यज्ञ विधि का वर्णन किया है। बीच–बीच में अन्य लिपि शब्द का प्रयोग भी मिलता है।

आरम्भ : उेंम ।। हरि ।। उंम्।। श्री गणेषाय नमः। उों।। श्री यजुर्वेदाय नमः ।। हरि।। इषेच्वा।। इषेच्वोंर्ज्ज्वा धायंवस्त्यदेवोवः सविता आर्प्ययतुश्रेष्ट तमाय कर्म्मण अध्याय हमग्घाइन्द्राय भाग म्प्रजावतीरन मीवीड अयक्ष्मामावस्त।

अन्त : अश्विनपिबताम्म धुसररचआसजो षसा।। इन्द्रः सुत्रामा छत्र हाजजुन्न सोम्म्यम्मधु।। इति वाजसेनाय शाखायां संहिताया पविछशो अध्याय।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1178 संग्रह (क)

शीर्षक : यति निदान

पृष्ठ संख्या : 55

आकार : 15 x 24 स०म० लिखित : 11 x 18 स०म०

सामान्य विवरण : संग्रह की पहली रचना। काली स्याही का प्रयोग। प्रति पृष्ठ 20 पंक्तियाँ। ग्रंथ पर जिल्द है पर पृष्ठ खुले हुए हैं।

विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में अनेक दोषों के निदान के उपाय वर्णित हैं। कृति के आरम्भ में एक पृष्ठ पर कई रोगों के नुस्खे बताए गए हैं।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः प्रणम्य जग दुत्पत्ति स्थिति संहारकारिणं स्वर्गापवर्गयों हव्रि त्रैलोक्य शरणं शिव
अन्त : अतः कष्टानिजापंते सप्तचैका दशवतु कुष्यनि सप्तधा दोषै पृथा गूह द्वंद्वैः समागतै सर्वेघपि चदोषे षुव्ययदे शोधिक स्ततः प्रतिलक्ष्णाः खरस्पर्शः स्वेदास्वेदौ विवर्णता।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1178 (ख)
शीर्षक : रुग्विनिश्चाख्यौ
लेखक : श्री मायव
पृष्ठ संख्या : 41
आकार : 15 x 24 स०म० लिखित : 11 x 18 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की दूसरी रचना।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में विभिन्न रोगों विशेषतः स्त्री रोगों के उपचार बताए गए हैं।
आरम्भ : उों विरोयीत्पन्नपाना निद्रवस्त्रिग्यगुहूणि च भुंजतामा गतांद्वर्दि वेगाश्चान्याअतिघ्नतां।।१।।
अन्त : इति श्री मायव विरचिते रुग्वि निश्चयाख्यौ वैद्यक ग्रंथः समाप्तिमितः।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1178 (ग)
शीर्षक : मदनविनोद निघंटौ
लेखक : मदनपाल
रचनाकाल : संवत् १६१४
पृष्ठ संख्या : 77
आकार : 15 x 24 स०म० लिखित : 11 x 18 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की तीसरी रचना । पृष्ठों के किनारों पर भी कुछ पंक्तियाँ अंकित हैं।
विशेष विवरण : चौदह अध्यायों में मदनपाल ने विभिन्न महीनों, विभिन्न पक्षियों एवं मानवों के लक्षणों का वर्णन किया है। अन्तिम पृष्ठ पर कई आयुर्वेदिक नुस्खे लिखे गये हैं ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः श्री धन्वंतरिये नमः। वीजं श्रत्तीनासुघनं मुनीनां जीवं जएनां महदादि कानां अग्नेय सम्रंभव पातकानां किंचिन्महः श्यामलमाश्रयामि ।। १।।
अन्त : इति श्रीमदनपाल विरचिते मदन विनोदे निघंटौ प्रशस्ति वर्ग श्व्रनुर्द्दषः १४ समाप्तौयनिघंटौ संवत् १६१४.

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1179
शीर्षक : जती निदान
लेखक : गंगाराम यती
रचनाकाल : १८८३
पृष्ठ संख्या : 92
आकार : 14 x 28 स०म० लिखित : 11 x 22 स०म०
सामान्य विवरण : प्रस्तुत ग्रंथ सजिल्द है। काली स्याही से लिखा गया है। पृष्ठ के दोनों ओर लाल स्याही से दो सीधी लाईनें हाशिया स्वरूप खींची हैं। ग्रंथ उल्टा जोड़ा गया है। अन्तिम पृष्ठ का कुछ भाग फटा है। दोहा संख्या दर्शाने हेतु संतरी स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण : जती निदान नामक इस कृति के 57 अध्याय हैं। इसमें कवि गंगाराम ने अपने सम्प्रदाय के नियमों पर छंदों के माध्यम से विचार किया है।
आरम्भ : श्री रामायेनमः श्री गणेसाऐ नमः श्री जिने दाथनः अथ जतीनिदांन भाषा लिष्यते दो०
अन्त : शेष कवि गंगाराम यती विरचते यतीनिदाने सख्यादि कथनपंचविषतमो प्रकास यती निदांनं ग्रंथ संपूरण समाप्तः समत १८८३ मिती आसोज सुदि १३ दसी लिष।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1180
शीर्षक : मुहूर्त्त मार्त्तड टीका
लेखक : नारायण भट्ट

रचनाकाल : 1493 विक्रमी
पृष्ठ संख्या : 76
आकार : 30 x 16 स०म० लिखित : 24 x 11 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ते में बंधे हुए इस ग्रंथ का पृष्ठ–पृष्ठ बिखरा पड़ा है। प्रति पृष्ठ 14 पंक्तियाँ हैं और केवल काली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण : मुहूर्त मार्तण्ड नामक इस रचना में 150 पद हैं जिसके अंतर्गत विभिन्न शीर्षकों में मार्तण्ड ऋषि द्वारा बताए गए मुहूर्तों का वर्णन किया गया है। पृष्ठ पीले पड़ चुके हैं।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः मार्त्तडोवतुवाचनः पदैर्ज़ा ड्यत मोहरः। वृत्त वड़ूतनुःसेव्योभीष्ट दो विश्वव लोचनः।। १।।
अन्त : अथ ग्रंथ स्याशिष मनुसृभाह अंकेन्द्रित शालिवाहन जन्मतः अंकेन्द्र १४६३ प्रमिते वर्षे तपसि माधे मार्तण्ड कृतः नामकै देश ग्रहणे नाम ग्रहणं अथ उद्‌गतो मार्तण्डः अलं अति शर्येन जयेन जयंतु यद्वायमल मार्तण्डा मंडद्‌गतं उदयं प्राप्तं जयतु सर्वोकर्षेण वित्ततु इति मुहूर्त मार्तण्ड व्याख्या समाप्ता शुभं भूयात ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1181
शीर्षक : जातक अलंकार
लेखक : हरिभानु
लिपिकार : काश्मीरी दयाराम पंडित
लिपिकाल : १८७५ श्री संवत्
पृष्ठ संख्या : 39
आकार : 15 x 30 स०म० लिखित : 10 x 23 स०म०
सामान्य विवरण : ग्रंथ में काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया गया है। बिना हाशिये के तथा प्रति पृष्ठ 12 पंक्तियाँ (प्रस्तुत गंथ ग्रंथाकार न होकर अलग–अलग पन्नों में बिखरा है उन सब पन्नों को गत्तों में बांधा गया है। सारे पन्ने बड़ी नाजुक स्थिति में हैं । पन्नों को कीड़ा लगा है जिसके कारण सारे पन्नों का खाली हाशिया लगभग छेदयुक्त हो गया है तथा अशुद्धियाँ ठीक करने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत ग्रंथ में छः अध्याय हैं। इन अध्यायों में जातक के जन्म में पड़ने वाले ग्रहों का विश्लेषण किया गया है। जैसे– चन्द्र, सूर्य, बुध, मंगल, शनि, राहु आदि ग्रहों का वर्णन किया गया है।
आरम्भ : उों नमः शिवाय उों श्री गणेशाय नमः स्वावर्ण व्रह्म विद्या परिचय चतुरं श्री श्वकं व्यास पुत्रंतत्वा चार्य्यं मुनीनां हरिपद कमले प्रेम विश्वास सभाजां शिष्टेस्वेष्ट देवं श्रमति समयिगतं मायंव भार्गय तामावैरुद्‌भव्य तेस्मै प्रवर मति मुदे जातकाऽलंकृति श्रीः।। १।।
अन्त : इति श्री मच्दुक्तोय नामक हरि भानु भाविता जातकालंकार टीका जातकालंकार श्री समाख्याप्तानि नमिता समाप्तम्।। श्रुभमस्यात्।। श्री संवत् १८७५ ।। लिखितं काश्मीरी दयाराम पंडिन्निकू। शिव ।। शंकर ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1182 संग्रह (क)
शीर्षक : श्री पद्मपुराण पातालखंड
पृष्ठ संख्या : 152
आकार : 36 x 16 स०म० लिखित : 28 x 12 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े सहित सजिल्द यह ग्रंथ काली स्याही से लिखा गया है। पृष्ठों के हाशियें संतरी स्याही से बनाए गये हैं। रचना का पहला पृष्ठ नहीं है। प्रति पृष्ठ 12 पंक्तियाँ अंकित हैं।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में पाताल खंड के अंतर्गत शिव राघव के संवाद का महात्म्य 114 अध्यायों में वर्णित किया गया है। इसमें महीनों के महात्म्य का वर्णन भी कृष्ण और शिव द्वारा किया गया है। इस खंडित प्रति का प्रथम मौलिक पृष्ठ साथ में नहीं है।
नोट : शायद पहले पृष्ठ की नकल कर एक पृष्ठ लगाया गया है जो किसी अन्य की लिखावट है पर पूरी विषय वस्तु उस पर नहीं उतारी गई है।
आरम्भ : वैस्म वोसि मुने तस्य प्रियोसि परमार्थ वित् तेनतामेव पृच्छामि ब्रह्म ब्रह्मवि उत्तम श्रोतारमथ वक्ता रंदृष्टा रंदृष्टारं पुरुष हरिं।
अन्त : शिव राघव संवादसर्ग द्योघनि कृतनं यः पढ़े छण याद्वापिसयाति परमंपदं इति श्री पद्म पुराणे पाताल खंडे शिव राघवं संवादे उदरि भागे राम मोक्षोनाम चतुशोत्तरशतोअध्यायः ।। ११४ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1182 (ख)
शीर्षक : श्री पद्मपुराण पाताल खंड
पृष्ठ संख्या : 153–187
आकार : 36 x 16 स०म० लिखित : 28 x 12 स०म०
सामान्य विवरण : सजिल्द ग्रंथ की यह दूसरी रचना है। प्रति पृष्ठ 12 पंक्तियाँ हैं।
विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति में वृंदावन माहात्म्य के अंतर्गत कृष्ण के चरित्र की महानता का वर्णन संवाद शैली में किया गया है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः। ऋषय उवाच सम्यक् श्क्तो भागवतो रामाश्च मेस्वमेयकः इदांनीवद माहात्मयं श्री कृस्मस्यमहात्मनः सूत उवाच।
अन्त : स्वर्गापवर्ग संपति कारणं पापनाशनां भक्ता पठंतिये नित्यं सानवाविस्मुतप्पराः नतेषांपुनसवृत्ति र्विस्मु लोकात्कथंवन इति श्री पद्मपुराणे पाताल खंडे श्रीवृंदावन माहात्मे अशीतितमोध्यायः ८३ समाप्तः वृंदावन माहात्मये संपूर्णं।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1183
शीर्षक : श्री पद्मपुराण ब्रह्मखंड
पृष्ठ संख्या : 35
आकार : 35 x 15 स०म० लिखित : 28 x 12 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े सहित सजिल्द इस पोथी के 35 पृष्ठ हैं। काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया गया है। प्रति पृष्ठ संतरी रंग का हाशिया बनाया गया है। हर पृष्ठ पर 12 पंक्तियाँ अंकित हैं।
विशेष विवरण : 26 अध्यायों में रचित इस कृति में सूत एवं शौनक ऋषि का संवाद है। सूत के प्रश्न तथा शौनक ऋषि के उत्तर इसमें प्रमुख हैं। इसमें जीव के कर्म और मृत्यु के पश्चात् उसे प्राप्त होने वाले कर्मों के फल का वर्णन किया गया है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः। शौनक उवाच कल्पै समागते सूत प्राणिनांकेन कर्मणा उद्धारो वैभवे तस्मा कथयस्वममाग्रतः सूत उवाच।
अन्त : कोटि पुरुषानूगृहीत्वा नरकं व्रजत् भ्रातरं लंघयेघस्त धंर्मतेषांविलंघति तृपाग्नितस्करै र्विप्रसत्यं सत्यं सुनिश्चितं इति श्री पद्मपुराणे ब्रह्म खंडे सूत शौनक संवादेशद्विषतितमोध्यायः। २६ ब्रह्म खंडे संपूर्णं।। २६ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1184
शीर्षक : श्री पद्मपुराण (आदिखंड)
पृष्ठ संख्या : 106
आकार : 37 x 17 स०म० लिखित : 28 x 12 स०म०
सामान्य विवरण : सजिल्द गत्ते–कपड़े सहित , काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए । संतरी रंग के हाशिये से सुसज्जित किया गया है। प्रति पृष्ठ 12 पंक्तियाँ, पन्नों के किनारे कीड़े द्वारा बिल्कुल नष्ट कर दिए गये हैं व बड़ी जर्जर स्थिति में हैं।
विशेष विवरण : प्रस्तुत हस्तलिखित ग्रंथ 'श्री पद्मपुराण' में आदिखंड का वर्णन है जिसमें 62 अध्याय हैं। सभी अध्याय संवादात्मक शैली में लिखे गये हैं जिनमें आरम्भ में ऋषि तथा सूत जी का संवाद है तथा तत्पश्चात् वसिष्ट ऋषि दिलीप, युधिष्ठिर, नारद, मार्कण्डेय, कुबेर आदि के संवाद हैं। प्रस्तुत कृति में लेखक ने दिव्य नगरों, कर्मयोग, विभिन्न आश्रमों जैसे गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम के धर्मों की चर्चा की है। ग्रंथ में दो स्थानों पर कुछ अध्याय आगे पीछे रखे गये हैं जैसे 36वां अध्याय पहले आया है 35वां बाद में । इसी प्रकार 41वां अध्याय पहले रखा गया है 40वां बाद में। आरम्भ में मंगलाचरण के पश्चात् पाताल खंड का वर्णन किया गया है फिर आदि खंड आरम्भ होता है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों यंव्राभावरुणेन्द्र रुद्र मरुतः रुवन्वंतिदियैः स्रवैः वेदैः स्वांग पद क्रमोपनिषदै र्गायोंति संसामगाः ध्यानावस्थित तह तेनमनसाय शांतियंगोगिनो यस्पांतनविडः स्वरामरगणदिवाय तस्मै नमः १
अन्त : सर्व वेदास्नथा यीतास्नतत् कर्म कृतं तथा न्रध्याएस्रेह लोका वदत हरि नामै कम तुलं यपी डेवीचीनांस्नरवतर णमिप्तानिलभत इति श्री पद्य पुराणे आदि खंडे द्दिप्तेतमोध्यायः ६२ समाप्तोयंआदि खंडः १ ।। अतः परंभूमिखंडे १ श्भम् ।।१।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1195
शीर्षक : इतिहास तिमिर नाशक
रचनाकाल : 1771 A.D. (खंड एक)
पृष्ठ संख्या : 86
आकार : 23 X 16.5 स०म० लिखित : 19 X 13.5 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े की जिल्द में प्रस्तुत रचना इतिहास से सम्बन्धित है। पृष्ठों का हाशिया कीड़े द्वारा खाया गया है। प्रति पृष्ठ 20 पंक्तियां व काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया है।
विशेष विवरण : प्रस्तुत इतिहास ग्रंथ में राजा इक्ष्वाकु से लेकर 1788 तक लार्ड लेक के आगमन तक का वर्णन है। लेखक ने सारी तिथियां देते हुए लगभग रामायण काल से आधुनिक काल तक का इतिहास एक खंड में लिखा है तथा दूसरे खंड में अंग्रेज़ी इतिहास के देन की सूचना दी है। रचना के अंत में दिल्ली पर राज्य करने वाले मुसलमानों की सूची दी है तथा अंत में प्रमुख घटनाओं की भी सूची दी है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः इतिहास तिमिर नाशक पहला खंड क्या पसे भी मनुष्य हैं जो अपने वापदादा और पुरखों का वृत्तांत सुनना न चाहें ।
अन्त : इसी अर्से में लार्ड लेक अंगरेजी फौज लेकर वहां पहुँच गया वादशाह को पिंशन मुकर्रर कर दी बह चैन में अपने दिन काटने लगा अंगरेजों का मुफस्सहाल दूसरे खंड में लिखा जाएगा ।। इति ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1212 संग्रह (क)
शीर्षक : श्री विद्वद्देवज्ञ मुकुट भूषण
लेखक : माधव ज्योति
पृष्ठ संख्या : 50
आकार : 28 X 15.5 स०म० लिखित : 23 X 12 स०म०
सामान्य विवरण : पृष्ठ – पृष्ठ हुई इस कृति में काली स्याही प्रयुक्त की गई है । प्रति पृष्ठ 10 पंक्तियां हैं । लिखाई साफ एवं स्पष्ट है ।
विशेष विवरण : 50 पृष्ठों की इस कृति में विभिन्न ग्रहों के प्रभाव का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः हेस्बमधुपस्य शीर्षमधुलिदभसक्न पादाम्बुमित्यादिका अष्टौटीबन श्लोकः पूर्वार्दे लिखिताए वात्र पुनर्नलिखिताः
अन्त : इति श्री विद्वद्दैवज्ञ मुकुट भूषण ज्योति र्विद्गोविंदसून्नु माघवज्योति र्विद्विरचितायां समाविक विवृतौशि श्रुवोधिन्यांदशा गणिततत्फल भावम्य ग्रह फलात्मक प्रकरणं समाप्ति मागात् ।। उों उों उों । २१

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1212 (ख)
शीर्षक : शिशु बोधिनी
लेखक : गोपालधर पंडित
रचनाकाल : सन् १८६५
पृष्ठ संख्या : 69
आकार : 28 X 15.5 स०म० लिखित : 23 X 12 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की दूसरी । पूर्ववत्
विशेष विवरण : विभिन्न अध्यायों में विभिन्न राशियों में पड़ने वाले लग्नों एवं उनके फलों पर विचार किया गया है ।
आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः हेरंवंमद्यपस्य शीर्ष गहमलिट् संसत्ता पादांवुजं गौरी हृत्कमल प्रकाश तरणिं विध्राटन पावकं ....
अन्त : इति श्रीविद्व दैवज्ञ मुकुट भूषण गोविंद ज्योतिर्वित्सू नु माधव ज्योति र्विद्दरचिता शिशुबोधिनी नाम्नी संज्ञा विवेक विवृत्तिः संपूर्ण भवूत ।। इंदपुस्तकं नानकचंद पुष्कारण। स्वपठनार्थ श्रुभ संवत् १८६५ मार्गमामे सिते पक्षे सपृभ्या शनिवासरे गोपालधर पंडितेननीलाकंठी चलिख्यते ।। श्रुभमस्तु सर्वजगताम् श्रकप्मार्गणमान्त ।। श्रभन् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1213
शीर्षक : जालंधर माहात्म्य

लेखक : सूत ऋषि (व्याख्याता)
रचनाकाल : संवत् १८६४
पृष्ठ संख्या : 95
आकार : 27 X 16 स०म० लिखित : 20 X 10 स०म०
सामान्य विवरण : पृष्ठ – पृष्ठ हुई यह कृति काली एवं लाल स्याई से लिखी गई है। लगभग सभी पृष्ठ कीड़े द्वारा जर्जर कर दिए गए हैं । प्रति पृष्ठ 12 पंक्तियां हैं ।
विशेष विवरण : 2738 दोहों में जालंधर से लेकर कांगड़ा–कश्मीर तक मिलने वाले मंदिरों तथा ऋषियों का वर्णन है। आरम्भ लिखते समय जो खाली स्थान छोड़ा है कृति का वह पृष्ठ कीड़े द्वारा इतना जर्जर कर दिया गया है कि पढ़ा नहीं जा सकता ।
आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। श्री गुरुसवेनमः उों अलि .... अविल गणेद्रि .... बदित चरण सरोजः ।।
अन्त : इति श्री जालंधर माहात्म्यं संपूर्ण समाप्तम् ।। संवत् १८६४ भाद्रोमास्यैकृघ्म मषे पंचम्यां संपूर्ण श्रुभ वस्तु सर्वज्ञगताम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1214
शीर्षक : हायनरत्न
लेखक : बलभद्र पंडित
रचनाकाल : संवत् १८७०
पृष्ठ संख्या : 73
आकार : 27 X 10 स०म० लिखित : 17 X 11 स०म०
सामान्य विवरण : पृष्ठ – पृष्ठ हुई तथा बिना जिल्द के यह 73 पृष्ठों की कृति है। आरम्भ के कुछ पृष्ठ कीड़े द्वारा जर्जर कर दिए गए हैं पर पठनीय हैं । काली, लाल स्याही का प्रयोग करके सुन्दर लिखाई में कृति लिखी गई है । प्रति पृष्ठ 14 पंक्तियां हैं ।
विशेष विवरण : हायन रत्न नामक इस कृति में अलग–अलग भावों का फल, अलग–अलग दिनों का एवं राशि का प्रभाव नक्षत्र के आधार पर बताया गया है । कवि ने बीच–बीच में लग्न एवं राशियों के आधार पर उनकी विस्तृत व्याख्या हेतु कुण्डलियां बनाई हैं ।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। गणाधि पंसमस्कुरोः पदाज्वं दामोदराख्यं पित रंचनत्वा प्राचीनपघैर्बलभद्र नामाकरोति सदवायनरतन्संज्ञग् ।।१।।
अन्त : इति श्री मद्दैवज्ञवर्य पंडित दामोदरात्म बलभद्र पंडित विरचिते हायनरत्ने मास प्रवेशादि वि चासध्यायोष्टमः ।।८।। समाप्तोयं ।। श्रुमनटक संवत् १८७० वेशाषश्रुक्ल सप्तम्यां भृगुवारान्वितायां समाप्तोयं हायरत्न ग्रंथः ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1215
शीर्षक : पूर्व पक्षावली
लेखक : मदाली मिश्र
रचनाकाल : संवत् १८८६
स्थन : काशी
पृष्ठ संख्या : 58
आकार : 32 X 13 स०म० लिखित : 24 X 6 स०म०
सामान्य विवरण : कृति बिना जिल्द के पृष्ठ – पृष्ठ है । अधिक पृष्ठ कीड़े द्वारा जर्जर कर दिये गए हैं। काली स्याही का प्रयोग किया गया है । प्रति पृष्ठ आठ पंक्तियां हैं । लिखाई सुन्दर व स्पष्ट है ।
विशेष विवरण : कृति पूर्व पक्षावली में पक्ष का विस्तार व उसका प्रभाव वर्णित है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। असिद्वंवहिर गमंतरंगे अख्या अर्थः वाह ऊठ सूत्रस्या मूठ ग्रहणं ज्ञापकम् ।।
अन्त : इति श्री पूर्वपक्षावली समाप्तं सुभमस्तु सुभभूपात् ।। लिखित मदाला मिश्र काशी मध्येई स्थित मीरघा ८ संवत् १८८६।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1216
शीर्षक : श्री स्कंध पुराण (केदार खंड)
रचनाकाल : संवत् १६१५

पृष्ठ संख्या : 28
आकार : 36 X 15 स०म० लिखित : 31 X 11 स०म०
सामान्य विवरण : बिना जिल्द के इस कृति का पृष्ठ – पृष्ठ अलग हुआ है तथा कीड़े द्वारा पृष्ठ जर्जर कर दिए गए हैं जिससे कृति खंडित हो गई है । प्रति पृष्ठ 17 पंक्तियां हैं ।
विशेष विवरण : श्री स्कंध पुराण के केदारखंड को तेईस अध्यायों में सरल भाषा में लिखा है । प्रत्येक अध्याय में संवादात्मक शैली में अलग – अलग स्थानों एवं भावों का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः सूत उवाच अथ पूर्व महाभागः स्कंदोवै पार्वती सुतः संर्व कैलास महात्म्यं कपया मास सुव्रतः ।। १।।
अन्त : इति श्री स्कंध पुराणे केदार खंडे मायापुरी कुञनाम्रके हरिद्वार माहरत्म्यं त्रयोविंशोध्यायः २३ सग्स्त गंधा महात्म्य पथः।। शुभमस्तुः संवत् १६१५ चैत्रकृस्मः ५ वस्यो वुधवासरे ग्रंथ परिसमाप्तिः।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1247
शीर्षक : गीता व्याख्या सुवोधिनी
लेखक : श्रीधर स्वामी
रचनाकाल : संवत् १८८१
पृष्ठ संख्या : 98
आकार : 29 X 18 स०म० लिखित : 23 X 12.5 स०म०
सामान्य विवरण : पृष्ठ – पृष्ठ हुई यह कृति काली स्याही से लिखी गई है पहला तथा अन्तिम पृष्ठ कीड़े द्वारा ज़र्जर कर दिया गया है । प्रति पृष्ठ 18 पंक्तियाँ हैं ।
विशेष विवरण : श्रीमद भागवत् गीता के अठारह अध्यायों की व्याख्या श्रीधर स्वामी द्वारा सरल संस्कृत भाषा में की गई है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः शेषाशेष मुख व्याख्या चातुर्य्य त्वेक वक्ततः दधानमद्भुतं वंदे परमानंद माधवं ।। १।।
अन्त : इति श्री भगवद्गीता सुटीकायां सुबोधिन्यां श्रीधरस्वामि विरचिताया परमार्थ निर्णयोनामाष्टादशोध्यायः १८ संवत् १८८१

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1248
शीर्षक : महाभारत शतसहस्र संहिता
लेखक : वेदव्यास
रचनाकाल : संवत् १८४४
पृष्ठ संख्या : अलग – अलग पर्वों की अलग – अलग पृष्ठ संख्या
आकार : 34 X 21 स०म० लिखित : 25 X 14 स०म०
सामान्य विवरण : जिल्द रहित ग्रंथ । काली तथा लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखावट सुन्दर है। पृष्ठ किनारों से काफ़ी जर्जर हो चुके हैं । प्रति पृष्ठ 16 पंक्तियाँ अंकित हैं ।
विशेष विवरण : वेदव्यास कृत महाभारत की शतसहस्र संहिता के अंतर्गत अलग – अलग पर्वों को सरल भाषा में संवाद रूप में प्रस्तुत किया गया है ।
आरम्भ : उों नमो भगवते वासुदेवाय ।। उों नारायणं नमस्कृत्य नंरचैव तरोत्रमं ।। देवी सरस्वती व्यासं ततो जयमुदीग्येत् ।। जन्मेजय उवाच ।। उों कथं युयुधिरे वीराकुरु पांडव सोमकाः।।
अन्त : इति श्री महाभारते शतसहस्र्यो संहितायां वैद्व्यासिकयां सभा पर्वणि ।। संवत् ।। १८४४।। मार्ग श्रुति ।। नवम्यां।। परतः ।। दशम्यां ।। रविवासराचितायां ।। यदक्षतरपदभ्रष्ट मात्रा हीनंचयद्गतं ।। त्वयातत्क्षम्यतस्ंदेवि कृपयापरमेश्वरिं ।। शुभंभवतु ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1249
शीर्षक : पद्मपुराण
रचनाकाल : संवत् १८६८
पृष्ठ संख्या : 256
आकार : 24 X 14 स०म० लिखित : 18 X 9 स०म०

सामान्य विवरण : पृष्ठ – पृष्ठ हुई यह कृति पद्मपुराण सुंदर लिखावट में काली स्याही से लिखी गई है अंत के पृष्ठ कीड़े द्वारा जर्जर कर दिए गए हैं । प्रति पृष्ठ आठ पक्तियाँ हैं ।

विशेष विवरण : दो सौ छप्पन पृष्ठों की इस रचना में पृष्ठ एक के बाद आठ नम्बर मिलता है । बीच के छः पृष्ठ नहीं हैं इसी प्रकार अंत में पृष्ठ 253 के बाद 256 है बीच के दो पृष्ठ नहीं हैं । इसमें प्रत्येक दिन, पक्ष, मास के आधार पर उनके महात्मय का वर्णन है ।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः नमस्कृत्य रमानाथं भट्ट विट्ठल सूनुना कृत्य रतनावली रम्या रामचंद्रेण रच्यते तत्र तिथि कृत्येतु ।

अन्त : इति मंत्रः प्रशक्त स्पपक्षोतरं तत्रैव अधिमासे सेप्रायदारा जनू द्वादशीचाथ पूर्णिमा वांती मग मद्ग्रध्यः सर्वेषामुपकारकः संवत् १८६८ विश्र्वा वसुनाम सरवत्स रेलिप्तमिंद पुस्तके ज्योर्ति वशो द्ववेन मुसद्दी रामेण तीर्थ राज प्रयोग स्वार्थ परार्थत्र्च श्री विद्दुमाय वोजयति तरां ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1250
शीर्षक : ल्म कीमे
रचनाकालः– संवत्ः १८६६
पृष्ठ संख्या : 19
आकार : 30 X 13 स०म० लिखित : 25.5 X 9.5 स०म०
सामान्य विवरण : उन्नीस पृष्ठों की यह कृति खुली हुई है और सारे पृष्ठ कीड़े द्वारा जर्जर कर दिए गए हैं । काली स्याही से लिखा गया है । प्रति पृष्ठ 11 पंक्तियाँ हैं ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में विविध रोगों के लक्षण और फिर उनके निवारण हेतु औषधि तैयार करने की विधि एवं प्रयोग विधि बताई गई है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। गंध के नवे श्रु .... समन्दितं .... नाग पत्र विलेषिंत १ त्रि ३८ म्रियते नाग जायते कुकुंप्रभ गुजै कर चितं तारं हेम .... निश्र्चिते ।। २।।
अन्त : धमेतरं ध्रमूखायांत्रि .... च पुनः पुनः दति र्भवति तेनात्र नात्र कार्या विचारण १ इति श्री सं १८६६ उो श्री क्रां क्रिं कृं क्रौं क्रः श्रुत्र पापं विमोचयन्या ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1251
शीर्षक : कर्म विपाक
लेखक : राम मजी सहाय
पृष्ठ संख्या : 35
आकार : 31 X 12 स०म० लिखित : 28 X 8 स०म०
सामान्य विवरण : खुली हुई पर पूर्ण प्रस्तुत कृति कर्म विपाक काली स्याही में लिखी गई है । पृष्ठ कीड़े द्वारा जर्जर किए गए हैं । प्रति पृष्ठ 10 पंक्तियां हैं ।
विशेष विवरण : नारद–ब्रह्मा के संवादों के माध्यम से कर्मों के फल लाभ आदि पर विचार किया गया है। बारह अध्यायों में मानव जीवन के कर्मों की चर्चा की गई है ।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः नारायणं नमस्कृत्यनरं चैव नरोतमम् देवीं सरस्वती व्यासततो जय मुहीरयेत् ।। १।।
अन्त : इति श्री सूरर्याणर्वे कर्म्मविपाके ब्रह्मा नारद संवादे द्वादशोध्याय : १२ माघस्यकृस्म पक्षस्य रविवार त्रयोदशी याण नेत्रमिते वर्षे नवचंद्र शताधिक १

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1252 (संग्रह क)
शीर्षक : हायनरत्न ग्रंथ
लेखक : दामोदर
पृष्ठ संख्या : 199
आकार : 15 X 24 स०म० लिखित : 11 X 16 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की पहली कृति । रचना के पृष्ठों के सारे किनारे कीड़े द्वारा नष्ट कर दिए गए हैं। लेखक ने काली स्याही का प्रयोग किया है । प्रति पृष्ठ 22 पंक्तियां हैं ।
विशेष विवरण : यह एक ज्योतिष ग्रंथ है जिसमें सभी भाव और उनके लक्षणों पर विचार किया गया है। रचना के अंत में किसी दूसरे कवि के द्वारा लिखी गई कुछ पंक्तियां जोड़ी गई हैं।

आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः।। उों सरस्वत्यै नमो नमः।। उों श्री गुरुभ्योनमः।। उों गणाधिपराम गुरोः पदाब्जं दामोदराख्यं पितरंचनात्वा प्राचीनपथै र्वलभद्रनामा करोति सद्वाय न रत्नसंज्ञम् १
अन्त	:	इति वर्ष पत्रलिखनक्रमः निर्मथ्यसत्ताजिक शास्रसि हुंस मुहं तो हामनरत्न संज्ञे सहर्ष पत्रीकरणो यतानां ज्योतिरैव्रिदांकंट विभूषणय ।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1252 (संग्रह ख)
शीर्षक	:	चिंतामणि प्रेमेयम्
लेखक	:	राधाकृस्म
रचनाकाल	:	संवत् १६००
पृष्ठ संख्या	:	75
आकार	:	15 X 24 स०म० लिखित : 11 X 16 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग ।
विशेष विवरण	:	चिंतामणि प्रेमेय नामक इस रचना में लेखक राधाकृष्ण ने विभिन्न कुण्डलियों एवं चित्रों की सहायता से ग्रहों एवं नक्षत्रों का फल एवं फलादेश प्रस्तुत किया है ।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। उों श्री सरस्वत्यें नमः ।। उों श्री गुरवेनमः उों प्रणभ्य .... त्फलदायकं रविं ग्रहेषुचिंता मणिम प्रमेयम ....
अन्त	:	इति श्री लवपुर निवास मिश्र दिवान चंद्रात्मजरा राधाकृस्म विरचिते अछरह मास दिद्वयादिफलं विशेष निनूपणं गुफं षष्टः ६ संवत् १६०० माघ श्रुदि ३ सामवारे पंडित कृहम कोल लिख्यते ।। श्रृंभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1253
शीर्षक	:	शब्द वारिधेः
पृष्ठ संख्या	:	36
आकार	:	28 X 15 स०म० लिखित : 21 X 9 स०म०
सामान्य विवरण	:	गत्ते कपड़े की जिल्द के भीतर कृति का हर पृष्ठ अलग – अलग है । पृष्ठ की खाली जगह कीड़े के द्वारा जीर्ण – शीर्ण हो चुकी है । काली, लाल स्याही का प्रयोग किया गया है । कृति अधूरी है । पृष्ठ 36 के बाद भी विषय–वस्तु चल रही है। प्रति पृष्ठ 11 पंक्तियाँ हैं ।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत कृति व्याकरण पर आधारित है । इसमें वर्ण विचार, स्वर–व्यंजन विचार, दीर्घ–लघु, लिंग एवं कारकों पर विचार किया गया है । सप्तम कारक के बाद के पृष्ठ नहीं हैं ।
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। प्रणम्य परमात्मानं वाल धी वृद्धि सिद्धये ।। सारस्वती ।। मंजुकुर्वे प्रक्रियां नास्ति विस्तरां ।। १ ।।
अन्त	:	बिना सहनम सूसते निर्धारणे स्वाम्पादि भिश्र एतैरपि योगे द्वितीयाद्या विभक्तियो भंवति विनापाप सर्व फलति अंतरेणा ऽसिणीकि जीवतेन अंत रात्वंः

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1254
शीर्षक	:	उजार वैद्य संगत
पृष्ठ संख्या	:	95
सामान्य विवरण	:	सारी कृति जर्जर हो चुकी है और इस प्रकार जुड़ गई है कि कोई भी पृष्ठ पठनीय नहीं है।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1255 (संग्रह क)
शीर्षक	:	वेदोक्त शिवाच्चणम्
लिपिकार	:	संतराम
लिपिकाल	:	संवत् १८३५
पृष्ठ संख्या	:	88

आकार : 20 X 15 स०म० लिखित : 16 X 10 स०म०
सामान्य विवरण : जिल्द में पृष्ठ – पृष्ठ हुई यह रचना काली एवं संतरी स्याही से लिखी गयी है । खुली – खुली एवं सुंदर लिखाई की गई है । प्रति पृष्ठ चार पंक्तियां हैं ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में वेदों में कहीं गई विधिवत् शिव अर्चना का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। श्री गुरवे नमः ।। अथातो रुदस्नानाच्र्चनाभिषेक विधि व्याख्या स्यामः।। हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य ।।
अन्त : मर्म्माणि ते ।।३।। पुनस्रा ।।४।। इति वेदोक्त शिवाच्र्चनम ।। शि ।। सँवत् १८३५ कार्त्तिक शुक्ल १५ संतरामेण लिपी कृतम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1255 (संग्रह ख)
शीर्षक : त्रिकाल संध्या
लिपिकार : संतराम
लिपिकाल : संवत् १८३५
पृष्ठ संख्या : 22
आकार : 20 X 15 स०म० लिखित : 16 X 10 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत्
विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति में विधिपूर्वक त्रिकाल संध्या का वर्णन हुआ है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। श्री गुरवे नमः ।। विप्रो वृतो मूल तातस्य संध्या वेदाश शाखा धर्म्म कर्माणि पत्रम् ।।
अन्त : इति त्रिकाल संध्या समाप्ता ।। संवत् १८३५ कार्तिक शुक्ल १५ संतरामेण लिपी कृतम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1256
शीर्षक : लिंग पुराण
आकार : 33 X 18 स०म० लिखित : 28 X 13 स०म०
सामान्य विवरण : खंडित कृति कीड़े द्वारा जर्जर कर दी गई है । आरम्भ और अन्त के पृष्ठ तो मात्र नाम के रह गए हैं । अतः कृति का आरम्भ और अंत पता नहीं चलता है ।
विशेष विवरण : लिंग पुराण को सरल भाषा में लिखा गया है ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1257
शीर्षक : जातक बहरें
लेखक : दण्डी राम
रचनाकाल : संवत् १८६६
पृष्ठ संख्या : 91
आकार : 25 X 11 स०म० लिखित : 22 X 8 स०म०
सामान्य विवरण : पृष्ठ – पृष्ठ हुई यह कृति पृष्ठ 83 के पश्चात् बिल्कुल जर्जर हो चुकी है । शब्द पढ़े नहीं जा सकते हैं । काली स्याही का प्रयोग किया गया है । प्रति पृष्ठ 11 पंक्तियाँ हैं।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में जातक की कुण्डली में पड़ने वाले सभी ग्रहों की दशा एवं उनके प्रभाव का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : श्री हरये नमः ।। श्री गुरुभ्योनमः ।। श्री गणेशाय नमः ।। श्री सरस्वत्यै नमः ।। श्री दंसदांह हृदया रवि देपहि रविं दंवरदस्य वंदे
अन्त : क्रयविक्रय संप्राप्तिर्देव ब्राह्मण पूजकः भार्या वचो नुगामीच सप्रेम छेग्नि जंभयां ।४। अष्टमे ज्वर जा पीडाद्वादशोच जला द्भथं
(नोट – आगे के पृष्ठ पढ़ना सम्भव नहीं)

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1258
शीर्षक : सभा पर्व
लेखक : राम कवि
पृष्ठ संख्या : 104
आकार : 19 X 26 स०म० लिखित : 14 X 19 स०म०

सामान्य विवरण : काली एवं लाल स्याही से लिखी तथा जर्जर हुई यह कृति महाभारत के समापर्व पर आधारित है । प्रति पृष्ठ 17 पंक्तियां लिखी गई हैं ।
विशेष विवरण : राम कवि ने महाभारत के समापर्व को 37 अध्यायों में सरल भाषा में लिखा है । कृति के बीच के पृष्ठ आधे–आधे जर्जर हो चुके हैं ।
आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः । अथ सभा पर्व भाषा लिष्यते ।। छप्पै ।। सकल अमर गण वरद जय तज सुमंगल दायक ।।
अन्त : इति श्री महाभारते सभा पर्वणि सप्तत्रिंशो ध्यायः ।। ३७ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS - 1259
शीर्षक : सुदर श्रिंगार
लेखक : महाकवि राइ महाराज (शहाजहाँ श्रीमन)
रचनाकाल : संवत् १८६५
पृष्ठ संख्या : 40 के पश्चात् नहीं है
आकार : 12 x 17.5 स०म० लिखित : 8 x 13 स०म०
सामान्य विवरण : काली स्याही से लिखी गयी यह कृति पृष्ठ – पृष्ठ हुई है । पृष्ठों के किनारे कीड़े ने जर्जर कर दिए हैं । पृष्ठ 40 तक तो पृष्ठ संख्या चलती है, उसके पश्चात् बंद हो गई है। प्रति पृष्ठ 15 पंक्तियां हैं। कृति के आरंभ में चार पृष्ठों में पंजाबी में कुछ मंत्र हैं।
विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति शहाजहाँ के समय की है क्योंकि कवि ने यह स्पष्ट किया है कि आगरा शहर यहां शहाजहाँ का राज्य है वहीं पर राजा एवं उसके साथियों द्वारा किए गये कृत्यों का वर्णन है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अथ संद्दर श्रिंगार कविराज कृत लिक्षते द्दोद्दवी पूज सरस्वती पूजौ हरि के पाइ नमसकार करि जोरि कै कहै महांकवि राइ ?
अन्त : इति श्री मन महांराज विरचितं संहर श्रृंगार श्रुंभ भवेत । १८६५ जेठ वदि ४ मंगलवार ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1260 संग्रह (क)
शीर्षक : श्री दादू दयाल जी की बाणी
लेखक : भूधर दास
रचनाकाल : संवत् ७८२
स्थान : दिल्ली
पृष्ठ संख्या : 213
आकार : 14 x 24 स०म० लिखित : 9.5 x 19 स०म०
सामान्य विवरण : प्रस्तुत रचना के लिए काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है । पृष्ठ के दोनों ओर लाल स्याही का हाशिया खींचा है । प्रति पृष्ठ 25 पंक्तियां हैं । पृष्ठ काफ़ी पुराने हैं और कीड़े के द्वारा छेद किए हुए हैं ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में बाबा गोकुलदास के शिष्य भूधर दास ने संत दादूदयाल की वाणी को एकत्र कर रचना के रूप में प्रस्तुत किया है । लिखाई अच्छी है ।
आरम्भ : राग आसात ।। श्री स्वामी दादू दयाल जी भक्ति सकल साध सहाए दयाल जी कौ कृत मांडतौ गुरदेव जी कौ अंग लिषते ।।
अन्त : इति श्री स्वामी दादूदयाल जी की बांणी संपूरण समायप्तह ।। लिषतं बाबा गोकलदास जी का सिष भूधर दास ।। बाबा आसानंद जी का योता सिष ।। लिषीसुथांने दिली।। पहाड कै गंजि जे कोई बांचै विचारै ।। मन मैं धारै तिस कौं भूधर दास की डंडौत बीनती बार बार करि ।। संबत् ७८२ ।। मास आसौज थिति पंचम ।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1260 (ख)
शीर्षक : बिडदावली
लेखक : बालक राम
पृष्ठ संख्या : 213 – 217
आकार : 14 x 24 स०म० लिखित : 9.5 x 19 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।

		इस रचना में दो तरह की लिखावट है और केवल काली स्याही का प्रयोग किया गया है । पृष्ठों के किनारे पर भी लिखा है ।
विशेष विवरण	:	संत बालक राम द्वारा राग सूही में संत दादूदयाल की विरदावली गाई गई है ।
आरम्भ	:	बिडदावाली ।। राग सूहौ ।। राम बिडदकी लाज बिसारैं क्यूं बनैं ।। जाहि भगत सूंकाज ।। औगुनक्यूं गनैं ।। टेक
अन्त	:	अरु जीवन मुक्त ग्यांनी कह्यौ मन मैं कछु कांमनां ।। कहि बालक रांम वाकौ नहीं लोक बेद की आमनां ।। २।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1260 (ग)
शीर्षक	:	बारह मासा
लेखक	:	गोपाल जन
पृष्ठ संख्या	:	218 – 220
आकार	:	14 x 24 स०म० लिखित : 9.5 x 19 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् । इस रचना में काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है ।
विशेष विवरण	:	इस माया रूपी जगत् में बारह मास के अंतर्गत जीव और आत्मा के वियोग का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ	:	राम जी सति ।। अथ बारहमासा ।। राग सोरठि ।। बिरह बिथा जीव जाकै ।। कलि मै कौ न कहौ सुष ताकै ।। तंत मंत नहीं लागैं ।। वलमी चंचला अति जागै ।।
अन्त	:	गोपाल जन हरि दरस देषें ।। सबै हुष बिभराईये ।। १३।। इति बारह मास संपूर्ण स्मापति ।। साषी ।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1274
शीर्षक	:	ग्यारहवीं शताब्दी की हिन्दू संस्कृति
लेखक	:	महिंदर पाल
रचनाकाल	:	11वीं शताब्दी
आकार	:	16 x 25 स०म० लिखित : 12 x 21 स०म०
सामान्य विवरण	:	ग्यारहवीं शताब्दी की हिन्दू संस्कृति से सम्बन्धित यह ग्रंथ जर्जर होने के कारण अपठनीय है।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1275
शीर्षक	:	लघुवृत्त (व्याकरण)
पृष्ठ संख्या	:	पृष्ठ ऊपर नीचे से जर्जर हो चुके हैं, अतः संख्या का सही पता नहीं चलता है ।
आकार	:	16 x 24 स०म० लिखित : 10 x 17 स०म०
सामान्य विवरण	:	लगभग सभी पृष्ठ बुरी तरह जर्जर हैं । कृति काली स्याही से लिखी गई है । प्रति पृष्ठ 16 पंक्तियाँ हैं । जर्जर होने के कारण कुछ पृष्ठ आधे – अधूरे ही शेष हैं ।
विशेष विवरण	:	संस्कृत व्याकरण से सम्बन्धित यह लघुवृत्त छः प्रकरणों में है । इसमें व्याकरण के नियमों का विस्तृत ज्ञान दिया गया है ।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः सिहोवर्णसभाम्राय : वर्णवांश्रकारा दीनांयः समाम्रायः क्रमेण पादुः सः।।
अन्त	:	इति लघुवृत्तौ कृत्प्रकरणे धातु रांबत्धपादः षष्टः ।। ६।। भद्रय पूपेम प्रचरेम भद्रं ।। श्रुभमस्तु सर्वजगतां परक्षित निरता भवंतु भूतगूणः दोखाः प्रयांतु शान्तिसर्वत्र सुखी भवंतु लोकाः ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MS – 1284
शीर्षक	:	अष्टावक्र भाषा
लेखक	:	इन्द्र गिरगोशाई
रचनाकाल	:	संवत् १८८१
पृष्ठ संख्या	:	18
आकार	:	27 x 16 स०म० लिखित : 21 x 11 स०म०

सामान्य विवरण : पत्रा – पत्रा हुई यह कृति काली एवं लाल स्याही से लिखी गई है । पृष्ठों में छेद हुए हैं। प्रति पृष्ठ 13 पंक्तियां हैं । कृति को जिल्द की आवश्यकता है ।
विशेष विवरण : दो सौ इकसठ दोहों की यह कृति में ईश्वर से उद्धार की प्रार्थना की गई है । मूलतः अष्टावक्र ऋषि द्वारा यह संस्कृत में लिखी गई है जिसे देवनागरी में अनूदित किया गया है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाये नमः ।। अथ अष्टावक्र भाषा लिष्यते ।। दो ।। तात मुक्ति जो चाहीये ।। विष जौ विषै विसार ।। छिमा दया संतोष सत्त आरजता उरधार ।।
अन्त : ईती श्री अष्टावक्र भाषा संपूर्ण शुभं मभृया लिषतं इद्र गिरगोशाई संवत् १८८१ जमसेर शुम अस्थाने असुन सुदी सतमी नविरात्रे श्वभंभृयत ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MS – 1285
शीर्षक : दादूदयाल जी की कृत
लेखक : दादूदयाल
लिपिकार : कल्याण दास
लिपिकाल : १६१८ संवत्
पृष्ठ संख्या : 119
आकार : 17 x 12 स०मी० लिखित : 13 x 8.5 स०मी०
सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े में सजिल्द यह कृति काली एवं लाल स्याही में लिखी गई है । प्रति पृष्ठ 12 पंक्तियाँ हैं । रचना के पृष्ठ पुराने हैं पर सुंदर लिखाई में लिखी गई है । पृष्ठ के दोनों ओर लाल स्याही से हाशिया भी खींचा है ।
विशेष विवरण : दादूदयाल की वाणी का संग्रह संत कल्याण दास ने करके उसे एक पोथी का रूप दिया है तथा अंत में अपनी शिष्य परंपरा का वर्णन भी किया है ।
आरम्भ : श्री रामजी सत्य ।। श्री स्वामी दादू दयाल जी सहाइ ।। अथ श्री स्वामी दादूदयाल जी कौ कृत लिषतं ।। प्रथम गुरदेव कौ अंग लिषतं ।।
अन्त : इति गुटका संपूर्ण ।। बाबा जी बनवारी जी तीनका सिष छबीलदास जी .... सिष कल्याण दास तिन पोथी लीषी भूल चूक माप इति संवत् ।। १६१८।। चैतसुदी ।।१।। बार गुरवार पोथी सपूर्ण भवेत सुथानसि घेडेमधि चौबारे ।। र र र .... दादू रांम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (संग्रह क)
शीर्षक : श्री धर्म प्रकास पाप विनासन
पृष्ठ संख्या : 27
आकार : 16 x 22 स०मी० लिखित : 11 x 16 स०मी०
सामान्य विवरण : संग्रह की प्रथम रचना । सजिल्द लाल एवं काली स्याही का प्रयोग। प्रति पृष्ठ 16
पंक्तियाँ लिखाई सुन्दर है। काली स्याही से पृष्ठ के दोनों ओर हाशिया खींचा गया है।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में धर्म प्रकाश एवं पाप के विनाश का वर्णन कृष्ण कथा के संदर्भ में दस अध्यायों में किया गया है।
आरम्भ : उँ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः।। अथ धर्म्म प्रकास पाप विनाशनं लिख्यते ।। चर अचर
लघु दीर्घ ।। नाना वरन अनेक ।।
अन्त : इति श्री धर्म प्रकास पाप विनासन ग्रंथे निजततु सार पठंते हृदासु दूसुषं ते जीवन मुक्त समऊंते श्री भगवान नारायण निरंजन भवे इति श्री धर्म प्रकास पाप विनासन समाप्तं।

हस्तलिखित क्रमांक : MS - 5098 (ख)
शीर्षक : ब्रह्ममाया कौ कवच
लेखक : निरंजन
पृष्ठ संख्या : 28 – 37
आकार : 16 x 22 स०मी० लिखित : 11 x 16 स०मी०
सामान्य विवरण : संग्रह की दूसरी रचना।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में श्री भगवान एवं नारायण के संवाद के माध्यम से नारायण की महामाया शक्ति का वर्णन किया गया है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। श्री निरंजन के ब्रह्म माया कौ कवच लिष्यते।। उँ तत्सत श्री नारायण पति श्री गौरी मांग लीया मन वच कर्म हरस्यो सर्व सिद्धदायक वर दीआ मार राजलया महादेव ।।
अन्त : इति श्री निरंजन निरंजनि कवच श्री शतगुरु भगवान प्रसादे नरसै रूप नारायण बदत अतीत संपूर्ण समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (ग)
शीर्षक : सांख्य योग
पृष्ठ संख्या : 37 – 46
आकार : 16 X 22 स०म० लिखित : 11 X 16 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की तीसरी रचना । पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में सांख्य योग स्तोत्र की महिमा का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : अथ सांख्य योग लिष्यते ।। शीतलं सतसुसीलं।। क्षमा शांति सुसेवितं ।।
अन्त : इति श्री सांख्य जोग रक्त वपु स्तोत्रं संपूर्ण ।। शुभमस्क्त ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (घ)
शीर्षक : सुषसागर
पृष्ठ संख्या : 46 – 52
आकार : 16 X 22 स०म० लिखित : 11 X 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : रचना सुखसागर में चार प्रकार की अवस्थाओं के अंतर्गत चार तरह की मुक्तियों का वर्णन किया गया है।
आरम्भ : अथ सुषसागर लिष्यते ।। ।। गौरवौवतैमांगी लीयौ अरु कु स्यौ संग महेश। मार जीवाय कै वर दीयो श्री सिद्ध दाता गणेश ।। १ ।।
अन्त : इति श्री सुष सागर ग्रंथे चार मुक्ति ।। चारवस्था भिन्न–भिन्न प्रभाव वर्ण ने चतुर्थोंध्यायः ।। ४।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (ङ)
शीर्षक : दुषहरन ग्रंथ
पृष्ठ संख्या : 53 – 74
आकार : 16 X 22 स०म० लिखित : 11 X 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रह्लाद हिरण्य किशुप के संवाद में सर्वत के सुखों की प्राप्ति के लिए दुःखों के हरण के लिए ईश्वर स्तुति का वर्णन किया गया है।
आरम्भ : अथ सर्वसुषदायक दुष हरन ग्रंथ लिख्यते।। परम पुरुष परमात्मा अपरंपर परम स्वरूप।
अन्त : इति श्री सर्व सुषदाइक दुषहरण ग्रंथे श्री नारायण अपणी .... संपूर्ण सुतातं श्रुभ मस्क्त परमात्मा देवता ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (च)
शीर्षक : ग्यान सार
पृष्ठ संख्या : 74 – 77
आकार : 16 X 22 स०म० लिखित : 11 X 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में ईश्वरीय ज्ञान हेतु ग्यान सार स्तोत्र की रचना की गई है ।
आरम्भ : अथ ग्यान सार लिख्यते ।। अति अपार अपरं पराअति अखंड अतिदूर ।।
अन्त : इति श्री ग्यान सार स्तोत्रं संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (छ)
शीर्षक : श्री निर्भेद स्तोत्रं

पृष्ठ संख्या : 77 – 80
आकार : 16 x 22 स०म० लिखित : 11 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत ग्रंथ में संसारिक कर्मों से अनासक्ति का भाव वर्णित किया गया है ।
आरम्भ : अथ श्री निर्भेद स्तोत्र लिख्यते ।। जुगो जुगानि निरंजन तषत विराजै ।।
अन्त : इति श्री निर्भेद ग्रंथे कर्मे मुक्ताप्रभाव वर्णने नाम तृतीयो ध्यायः ।। ३।। निर्भेद ग्रंथ समाप्तं श्रुभमस्तु ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (ज)
शीर्षक : समाध जोग
पृष्ठ संख्या : 80 – 90
आकार : 16 x 22 स०म० लिखित : 11 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : योग साधना के अंतर्गत समाधजोग काया विचार, मनप्रबोध एवं नाड़ी ज्ञान अध्यात्म पर विचार किया गया है।
आरम्भ : अथ समाध जोग लिख्यते ।। उँकार ना परं ध्यानं उंकार परंलिव ।।
अन्त : इति श्री नाड़ी ज्ञान अध्यात्म समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (झ)
शीर्षक : ततुगीत, मंत्रहंस गीता
पृष्ठ संख्या : 190 – 196
आकार : 16 x 22 स०म० लिखित : 11 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : ततु गीत सात श्लोकों में और हंस गीता द्वादश पदों में गाई गई है।
आरम्भ : अथ तत्तुगी लिख्यते ।। श्री नारायणोवाच ।। शतदेवं नमस्कारं अहं जीव करोत्तमं ।।
अन्त : इति श्री हंस गीता द्वादश पदस्तोत्रं संपूर्णं चतुर्थों ध्याय समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (ञ)
शीर्षक : शतगुरु सार ग्रंथ
पृष्ठ संख्या : 96 – 152
आकार : 16 x 22 स०म० लिखित : 11 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : एकादश अध्यायों में सतगुरु सार ग्रंथ में संवादात्मक शैली में सतगुरु ईश्वर की महिमा का गायन किया है।
आरम्भ : अथ एकंकार शतगुरु सार ग्रंथ लीख्यते ।। ब्रह्मा विहमु महेश्वरं ।।
अन्त : इति श्री एकंकार सतगुरु सार ग्रंथे ब्रह्मा–विहमु इंद्र वरुण, चित्रगुप्त धर्म्म तेतीस करोड़ी देवते .... श्री नारायणे उपदेशणे एकादशो ध्यायः ।। ११ ।। श्रुभमस्त्क ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (ट)
शीर्षक : शेश विरंच गीता
पृष्ठ संख्या : 153 – 162
आकार : 16 x 22 स०म० लिखित : 11 x 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : श्री शेष द्वारा विरचित गीता का वर्णन और महात्म्य का प्रसंग वर्णित है।
आरम्भ : अथ शेश विरंच गीता लीष्यते ।। आदि अनादि अनाहद संभ नाद विंद गुण अक्षर स्भरंभा ।।
अन्त : इति श्री आद आनाद अनाहद शंभुपार ब्रह्म पद स्तोत्रं शेश विरंच गीता अध्यात्म स्वरूप कथं पठंते .... ।। इति श्री शेश विरंच गीता समाप्तम् ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (ठ)
शीर्षक : श्री विरक्त योग
आकार : 16 X 22 स०म० लिखित : 11 X 16 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की 12वीं रचना ।
विशेष विवरण : विरक्त योग में विरक्ति भाव का वर्णन किया है।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। अथ विरक्त योग लिख्यते ।।
अन्त : इति श्री विरक्त योग सुषदुष वर्णने संपूर्णं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (ड)
शीर्षक : वर्णाश्रम वर्ण
पृष्ठ संख्या : 164 – 167
आकार : 16 X 22 स०म० लिखित : 11 X 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : अलग–अलग वर्णों एवं आश्रमों का वर्णन एवं ईश्वरीय ध्यान का प्रसंग दिया है।
आरम्भ : अथ वर्णांश्रम वर्ण ग्रंथ लिख्यते।। सो जग आश्रम वर्ण कहावै।।
अन्त : इति श्री वर्णाश्रमनि जत तु ग्यान संपूर्णं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (ढ)
शीर्षक : बीज प्रकास
पृष्ठ संख्या : 167 – 169
आकार : 16 X 22 स०म० लिखित : 11 X 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : रचना में समाधि योग हेतु योगी के ध्यान लगाने की विधि का वर्णन है ।
आरम्भ : अथ बीज प्रकास लिख्यते ।। ह्रदैपद्म धरती गुरुवाक ।।
अन्त : इति श्री वीज प्रकास निज तत्व मंत्र जोग ध्यानं। समाधि लीणं वीज प्रकास ग्रंथ समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5098 (ण)
शीर्षक : जोग वैराग्य
पृष्ठ संख्या : 169
आकार : 16 X 22 स०म० लिखित : 11 X 16 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत्। संग्रह की अन्तिम 15वीं रचना ।
विशेष विवरण : योग के अंतर्गत वैराग्य का वर्णन तत्व के संदर्भ में किया गया है ।
आरम्भ : अथ जोग वैराग्य ग्रंथ लिख्यते।। वृद्दंत छत्रं जोगं तब टंगढ कोट मंदर गिर कंदरा ।।
अन्त : इति श्री जोग वैराग्य ततुपदं प्राप्त परमपद जोग वैराग्य समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5099 (क)
शीर्षक : वैताल पचीसी
लेखक : प्रह्लाद
रचनाकाल : संवत् १८०४
स्थान : लवपुर
पृष्ठ संख्या : 86
आकार : 16 X 22 स०म० लिखित : 11 X 16 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की पहली रचना । सजिल्द । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग । कुछ पृष्ठों के पश्चात लाल के स्थान पर गहरी गुलाबी स्याही प्रयुक्त की गई है। रचना का पहला पृष्ठ नीचे से थोड़ा खंडित है बाकी रचना पूर्ण है। प्रति पृष्ठ 15 पंक्तियाँ लिखी गई हैं।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में कवि प्रहलाद ने वैताल के चरित्र एवं उसके शौर्य का गायन महाराज दलीप सिंह की पत्नी व्याल देवी के कहने पर किया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः।। अथ वैताल पचीसी प्रहलाद कृत लिख्यते।। दोहरा।। श्री गणपति गजपति नमो फुनि श्री कृहम मुरारि ।। विक्रम योगी श्रवक थाते सब कों विचार ।। चौपई।।

अन्त : इति श्री वैताल पचीसी कृत षत्री प्रहलाद की।। संवत् १८०४ श्रावण वदि १४ शनिवासरे श्रुभं ।। श्री महाराज दलीप सिंह पतनी श्री राणी बेव्याल देवी पीत्यै लिषेत।। श्रुभं।।

हस्तलिखित क्रमांक : MS – 5099 (ख)

शीर्षक : रामचरित्र

लेखक : माधोदास

पृष्ठ संख्या : 17

आकार : 15 X 22 स०म० लिखित : 11.5 X 17 स०म०

सामान्य विवरण : संग्रह की दूसरी रचना। पूर्ववत्। लाल स्याही से पृष्ठ के दोनों ओर हाशिया खींचा है।

विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में श्री राम के शील, सौंदर्य का वर्णन करते हुए राम के चरित्र को उभारा है। रामायण की रावण वध तक कथा का प्रसंग इसमें मिलता है। इस रचना का निर्माण भी महारानी व्याल देवी की इच्छानुसार किया गया है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। रामचरित्र लीष्या ।। राग घनासरी ।। अनहोनी होनी नहीं होनी होइ सु होइ ।। सात पुरी के सीरे अजोध्या उत्तम नगरी ।। तहा वसे नृप दसरथ जाकें नव निध सगरी ।।

अन्त : इती श्री माधोदास कृतं रामचरित्र संपूर्णं ।। सुभं भवतु चं व्यालदेवी आयुषमान भव ।। असुध लिषे दा गुनाह माफ करण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : MSG – 07 संग्रह (क)

शीर्षक : सप्तशती नवार्ण मंत्रस्य

लेखक : हरिहर ब्रह्मा

पृष्ठ संख्या : 21

आकार : 18 x 10.5 स०म० लिखित : 12.5 x 6 स०म०

सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े में सजिल्द संग्रह की यह पहली रचना है। कवि ने प्रति पृष्ठ आठ पंक्तियाँ लिखी हैं तथा लेखन कार्य के लिए काली स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : प्रस्तुत ग्रंथ में विभिन्न देवियों की स्तुति हेतु स्त्रोत रचना है। सप्तशती नवार्ण मंत्रस्य पहली रचना है विभिन्न श्लोकों में देवी की महिमा गायन के पश्चात् फलाश्रुति का वर्णन किया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अस्य श्री सप्तशती नवार्ण मंत्रस्य ब्रह्मा विस्मु महेश्वरा ऋषभः गायअस्मि गनष्ट पूछं दांसि महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता।

अन्त : ओं पेंही ल्की नमः नित्यं यः स्मरते तस्य रोगा नश्यंति हर तः मः नंल्की हो पेंउो ।।६१।। इति हरिहर ब्रह्मा विरचितं देव्याः कवचं संपूर्णम्।।

हस्तलिखित क्रमांक: MSG – 07 (ख)

शीर्षक : सप्तशती प्रथम चरित माला

पृष्ठ संख्या : 21–24

आकार : 18 x 10.5 स०म० लिखित : 12.5 x 6 स०म०

सामान्य विवरण : संग्रह की दूसरी रचना।

विशेष विवरण : सप्तशती के चरित्र का गायन किया गया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः । उों अस्य श्री सप्तशति का प्रथम चरित्रमाला मंत्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः आद्या श्री महाकाली र्देवता गाय अनुप्टुपूजागत्य छदंसि ।

अन्त : इति करतल कर पृष्ठाम्या नमः खङ्गिनी श्रुलि नीद्योरेति ह्रदयाय श्रूलेनयाहि नोदेवीति शिर से स्वाहा ।

हस्तलिखित क्रमांक: MSG – 07 (ग)

शीर्षक : श्री मार्कण्डेय पुराण

पृष्ठ संख्या : 42 – 103

आकार : 18 x 10.5 स०म० लिखित : 12.5 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की तृतीय रचना है ।
विशेष विवरण : सोलह अध्यायों में श्री मार्कण्डेय पुराण के सावर्णिक मन्वंतर का वर्णन किया गया है। इसमें देवी के महात्म्य को विभिन्न कृत्यों द्वारा वर्णित किया गया है।
आरम्भ : अथ ध्यानं सिंहस्था शशि शेखरां मरकतः प्रख्यैश्वतुर्भिकरैः शंखसदयंती करै स्नि नयनां संर्वांग भूषाभृतां।
अन्त : इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वंतरे देवी महात्म्ये मूर्तिक रहस्य नाम षोडशो ध्यायः ।। १६ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 07 (घ)
शीर्षक : लघु स्तोत्र
पृष्ठ संख्या : 103 – 109
आकार : 18 x 10.5 स०म० लिखित : 12.5 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की चौथी रचना ।
विशेष विवरण : देवी महिमा में रुद्र द्वारा लघु देवी स्तुति का गायन किया गया है।
आरम्भ : अथ देवि सूक्तं श्री रुद्रउवाच। शिवा मनन्यं विविधः प्रभाव कालि कलामलि विविस्य वधी कपाल।
अन्त : हठाक्तव डक्रयामुखरी कृते नर चितं यस्मान्मया विध्रुवम् २१ इति लघु स्तोत्रं संपूर्णम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 07 (ड.)
शीर्षक : इंद्राक्षी स्तोत्र
लेखक : पुरंदर ऋषि
पृष्ठ संख्या : 109–112
आकार : 18 x 10.5 स०म० लिखित : 12.5 x 6 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की पांचवीं रचना ।
विशेष विवरण : इंद्राक्षी स्तोत्र में देवी इन्द्राणी की महिमा एवं भक्ति का वर्णन है।
आरम्भ : उों अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्र मंत्रस्य पुरंदर ऋषि अनुष्टछंदः श्री इंद्राक्षी देवता उों लक्ष्मी।
अन्त : नाना सिद्धि करं देवी सर्व पापंव्यपोहति इति श्री काशी खंडे श्री इंद्राक्षी स्त्रोतं संपूर्णम् शुभमस्तु।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 09
शीर्षक : चिकित्सासोर
लेखक : धीरजराम
रचनाकाल : मघर ८ १६२८
लिपिकाल : मिति मघर सुदी ८ (8) साल १६२८ (1928)
पृष्ठ संख्या : 37
आकार : 15 x 24 स०म० लिखित : 12 x 19.5 स०म०
सामान्य विवरण : पुराने गत्ते की जिल्द में बंधे इस ग्रंथ की यह पहली रचना है । प्रति पृष्ठ 29 पंक्तियाँ हैं। काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया गया है । कुछ नुस्खा पृष्ठ के किनारों में भी दिए गए हैं ।
विशेष विवरण : चिकित्सा सार नामक इस रचना में लेखक ने पहले रोग, फिर उस रोग के निवारण हेतु दवाई बनाने की पूरी प्रक्रिया व तत्पश्चात् उस दवाई के प्रयोग की विधि बताई है। शारीरिक रोगों के अंतर्गत लगभग सभी रोगों के लक्षण एव उनके उपचार बताएं हैं । 38 तथा 39 पृष्ठ पर सभी औषधियों के नाम लिखे हैं जो संख्या में 36 हैं । तत्पश्चात् एक पृष्ठ फटा हुआ है । इस संग्रह की दूसरी रचना पंजाबी की है ।
आरम्भ : १ॐ श्री गणेशायनमः अथ चिकित्सा सार ।। सो. कमल नयन शसिभाल नाग वदनडकरदन युत वरद विरद प्रतिपाल हरे विघन अमराधिमति १ ।।
अन्त : प्रभु सिऊ करे औषधि सभें जुएषे हियेया ग्रंथ मैं ।। ८२ ।। इति सार्खत धीरजराम कृते ग्रंथे चिकित्सा सारे भिश्रका ध्यायो ।। ८७ ।। मिति मघ़र सुदी ८ साल १६१८ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 14 (संग्रह क)
शीर्षक : दोष निर्णय
लेखक : हरिचरण दास
पृष्ठ संख्या : 39
आकार : 17 X 24 स०म० लिखित : 12 X 19 स०म०
सामान्य विवरण : पृष्ठ – पृष्ठ हुई तथा अन्तिम पृष्ठ लगभग सारे के सारे कीड़े द्वारा खाये गये हैं । लगभग 70 पृष्ठों तक कृति सुरक्षित है । आगे कीड़ा लगा हुआ है । पृष्ठ 88 तक संख्या क्रम पता चलता है । प्रत्येक पंक्ति में 19 पंक्तियाँ हैं ।
विशेष विवरण : कवि हरिचनण दास द्वारा कवि वल्लभ विरचित दोष निर्णय को देवनागरी में लिखा गया है।
आरम्भ : उों श्री राधा कृस्मौ विजयतिनमाम अथ हषण लिष्यते दोहरा मोहनचनरन पयों जमैं तुलसी को हैं वास ताहि सुमरि हरिभक्त सव करत विघ्न को नास
अन्त : इति श्री हरिचरण दास कृते कवि वल्लभे यदय दांस दोष निर्णयः ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 14 (ख)
शीर्षक : वाक्य दोष निर्णय
लेखक : हरिचरण दास
पृष्ठ संख्या : 40 – 66
आकार : 17 X 24 स०म० लिखित : 12 X 19 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : वाक्य के अठारह दोष पहले संकेत रूप में बता कर फिर उनका पूरा वर्णन छन्द चौपाई, दोहा आदि के माध्यम में किया है ।
आरम्भ : अथ केवलवाक ह्रषन विरुद्धमति कृति अविमृष्ट विधेयांस क्लिष्ट एतीतदोष वाक्य के कहे अठारह दोष श्रोटि कहूत हैं ।
अन्त : इति श्री हरिचरण दास कृते कवि वल्लभे वाक्य दोष निर्णयः ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 14 (ग)
शीर्षक : अर्थ दोष निर्णय
लेखक : हरिचरण दास
पृष्ठ संख्या : 66 – 108
आकार : 17 X 24 स०म० लिखित : 12 X 19 स०म०
सामान्य विवरण : पृष्ठ 70 से लेकर 108 तक पहुँचते – पहुँचते कृति का कोना कीड़े द्वारा जर्जर कर दिया गया है केवल लिखित आकार के पृष्ठ बचे हैं।
विशेष विवरण : पहले चौदह अर्थ दोष गिन कर उनके नाम देकर फिर आगे उनकी व्याख्या की है ।
आरम्भ : अथ अर्थ दोष कवित्त अर्थ है अयुष्ट १ कष्ट २ व्याह्रत ३ औपुनरुक्त ४ दुःक्रम ५ भीग्रांम्य
अन्त : इति हरिचरण दास कृते कवि वल्लभे अर्थ दोष निर्णयः ।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 14 (घ)
शीर्षक : साछात रस दोष
लेखक : हरिचरण दास
पृष्ठ संख्या : 109 से अंत तक
आकार : 17 X 24 स०म० लिखित : 12 X 19 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
सारे पृष्ठ ऊपर से कीड़े द्वारा नष्ट कर दिए गए हैं ।
विशेष विवरण : शास्त्र दोषों का वर्णन इस रचना में किया गया है पर रचना खंडित हो गई है ।
आरम्भ : अथ साछातर दोष सवैया नाव परै रस कोव्य भिचाटिकौ थाई हूकौतहां दोष कहावै जौ आनुभाव विभाव दुजाहि रहो तजहां श्रम सौं नहिं भावै ।
अन्त : _नोट :–_ *कृति की इस रचना के अन्त वाले पृष्ठ लगभग सारे कीड़े द्वारा खा लिए गये हैं। अतः कृति का अन्त देना असम्भव है ।*

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 26
शीर्षक : श्री योगशत सटीक
लिपिकार : हरराय जी
लिपिकाल : १८८६ संवत्
पृष्ठ संख्या : 12
आकार : 28 X 14 स०म० लिखित : 25 X 10 स०म०
सामान्य विवरण : योगशत नाम यह कृति के पृष्ठ अलग – अलग हुए पड़े हैं । कुल पुष्ठ 12 हैं । प्रति पृष्ठ सोलह पंक्तियाँ हैं । इसके अतिरिक्त पृष्ठों के किनारों पर लिखा गया है । लेखक ने केवल काली स्याही का प्रयोग किया है ।
विशेष विवरण : श्री योगशत नामक यह कृति चिकित्सा से सम्बन्धित है । इसमें आरम्भ में प्रमेह, अतिसार, प्रदर आदि रोगों के लक्षण व बाद में उनके निवारण के लिए चिकित्सा प्रयोग बताए गए हैं ।
आरम्भ : छ० स्वस्ति श्री पार्श्वमा नमः ।। श्री मतंती घराज गुरुवे नमः ।। अथ योगशत्त सटीक लिष्यते।। छिन्नि भवा गिलोइ अंवुधर मोथे घन्व धमाहा यवासयवाहा विश्वाशुंवि एते औषध सम मात्राक्काथ करिदी ज़ैबाव ज्वर शांति होवे
अन्त : इति श्री योगसत सटीक संपूर्ण ।। लिषितं श्री वगौरी गब मध्ये श्रीमान् हरसाय जी तत्सिष्य पूज्य कुसला जी तत्सिष्य पूजवीरू कूष जी आत्मअर्थे लिपिकृतं थानेश्वव्र मध्ये लिपीकृतं सं १८८६ मि० क० व० ३ शनिवासरे लिषीहै ।। समाप्तं मंगलं ददात् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 28 संग्रह (क)
शीर्षक : श्री सूक्तावली
पृष्ठ संख्या : 19
आकार : 18 X 11 स०म० लिखित : 13 X 8 स०म०
सामान्य विवरण : गत्ते कपड़े में आबद्ध इस संग्रह की यह पहली रचना काली एवं लाल स्याही प्रयुक्त कर लिखी गई है । प्रति पृष्ठ नौ पंक्तियाँ लिखित हैं ।
विशेष विवरण : सूक्तावली नामक इस रचना में मनुष्य की नैतिकता से सम्बन्धित पक्षों पर यथा विद्या पद्धति, धर्म पद्धति, क्रोध पद्धति, विषयः पद्धति आदि पर विचार किया गया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। धर्मः सर्वसुखा करो हितकरो धर्मं वुधाश्चन्यते ।
अन्त : प्राप्नुवति शिंवलोक मिति सत्यं वदाम्यहं ।। ६।। इति श्री सुक्तावली समाप्ता।। श्रुभम्।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG - 28 (ख)
शीर्षक : नव रत्नम्
पृष्ठ संख्या : 5
आकार : 18 X 11 स०म० लिखित : 13 X 8 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की दूसरी रचना पहली रचना के पश्चात् एक खाली पृष्ठ फिर दूसरी रचना और रचना के अंत में फिर एक खाली पृष्ठ ।
विशेष विवरण : राजा की सभा के नवरत्नों का चित्रण किया गया है । जिनमें धन्वन्तरि, क्षपण, अमर सिंह, शंकु, बेताल भट्ट आदि का नाम आता है ।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। अथ नवरत्नम्.।। धन्वन्तरिः क्षपणका अमर सिंह शंकुबेता लभह घटषर्थर कालिदासाः ।।
अन्त : निगमयन स्वानोपिता न्यालयन्मालाकार द्रब प्रयोग चतुरो राजा चिरंजीवतु.।। ११।। इति नव रत्नानि. ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 28 (ग)
शीर्षक : पंच रत्नानि
लिपिकाल : १६५७
पृष्ठ संख्या : 4
आकार : 18 X 11 स०म० लिखित : 13 X 8 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : इस रचना में पंच रत्नों का वर्णन किया गया है ।

आरम्भ : अथ पंचरत्नानि. ।। ।। वैद्यः पोतस्रथानागः शांतिः शक्यो यथा क्रम. ।। पंच रत्नमिंद ज्ञेयंदुर्लभं विदुषामपि ।। १ ।।
अन्त : इति पंच रत्नानि लिपि कृतं सम्वत् १६५७ वैशाष शुक्ल १० दशम्यां बुधे. पद्दाल पाख्य नगरे ।। शुभम् ।। इति.

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 28 (घ)
शीर्षक : षड़रत्नं
पृष्ठ संख्या : 2
आकार : 18 X 11 स०म० लिखित : 13 X 8 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में छः रत्नों का राजा के संदर्भ में वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। षड़रत्नं ।। शास्त्र कोर्था स्लथामूर्खो दानं दुर्मैत्रिणं तथा लो भोप्य।
अन्त : सद्विद्याय किंधनै रपयशोय द्यलि किं मृत्युना ।। ५६।। इति षडरत्नं समाप्तं ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 28 (ङ)
शीर्षक : सप्त – अठरत्नं
पृष्ठ संख्या : 5
आकार : 18 X 11 स०म० लिखित : 13 X 8 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : इस रचना में राजा एवं सामाजिकों के आदर्श हेतु सप्त एवं अष्ट रत्नों का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : सप्तरत्नं ।। बाछाराजा तथा छेदो वृक्षं वितेन किं तथा स्वर्गो धनेन किं ज्ञेयं सपत रत्न मिंद क्रमात् ।।
अन्त : ब्रीह्म पदं बांछति व्रह्मा शैव पंद शिवो हरिपदं आशा वधिंको गतः ।। इत्यष्त रत्नं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 28 (च)
शीर्षक : धर्मशास्त्र
पृष्ठ संख्या : 12
आकार : 18 X 11 स०म० लिखित : 13 X 8 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
रचना से पूर्व चार पृष्ठ खाली हैं उनमें से एक पृष्ठ पर कालियास विरचित संग्रह के छपवाने की सूचना दी है ।
विशेष विवरण : धर्मशास्त्र के आधार पर मुनि, ब्राह्मण राजा, वैश्य, शूद्र, चांडाल, पशु, मलेच्छ आदि के धर्म की चर्चा की है ।
आरम्भ : उँ धर्म शास्त्रे देवो ।। १ ।। मुनि । २ ।। द्विजो । ३ ।। राजाचैव । ४ । वैश्यः । ५ ।। श्रूद्रो । ६ । विडालकः । ७ । पशु । ८ । म्लेच्छश्. । ६ । चांडालो विप्रा । १० । दशधाः सरता । ११ ।
अन्त : शीतजर हरस्ती क्षो ाा ग्राही दिप नयाचन : जलश्रुतिः जलशुक्ति कटु स्निम्धादीप ती गुल्मशलनुत ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 28 (छ)
शीर्षक : भविष्यत् पुराणे
पृष्ठ संख्या : 8
आकार : 18 X 11 स०म० लिखित : 13 X 8 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : कार्तिक ब्रह्मा संवाद के माध्यम से भविष्यत पुराण के 30वें अध्याय का उद्देश्य प्रकट किया गया है ।

आरम्भ : उों कार्तिकेय उवाच ।। कलौकेचै भविष्यंतिल्टपचिन्ह पुतानराः ज्ञातुमिच्छांमि तेषांतुनामा निचजगत्यते ।। १ ।।
अन्त : इति श्री भविष्यत्पुराणे व्राह्म वैष्णव शैव ताष्टमति सगेंति पर्वात्म के व्रह्म गुहं सम्वादे चतथें ताप्त कल्पे कलियुगोत्पत्न्नराजनि रूपणं नामै कौन त्रिंशोध्यायः समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 35
शीर्षक : राम महिम्न
लेखक : कवि भवानी दास
पृष्ठ संख्या : 4
आकार : 17 x 29 स०म० लिखित : 12 x 22 स०म०
सामान्य विवरण : चार पन्नों की बिना जिल्द की यह कृति काली स्याही में लिखी गई है । प्रति पृष्ठ 25 पंक्तियाँ हैं । लिखाई साफ एवं सुन्दर है ।
विशेष विवरण : 52 श्लोकों की 'राम महिमा' नामक इस कृति में राम की अद्भुत कीर्ति का वर्णन किया गया है ।
आरम्भ : श्री हेरंवाय नमः सरस्वत्यै नमः महिम्नः पारं ते परमविडषः कोधयिग तोय तोजाजाते यंवि मतमिदमस्याः समुदितम्
अन्त : श्री मन्नरेद्र हरिरद्भुत कीर्तिरेष पद्मालये जयति राज सदर्चितांघ्रिः तत्सत्कृतेनच विनिर्म्मितमं तदद्दे चंद्रेड नंद कुमिते विजयादशम्याम् ५२. श्री । रामाय नमोस्तुनित्यम् श्रीरस्न ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 36
शीर्षक : राजाभिषेक
पृष्ठ संख्या : 5
आकार : 16 x 29 स०म० लिखित : 11.5 x 22 स०म०
सामान्य विवरण : राज्याभिषेक नामक यह कृति बिना जिल्द के पांच पत्रांकों की है । सारी कृति के लिए काली स्याही प्रयुक्त की गई है । लिखाई सुन्दर एवं स्पष्ट है । प्रति पृष्ठ 38 पंक्तियाँ हैं ।
विशेष विवरण : प्रति वर्ष जन्मदिन पर मनाए जाने वाले राज्याभिषेक का वर्णन इस रचना में किया गया है। विष्णु का राज्याभिषेक और विष्णुत्तर राज्याभिषेक का प्रसंग आकर्षक है ।
आरम्भ : अथ राजाभिषेकः सद्विधा प्रथमाभिषेकः सांवत्सरि कश्चेति तन्नाधे पुरोहितादिनायितृकृत राजप्रथमाभि के रथ सिंहासनासि छत्र चामर ध्वज गज वाजि वस्रालंकार सावत्सर श्चिकित्सक पुरोहितादीन ।
अन्त : अयंचाभिषेकः प्रतिवर्षे महान वम्यां कर्त्तव्यः पुष्पोभिषेको महान वम्पामिंहोत्सवो जन्मदिने प्रतिवर्ष वृषोत्सर्गः कार्तिक्या प्रति वर्षमित्पाथर्वणसूत्राम् ।। इति ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 45 संग्रह (क)
शीर्षक : श्री उलूक कल्प
रचनाकाल : संवत् १८६०
पृष्ठ संख्या : 18
आकार : 26 x 20 स०म० लिखित : 20 x 13 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की प्रथम रचना । काली स्याही में लिखी गई है । रचना जिल्द में है पर खुल गई है, प्रति पृष्ठ सोलह पंक्तियां हैं और पृष्ठ के चारों ओर काली स्याही से हाशिया खींचा है ।
विशेष विवरण : इस रचना में प्रथम सभी मंत्रों की रचना है तत्पश्चात् नृसिंह कवच फिर अंतत देव एवं भैरव संवाद में उलूक कल्प पर विचार किया गया है । मंत्रों को संतरी स्याही से उभारा गया है।
आरम्भ : उों श्री गणेशाये नमः उँ दास थाय द्महे सीता वलू भाय धीमही तन्नोराम प्रचोदयात् उँ दासर्थाय अंगुष्टाभ्यानम विद्महेत र्जनीभ्यां नमः ।
अन्त : इति श्री उलूक कल्पं समाप्तं संपूर्ण श्रुभम् । संवत् विक्रमादिन्य १८६० चैत्रप्र २१ मुनु ने लीखीनसानी पाउ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 45 (ख)
शीर्षक : कोकसार
पृष्ठ संख्या : 29
आकार : 28 X 20 स०म० लिखित : 20 X 13 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की दूसरी रचना । काली स्याही का प्रयोग किया गया है । प्रति पृष्ठ 16 पंक्तियाँ हैं।
विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति में चार प्रकार के पुरुषों एवं चार प्रकार (पद्मिनी, चित्रणी, शंखिनी, हस्तिनी) की नारियों का वर्णन कर उनके अंगों की चर्चा भी की गई है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों श्री गुरु चरण कमलेम्यो नमः अथ कोकसार लिष्यते ।। अडिल छन्द ।। जो तपसी तपकर हितो चाहे सिद्धकों जे छत्री सिर छत्रति चाहे रिद्धकों मूल हि परची वनी जुलाहा कान सुव काल कर्म को भेदन जाने देव मुने १ ....
अन्त : जहां जानहुं कछु षंडित मोहिदोष जिनि देहु परम ग्यानी के गुण पंडित ६८ इति श्री — चि — सै — ता — ते — ग — त — अ ग — समाप्तम् शुभम् भवतु.।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 45 (ग)
शीर्षक : वैताल पंचीसी
पृष्ठ संख्या : 29 – 30
आकार : 28 X 20 स०म० लिखित : 20 X 13 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : वैताल पंचीसी नामक इस रचना में राजा विक्रम सभा में वैताल के विषय में सुनाते हैं ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अथ वैताल पचीसी लिष्यते । दोहा. श्री गणपति गजपति नमो पुनि श्री कृस्म त्रिपुरार ....
अन्त : हा हा किये छूटें नहीं छल वल किए अनेक. शव कहियो ....

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 45 (घ)
शीर्षक : श्री वैद्यक प्रकरण
रचनाकाल : १८८६
पृष्ठ संख्या : 48
आकार : 28 X 20 स०म० लिखित : 20 X 13 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में पहले कई रोगों के उपचार बताएं हैं और फिर कई तंत्र–मंत्र बताएं हैं। पोथी में लगभग 54 मंत्र बताएं गये हैं । पोथी के अंत में अष्ट धातु सोधन का विधान भी लगभग नौ पंक्तियों में दिया गया है ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। अथ वैद्यक लिष्यते ।। अथ ज्वरोष्टचार लक्षणा गिलोई. मोथा. धमासा. सोंफ ....
अन्त : इति श्री वैद्यक प्रकरण तंत्र मंत्र सार पुस्तकम् संपूर्णम् शुभम भवतु ।। ८।। संवत् १८८६ कर्कअर्क गतेमासे भुक्त दिनानि २६ से ५३ भृगु वासरे ७ तिथौ शुक्लपक्षे स्वाती नक्षत्रे शुभ योग पोथी लिषी गुरसहाईं चित्तै हरेदी पोथी सोमुने लिषी ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 45 (ङ)
शीर्षक : सामुद्रक पुरुष स्री लक्षणम्
पृष्ठ संख्या : 8
आकार : 28 X 20 स०म० लिखित : 20 X 13 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में सामुद्रक शास्त्र के अनुसार पुरुष एवं स्त्रियों के लक्षण बताएं गये हैं ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाये नमः ।। अथ समुद्री लक्षण पुरुष स्त्री के लिक्षते ।। सामुद्रकम्प्रवक्ष्यामि लक्षण पुरुष स्त्रियों पूर्वमांपुः परीक्षा चपश्चा लक्षण मेवच 'हींना नरायेवै लक्षणैः किं प्रयोजज।
अन्त : इति श्री सामुद्रक पुरुष स्त्री लक्षणम् समाप्नम् संपूर्णम् शुभम सं ६८ सिंहें अर्कगत भुक्त २५ गुरुवार ।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 45 (च)
शीर्षक : श्री डक भडुली
लेखक : सोभाराम
रचनाकाल : संवत् १८६६
पृष्ठ संख्या : 41
आकार : 26 x 20 स०म० लिखित : 20 x 13 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की अन्तिम रचना । काली एवं लाल स्याही से लिखी गई है ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना श्री डक भडुली में प्रथमतः डक भडुली पुराण फिर साठ संवत, नवग्रह मंत्र, फारसी जोतिस गुरु, अंग विद्या आदि के लक्षण एवं उनके फलों पर विचार किया गया है । कृति के अंत के पश्चात् काली एवं लाल स्याही से कुछ आकृतियां व मंत्र लिखे गये हैं ।
आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अथ जोतस भडुली लिष्यते. में तुक्त आगम सभ कहों गुहनक्षत्र चरित्र.
अन्त : इति श्री डक भडुली विर्चितायां सेठ संवत्सरी समाफल संपूर्ण. सं १८६६ रुाठ प्र. ११ गुरुवारे तिथो १ सोभाराम लिखतम् ।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 46 संग्रह (क)
शीर्षक : राग
लेखकृ : तुलसीदास
पृष्ठ संख्या : 8
आकार : 16 x 14 स०म० लिखित : 11 x 11 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की प्रथम रचना । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग । पृष्ठ चार से दोनों तरफ लेखक ने काली स्याही से फूल बनाएं हैं । प्रति पृष्ठ 12 पंक्तियां हैं । रचना के पहले पृष्ठ पर कोई वैद्यक नुस्खा लिखा गया है ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में विभिन्न रागों में तुलसीदास ने राम स्तुति की है ।
आरम्भ : राग परभाती ।। हरिमुष देष हो वसुदेव ।। कोट भानसनूप सुंदर को अनजानै भेव ।। टेक।।
अन्त : वचन परस्पर कहत कि रातन विकुल गात जल नैन वहेरी ।। तुलसी प्रभुहि विलोकत इकटक लोचन जनु विनु पलक लहेरी ।। २।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 46 (ख)
लेखक : अनेकार्थ भाषा
रचनाकाल : नंद
पृष्ठ संख्या : 33 – 46
आकार : 16 x 14 स०म० लिखित : 11 x 11 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में नंद कवि ने लगभग 146 शब्दों की अनेकार्थी व्याख्या दोहों के रूप में की है।
आरम्भ : अथ नंद कृत अनेकार्थ भाषां लिख्यते ।। प्रभू जोत मय जगत मय कारन करन अभेव।।
अन्त : इति श्री अनेकार्थ नंद कृत संपूर्णम् ।। शुभमस्तु ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 46 (ग)
शीर्षक : नाममाला
लेखक : नंद
पृष्ठ संख्या : 32
आकार : 16 x 14 स०म० लिखित : 11 x 11 स०म०
सामान्य विवरण : संग्रह की तीसरी रचना । काली एवं लाल स्याही से पृष्ठ के ऊपर नीचे फूल पत्ती वाला वार्डर बनाया गया है ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में नंद कवि ने ईश्वर के 322 नामों का वर्णन एवं स्तुति की है ।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। अथ नंद कृत नाममाला लिख्यते ।। दोहरा ।।
जुगनवती यह जु नाम की दाँम ।।

		जो नरकरिहै कंठ यह ह्वै है छवि क्रो धाम ।। ३२२
अन्त	:	मातश्रक इति श्री नाममाला संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MSG – 46 (घ)
शीर्षक	:	स्नेह लीला
लेखक	:	स्वामी मोहनदास
स्थान	:	मुजफ्फर नगर
पृष्ठ संख्या	:	47 – 57
आकार	:	16 X 14 स०म० लिखित : 11 X 11 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में कृष्ण उद्धव को गोपियों के पास संदेश देने के लिए मथुरा से ब्रज भेजते हैं।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। अथ स्नेहं लीला लिख्यते ।। एक समै ब्रजवास की सुरति करी हरिराय।। निज जन अपनो जानि कै ऊधो लिया बुलाय ।। १।।
अन्त	:	इति श्री स्नेह लीला श्रीस्वामी मोहनदास कृत संपूर्ण ।। शुभमस्त ।। मांगल्यं ददातु ।। कृस्म जी सहाय ।। लिखते मिश्र अनूपराय ।। मुजफरनगर मध्ये ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MSG – 46 (ङ)
शीर्षक	:	विहनु ह्रदय स्तोत्र
रचनाकाल	:	संवत् १८३४
पृष्ठ संख्या	:	58 – 61
आकार	:	16 X 14 स०म० लिखित : 11 X 11 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् । पृष्ठ के दोनों ओर फूलदार हाशिया है ।
विशेष विवरण	:	विष्णु स्तुति हेतु स्तोत्र रचना की गई है ।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। उों नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय नमः ।। नारायणं नमस्तुत्यं नरं चैव नरोत्तमं ।।
अन्त	:	ईति विस्न ह्रदय अतोत्र समप्रतं ।। स्नभंमस्तु लीषत गोड ।। शुभमसु ।। विस्नु ह्रदय लीषत जोत गराय् वासि वुडाण ।। विस्रभक्राला लाआणीसीव पठनार्थ संवत् १८३४ वर्ष भाद्रपद सुदी ५ सनीश्चर वार ।। श्री श्री श्री

हस्तलिखित क्रमांकः		MSG – 46 (च)
शीर्षक	:	चंद्रमा अर्घ मंत्र
लेखक	:	तुलसीदास
पृष्ठ संख्या	:	61 – 64
आकार	:	16 X 14 स०म० लिखित : 11 X 11 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	चन्द्रमा की स्तुति हेतु विभिन्न रागों में मंत्र रचना की है ।
आरम्भ	:	उों चन्द्रमा अर्घ मंत्र ।। सोमाय देव देवाय द्विज राजाय शालिने ।। रोहिणी सहितायेति ग्रहणांर्घ नमोस्क्तते ।।
अन्त	:	तुलसी हिये की जानतोरो है पिनाकतान वासकी धुनिया मानो वालक तन ककी ।। १।। शुभमस्तु ।। श्री सीताराम जी सदा सहाय ।। श्री ।।

हस्तलिखित क्रमांकः		MSG – 46 (छ)
शीर्षक	:	सूर्य महातम पुराण ।।
पृष्ठ संख्या	:	65 – 77
आकार	:	16 X 14 स०म० लिखित : 11 X 11 स०म०
सामान्य विवरण	:	पूर्ववत् । रचना का पहला पृष्ठ खंडित है ।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में सूर्य देवता का महात्म्य वर्णित किया गया है ।
आरम्भ	:	उँ स्वस्त श्री गणेशाय न्मः ।। श्री पोथी सूर्य महात्म पुराण ।। श्री सूर्ज मै समरु तोही।। सूमत ज्ञान कघदे मोहि ।।

अन्त : ईति श्री पोथि सूर्य पुरान समाप्तं ।। चारो दीस महादेव भाघा कर्ते संपुर्ण ।। जो देषा सो लीषा ।। श्र ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 46 (ज)
शीर्षक : श्री विष्मोर्नाम सहस्र स्तोत्रं
लेखक : अनूप राय
रचनाकाल : संवत् १८३४
स्थान : मुजफर नगर
पृष्ठ संख्या : 78 – 92
आकार : 16 X 14 स०म० लिखित : 11 X 11 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् – रचना के पृष्ठों पर ऊपर नीचे फूलदार हाशिया बनाया हुआ है ।
विशेष विवरण : इसमें लेखक अनूपराय ने अणीसिंह के पढ़ने हेतु महाभारत के शांतिपर्व के अंतर्गत उत्तम अनुशासन हेतु दानधर्म की व्याख्या की है ।
<u>नोट –</u> रचना में नः 81 से लेकर 88 तक के पृष्ठ 96 पृष्ठ के पश्चात् जोड़े गये हैं ।
आरम्भ : जों नमो भगवते वासुदेवाय ।। जों यस्य स्मरण मात्रेण जन्म संसार वंधनात् ।। विमुच्यते नमस्तस्मै विध्मवे प्रभ विहमवे ।। १।।
अन्त : इति श्री महाभारते शतसाहस्प्रां संहितायां .... संवत् १८३४ वर्षे कार्तिक श्रुक्ला द्वितिया रविवासरे संपूर्णम् ।। लिखतं मिश्र अनूपराय मुजफर नगर मध्ये ।। लिषापिंत अणी सिंह आत्म पठनार्थे ।। शुभंभूयात् श्री श्री श्री

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 46 (झ)
शीर्षक : श्री गनेस जी की कथा
लेखक : श्री लीलकंठ वीराभांन
रचनाकाल : संवत् १८३४
पृष्ठ संख्या : 93 – 116
आकार : 16 X 14 स०म० लिखित : 11 X 11 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत कृति में गणेश जी की कथा का वर्णन है और अंत में इससे सम्बन्धी एक मंत्र भी है।
आरम्भ : श्री गणेशय नम ।। ये कर दन गज वदन पग वंदौ क्र जोरी ।। करो क्रपा सीव नंदन वढै वुधी जो मोरी ।।
अन्त : येती श्री गनेस जी की कथा संपुरन सुभ ।। जो देषा सो लीष मम दोष न दर्अते ।। श्री लीलकंठ वीराभांन लीषते । मीती अगहन सुदी १५ संवत् १८३४ ।। श्री गणशाये नमः

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 46 (ञ)
शीर्षक : गणेश पंचरत्न, सप्त श्लोकी शीत
लेखक : सप्तश्लोकी भागवत, चतुरश्लोकी भारथ
पृष्ठ संख्या : 117 – 120
आकार : 16 X 14 स०म० लिखित : 11 X 11 स०म०
सामान्य विवरण : पूर्ववत् ।
विशेष विवरण : प्रस्तुत में गणेश पंचरत्न, सप्त श्लोकी गीता, सप्तश्लोकी भागवत तथा चतुष्श्लोकी भारथ सम्बन्धी पद हैं ।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। उँ गणानात्वा गणपति हवाम हेः ।। प्रियाण त्वाप्रियः पतिहवामहेः।।
अन्त : माभारत सावित्री प्रातरू थापय पठेत ।। सभारत फलों प्राप्य परंब्रह्माधिगछति ।। ५।। इति चतुरश्लोकी भारथ संपूर्णम् ।। श्रुभ ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 46 (ट)
शीर्षक : किष्किंधा कांड
पृष्ठ संख्या : 120 – 142
आकार : 16 X 14 स०म० लिखित : 11 X 11 स०म०

सामान्य विवरण : पूर्ववत् । रचना के दोनों ओर फूलदार हाशिया बनाया गया है ।
विशेष विवरण : राम बनवास के अंतर्गत सुग्रीव मिलन एवं बालि वध तथा किष्किंधा कांड का महत्व वर्णित है।
<u>नोट –</u> रचना के अंत में दवाइयों के नुस्खे दिए गए हैं ।
आरम्भ : भक्ति जन्म महिषानि ज्ञानषानि अघ हानिकर ।। जहवस शंभुवानि सो कासी से वैक सन ।। ते हिन भज सिमति मंद को कृपाल शंकर सरस ।। १ ।। चौपई ।।
अन्त : इति श्री भाषा रामायन तुलसीदास कृत चतुर्थ सोपान किष्किंधा कांड समाप्तम् श्रुभमस्क्त।। श्री राम जी सदा सहाय ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 81
शीर्षक : ग्रह कुंडली
लेखक : घनस्याम
रचनाकाल : संवत् १८६८
पृष्ठ संख्या : 15
आकार : 25 X 17 स०म० लिखित : 23 X 15 स०म०
सामान्य विवरण : सोलह पृष्ठों की यह कृति काली एवं लाल स्याही से लिखी गई है । प्रति पृष्ठ 21 पंक्तियाँ तथा लग्न नक्षत्र बनाये गये हैं ।
विशेष विवरण : भवानी दास के पुत्र घनस्याम द्वारा यह कृति ग्रह कुंडली के रूप में लिखी गई है । इसमें अकबर के समय से लेकर विक्रमादित्य के समय तक के ग्रह फलादेश का वर्णन है ।
आरम्भ : श्री गणेशाय नमः अच्युतव्यक्त रूपर्य निगुणात्मनेः समस्त जगदा सदा वृरेनणेमूर्तिय नमः।। अस्व पति गज पति निरपति चवर छत्र सिंहासन मुद्राधिपति प्रतान्पोदये जोति ....
अन्त : मैत्री फले अग्नि चीराकुला प्रथ्वी महाव्याधि प्रपिडिताः प्रति रोग भये घोरं यत्र मंत्री सनिच्चर ।। ४।। श्री ।। श्री ।।

हस्तलिखित क्रमांकः MSG – 82
शीर्षक : श्री मार्कण्डेय पुराण
पृष्ठ संख्या : 14 – 47
आकार : 22 X 10 स०म० लिखित : 15.5 X 6 स०म०
सामान्य विवरण : खंडित कृति । बिना जिल्द के । पृष्ठ 14 से पहले के 13 पृष्ठ साथ नहीं हैं और पृष्ठ 47 के बाद भी कृति चलती है । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग । प्रति पृष्ठ आठ पंक्तियाँ।
विशेष विवरण : श्री मार्कण्डेय पुराण के द्वितीय से लेकर अष्टम अध्याय तक की कथा मिलती है ।
आरम्भ : यदभूद्धांभव तेज स्तेना जायत तन्मुखं ।। यामोनचा भवत्के शावाह वो विहमु तेजसः ।। २३।।
अन्त : आधूर्णितो वावातेन स्थितः पोते महार्णवे ।। २६ पतत्सु चा शास्त्रे षु संग्रामे भृशदारुणे।। सर्वे ....